फ़क़ीहे इस्लाम जनशीने हुज़ूर मुफ़्ति-ए-आज़म हिन्द,
ताजुश्शरीयअ हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह
मुफ़्ति मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी अज़हरी
से मुख़्तलिफ़ मवाक़े पर जो करामतें ज़ाहिर हुईं उनकी चन्द झलकियाँ

करामाते ताजुश्शरीअ्ह



तसनीफ़
डाक्टर मौलाना मोहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

प्रकाशक
इस्लामिक रिसर्च सेंटर
58, कसग्रान, सौदाग्रान, बरैली शरीफ़, (यू०पी०)



किताब को पढ़ने से पहले
इस किताब को स्कैन करने वाले
और इस काम मे हिस्सा लेने वालो के हक़ में

दुआ फरमाएं

अल्लाह अज़्ज़वजल हमारे तमाम
सगीरा व क़बीरा गुनाहों को मुआफ़ फ़रमाये
और ईमान पर इस्तेक़ामत अता फ़रमाये!

आमीन

PDF BY :
SAIYED MUHAMMAD HASAN QUADRI
+91-9465825634

मुफ़्ती–ए–आज़म का ज़र्रा क्या बना अख़्तर रज़ा
महफ़िले अंजुम में अख़्तर दूसरा मिलता नहीं

करामाते ताजुश्शरीआ

नबीरए आला हज़रत जानशीने मुफ़्तिए आज़म ताजुश्शरीआ अल्लामा मुफ़्ती अल हाज अश्शाह हाफ़िज़ व क़ारी **मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ा क़ादरी अज़हरी** दामत बरकातुहुमुल आलिया के कश्फ़ व करामात का मजमा

लेखक
डॉक्टर मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

नाशिर
इस्लामिक रिसर्च सेन्टर
58–कसगरान,सौदागरान बरेली शरीफ़

नाम किताब : करामात–ए– ताजुश्शरीआ

मुसन्निफ़ : डाक्टर मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी

तर्जमा व कम्पोज़िंग : मौलाना मुहम्मद शफ़ीक़ुल हक़ रज़वी

मुबाइल न.09997662550

तस्हीह : मुहम्मद मुशाहिद रफ़अत बरेलवी

इशाअत अव्वल : दिसम्बर 2015 / 1437

इशाअते सानी : अप्रेल 2016 / 1437

बएहतेमाम :

सफ़हात : 160

मिलने का पता :

इस्लामिक रिसर्च सेन्टर

58–कसगरान,सौदागरान, बरेली शरीफ़ यूपी

E-mail:mrazvi.razvi@gmail.com

www alahazratbooks.com

Mob:08533059674, ;09873877274

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर्फ़े आग़ाज़

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ात सतूदा सिफ़ात से जिस को निस्बत का शर्फ हासिल हो जाये वह खुदा का मक़बूल व महबूब बन्दा हो जाया करता है। खुलफ़ा–ए–राशिदीन, अस्हाब–ए–रसूल और अहले बैत–ए–अतहार माहताबे नबुव्वत व रिसालत के फैले हुये मुख़्तलिफ़ माह व अंजुम हैं। इसी तरह उन मुक़द्दस व मुतबर्रक हस्तियों से जिन का राबता मरबूत हो गया,वह भी पाक व मक़बूल हो गये। इस रूहानियत की दुनिया में कोई अब्दाल के मर्तबाए आला से मुशर्रफ़ हुआ तो कोई मनसब ग़ौसिया जलीला पर फ़ाइज हुआ,इन अहलुल्लाह की शाने अरफ़अ़ देखिये कि चोर बन कर आया, कुतुब बन कर वापस गया। जिन असहाबे उम्मत ने उन अस्लाफ़ व अख़लाफ़ की गुलामी से फ़ैज़ हासिल किया, वह वलीए कामिल, साहिबे कश्फ़ो व करामत बुज़ुर्ग और आरिफ़ बिल्लाह वन गये।

निज़ामे कुदरत के तेहत यह बात ज़ाहिर व बाहिर है कि खुदा का वली वक़्त का बादशाह और मुतसर्रिफ़ हाकिमे वक़्त होता है,जिस की ज़ाहिरी कैफ़ियत यह होती है कि हाथ बज़ाहिर तंग और ख़ाली नज़र आता है। मगर बेशुमार नेअ़मते खुदावन्दी से पुर होता है। जिस्म नहीफ़ व नातवाँ लगता है मगर उस से मशहूर ज़माना पहलवान और बुलन्द व बाला पहाड़ लर्ज़ा बर अन्दाम नज़र आते हैं। यह दरवेशाना ज़िन्दगी बसर करने वाले खुद चटाई पर फरोकश होते हैं,मगर दुनियवी तख़्त व ताज के

बादशाह और वज़राए आज़म उन के क़दमों पर सरनिगूँ करते हैं। उन की अंगुश्त मुबारक के हलके से इशारे पर फ़र्शे ज़मीन पर चर्ख़ कुहन साल आफ़ताब व माहताब दरख़्शिन्दा सितारे की तरह रक़्स करते नज़र आते हैं। उन की निगाहें अगर एक तरफ़ ज़मीन के आख़िरी हिस्से तहतुस्सरा की गहराइयों तक पहुँचती हैं,तो दूसरी तरफ़ अर्शे बरीं की बेपनाह वुस्अतों को छूती नज़र आती हैं। इन औलियाए किराम के मुबारक लबों पर कुदरते ख़ुदावन्दी का कलाम होता है। इन महबूबाने बारगाहे इलाही की कुव्वते समअ व बसर के लिए मशरिक व मग़रिब और शुमाल व जुनूब के तमाम हिजाबात,मसाफ़ात की दूरी,मख़लूके ख़ुदा की बेशुमार आबादी,हैवानात व नबातात और जंगलात के तनावर दरख़्त मानेअ़ नहीं होते हैं। और मुक़र्रिबाने बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त के कुदूम हुक्मे इलाही के पाबन्द हुआ करते हैं,हर हर क़दम हर लमहा हर लहज़ा मरज़ीए इलाही व मनशाये ख़ुदावन्दी के ताबेअ़ होते हैं। उन का क़ल्ब व सीना उ़लूमे इलाही का ख़ज़ाना होता है,जो दिलों के हालात व ख़तरात पर क़ाबू रखते हैं,मख़लूक़ात के अ़ज़्म व इरादों को ख़ूब पहचान लेते हैं।

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उन ही ख़ासाने ख़ुदा व मक़बूलाने बारगाह की तरह मेरे पीर व मुरशिद रहबरे शरीअ़त व तरीक़त आ़रिफ़ बिल्लाह जानशनीए हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हज़रते ताजुश्शरीआ़ अ़ल्लामा मुफ़्ती हाफ़िज़ क़ारी अलहाज मुहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी दामतबरकातुहुमुलआ़लिया को मुन्तख़ाब फ़रमाया,और उन्हे अपना महबूब व मक़बूल बन्दा बनाया और यह सब सदक़ा व तुफ़ैल है हुज़ूर नबी करीम अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

वसल्लम का.जिन की निगाह लुत्फ़ व ऐनायत और फ़ज़ल व करम ने मुरशिदे गिरामी के अन्वार व तजल्लियात को आलमे इस्लाम के चप्पे चप्पे और गोशे गोशे में रौशन व मुनव्वर कर रखा है। अल्लाह तआला ने हज़रत ताजुश्शरीआ को अपने घर बातुल्लाह(मक्का मुअज़्ज़मा) में बुलाया.नमाज़े पढ़ने की सआदत बख़्शी.गुस्ल काबा में शिरकत और अंबियाए किराम व रसूलाने ऐज़ाम के तबर्रुकात की ज़ियारत से मुशर्रफ़ कराया।

وتعزوا من تشاء و تذلوا من تشاء بیدك الخیر و ھو علی کل شئی قدیر۔

हज़रत मुरशिदे गिरामी से तिशनिगाने रूहानियत सैराब होते हैं। इक्तिसाबे फ़ैज़ हासिल करने वालों का हुजूम होता है। ग़र्ज़ यह कि मुर्शिदे गिरामी हज़रत ताजुश्शरीआ के आस्ताना–ए–करम से दोनों जहान के ख़ज़ाने मिल सकते हैं।

ख़ासाने ख़ुदा,ख़ुदा न बाशद
लेकिन अज़ ख़ुदा जुदा न बाशद

सगे दर आस्तानाए आलिया रज़विया
अहक़र **मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी** ग़ुफ़िरा लहु
22 नवम्बर 2015 ई 1437 हिजरी
सरपरस्तः मदरसा ग़ौसिया रज़ाउलउलूम मौज़ा शैदापुर
पोस्ट कैसरगंज, ज़िला बहराइच शरीफ़
क़ौमी जनरल सिक्रेट्रीःआल इन्डिया जमाअते रज़ाए मुस्तफ़ा, बरेली शरीफ़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तक़दीम

अज़:मुहक़्क़िके अस्र हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती सय्यद शाहिद अ़ली रज़वी मुहद्दिस रामपुरी।

हज़रत ताजुश्शरीआ़ की ज़ात अ़तिया ख़ुदावन्दी ऐसी मीनारा नूर हस्तियाँ अल्लाह तआ़ला के करम का मज़हर होती हैं।

फ़क़ीहे इस्लाम हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद इस्माईल रज़ा ख़ाँ मारूफ़ बिही ताजुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ नसबन बड़हेच पठान,मसलकन सुन्नी हनफ़ी, मशरबन क़ादरी बरकाती,मौलदन व मसकनन बरेलवी, तालीमन मनज़री,और तकमीलन अज़हरी हैं।

चौदहवी सदी हिजरी के निस्फ़े आख़िर, बीसवीं सदी ईसवी के निस्फ़े अव्वल में ग़ैर मुन्क़सिम हिन्दुस्तान और रूहेलखण्ड के मरकज़े इल्म व इरफ़ान,मख़ज़ने फ़ैज़ व बरकत,ममबए जूद व सख़ा,मअ़दने नूर व निकहत बरेली शरीफ़ में आ़लमे अरवाह से आ़लम अजसाम में जलवा गर हुये। आप के वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आ़ज़म अ़ल्लामा मुहम्दद इब्राहीम रज़ा ख़ाँ क़ादरी (मुतवफ़्फ़ी 1385 हिजरी 1965 ई) जद्दे अमजद हुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती मुहम्मद हामिद रज़ा ख़ाँ क़ादरी (मुतवफ़्फ़ी 1362 हिजरी 1943 ई) नाना जान मुफ़्ती–ए–आज़म अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ क़ादरी (मुतवफ़्फ़ी 1402 हिजरी 1981ई) और परदादा कुतुब इरशाद आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी फ़ाज़िले बरेलवी (मुतवफ़्फ़ी 1340 हिजरी 1921 ई) अपने अहद के मुमताज़ उ़लमा व फ़ुक़हा रासेख़ीन फ़िलइल्म और मरजअ सूफ़ीयाए

कामीलीन में शुमार किये जाते है।

आप की विलादत के वक़्त जद्दे आला इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी फ़ाज़िले बरेलवी और जद्दे अमजद हज़रत हुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती मुहम्मद हामिद रज़ा क़ादरी विसाल फ़रमा चुके थे। वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म अल्लामा इब्राहीम रज़ा ख़ाँ क़ादरी की उमर का 36 वाँ साल था जिन की''दर्स व तदरीस''का चढ़ता सूरज पूरे शबाब पर था। दूर,दूर से तिशनिगाने इल्म व फ़ज़्ल परवाना वार हाज़िर हो कर" दर्से मुफ़स्सिरे आज़म" में शरीक हो रहे थे। नाना जान हज़रत मुफ़्तीए आज़म अल्लामा मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ क़ादरी जो अपने वक़्त के फ़र्दे फ़रीद,उलूमे नक़लिया के ताजदार, उलूमे अक़लिया के ग़व्वास मैदाने फ़क़ाहत के शहसवार और मैदाने सियासत के अलमबरदार थे। अरब व अजम में उन की धूम थी,सारे जहान में उन का चर्चा था, इल्म व इरफ़ान के बहर नापैदा किनार थे,जिन की न जाने कितनी मौजें थीं,वह एक कार ख़ाना थे,जहाँ पुरज़े नहीं ढलते थे,शख़्सियत साज़ी होती थी। उस रौशन और शख़्सियत साज़ माहौल में हज़रत ताजुश्शरीआ का अहद तिफ़ली शुरू हुआ। हज़रत ताजुश्शरीआ को पीरे मजाज़ सैय्यदुल उलमा हज़रत अल्लमा सय्यद शाह आले मुस्तफ़ा क़ादरी बरकाती मारहरवी व ज़ुबदतुस्सादात अहसनुलउलमा हज़रत अल्लामा सय्यद हैदर हसन क़ादरी बरकाती नूरी मारहरवी(मुतवफ़्फ़ी सन 1995 ई) और बुरहाने मिल्लत हज़रत मुफ़्ती बुरहानुल हक़ जबलपुरी का ईक़ान और नामवर नाना जान हज़रत मुफ़्ती आज़म का शोहरए आफ़ाक़ ईमान मयस्सर आया। होश की आँखें खुलीं तो हर तरफ़ क़ुरआन व सुन्नत की हुक्मरानी नज़र आई,फ़िक़्हे हनफ़ी का सिक्का बजते

देखा,दीन मतीन और अ़ज़मते रसूल की हिमायत अल्लाह और उस के रसूल के दुशमनों की अ़दावत में अपने नाना जान और वालिद–ए–माजिद को यकताए रोज़गार पाया।

हज़रत ताजुश्शरीअ़ा मदज़िल्लाहु ने अपने वालिदैन करीमैन, जामिअ़ा रज़विया''मन्ज़रे इस्लाम''और ''जामिअ़तुलअज़हर''क़ाहिरा(मिस्र)में मुख़्तलिफ़ असातिज़ा किराम से तालीम व तरबियत पाई और सनद व दस्तार से सरफ़राज़ हुये। आप 1963 ई में जामेअ़ अज़हर मिस्र तशरीफ़ ले गये,वहाँ आप ने शोअ़बा''कुल्लिया उस़ूलुददीन'' में दाख़िला लिया और माहिर असातिज़ा किराम से फन्ने तफ़सीर व हदीस में तालीम व तरबियत पाई। जामेअ़ अज़हर मिस्र के''शोअ़बाए कुल्लिया उस़ूलुद्दीन ''का सालाना इम्तिहान अगर्चे तहरीरी होता था मगर मालूमात आ़म्मा(जनरल नालेज)का इम्तिहान तक़रीरी होता था। चुनांचि जामिअ़ा के सालाना इम्तिहान के मौक़े पर जब जानशीने मुफ़्तीए आ़ज़म मौलाना मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ बरेलवी का इम्तिहान हुआ तो मुम्तहिन ने आप की जमाअ़त क़े त़लबा से इल्मे कलाम के चन्द सवालात किए,पूरी जमाअ़त में से कोई एक भी त़ालिबे इल्म मुम्तहिन के सवालात के स़हीह जवाबात न दे सका। मुम्तहिन ने रूये सुख़्न आप की त़रफ़ करते हुये सवालात को दुहराया, जानशीने मुफ़्तीए आ़ज़म ने उन सवालात का ऐसा शाफ़ी व काफ़ी जवाब दिया कि मुम्तहिन तअ़ज्जुब की निगाह से देखते हुये कहने लगे कि :

आप तो हदीस व उस़ूले हदीस पढ़ते हैं। इल्मे कलाम में कैसे जवाब दे दिया, आप ने इल्मे कलाम कहाँ पढ़ा ?

आप ने जवाब में फ़रमाया कि :

"मैं ने दारूल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ में चन्द इब्तेदाई किताबें इल्मे कलाम की पढ़ी थीं और मुझे मुताला का बहुत शौक़ था जिस की वजह से मैंने आप के सवालात के जवाब दे दिए। अगर इस से भी मुश्किल सवाल होता तो भी मैं सही जवाब देता।"

आप के जवाब से मसरूर हो कर मुम्तहिन जामिआ़ ने आप को जमाअ़त में पहला मक़ाम और पहली पोज़ीशन दी। आप ने 1964 ई में जामिआ़ अज़हर को टॉप किया। उस वक़्त ममलुकते जमहूरिया मिस्र के सदर जमाल अ़ब्दुन्नासिर के हाथों अवॉर्ड अ़ता किया गया। इस इम्तिहान में नुमाया कामयाबी पर एडीटर माहनामा आ़ला हज़रत ने"कवाइफ़े आस्ताना रज़विया"के उ़नवान से रिपोर्ट शाय की।

"नबीरए आ़ला हज़रत व हुज्जतुल इस्लाम अ़लैहिर्रहमा और हज़रत मुफ़स्सिरे आज़म के फ़रज़न्दे दिल बन्द मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब ने अ़रबी में बी.ए.की सनदे फ़रागत निहायत नुमाया और मुमताज़ हैसियत से हासिल की। मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब न सिर्फ़ जामिआ़ अज़हर में बल्कि पूरे मिस्र में अव्वल नम्बरों से पास हुये। मौला तआ़ला उन को इस से ज़्यादा बेश काम्याबी अ़ता फ़रमाये और उन्हें ख़िदमात का अहल बनाये, वह सही मअ़ना में आ़ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत के जानशीन कहे जायें"اللّٰھم زد فزد"

(माहनामा आ़ला हज़रत जमादिलउला 1385 हिजरी /सितम्बर 1965 ई.)

तीन साल बाद यानी 17 नवम्बर 1966 ई/1386 हिजरी को बरेली शरीफ़ वापसी हुई। बरेली शरीफ़ में हज़रत मुफ़्तीए आज़म की सर परस्ती में तारीख़ी इस्तिक़बाल हुआ। वापसी के बाद 1967 ई में अपने मादर इल्मी जामिआ़ रज़विया"मन्ज़रे इस्लाम"में दर्स व तदरीस

का सिलसिला शुरू फ़रमाया। ऐसा महसूस होता है कि आज दर्स व तदरीस का तअ़ल्लुक़ उन के जिस्म से नहीं बल्कि उन की रूह से जुड़ा हुआ है। दर्स व तदरीस उन की रूहानी ग़िज़ा है। ग्यारह साल बाद आप के बरादरे अकबर रैहान मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा ख़ाँ क़ादरी ने''मन्ज़रे इस्लाम''का स़दर मुदर्रिस व शैख़ुलहदीस बना दिया। आप ने इस अ़ज़ीम मनस़ब की ज़िम्मेदारियों को बहुस्न व ख़ूबी निभाते हुये तालीमी व तन्ज़ीमी ऐअ़्तेबार से जामिआ़ रज़विया''मन्ज़रे इस्लाम'' की शोहरत व मक़बूलियत में चार चाँद लगा दिए। मस़ारूफ़ियतों का दाइरा रोज़ बरोज़ बढ़ता गया तो बाज़ाब्त़ा दर्स व तदरीस का मशग़ला मुस्तक़िल जारी रखना मुम्किन नहीं रह सका, तब आप ने अपने दौलत ख़ाना''बैतुर्रज़ा''में मख़सूस़ औक़ात में दर्स व तदरीस की महफ़िल सजाई। यहाँ दर्स व तदरीस का फ़ैज़ ऐसा जारी हुआ कि उस हलक़ाए दर्स में शर्फ़े तिलमिज़ पाने के लिए तीन तीन जामिआ़त''मन्ज़रे इस्लाम''''मज़हरे इस्लाम'' और'' जामिआ़ नूरिया'' के त़लबा की बड़ी तादाद जमा हो गई। इफ़्तिताह बुख़ारी शरीफ़ व ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ तदरीस व तफ़हीम की आ़ला मन्ज़िल है। आप ने यह काम भी बहुत अहसन त़रीक़ा पर अन्जाम दिया। इफ़्तिताह व इख़्तिताम बुख़ारी का सिलसिला अहले सुन्नत के बड़े बड़े मदारिस व जामिआ़त में शुरू हुआ तो वसीअ़तर होता गया। दर्से बुख़ारी व दर्से तदरीस के वक़्त ऐसा लगता है कि इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम की महफ़िलों को उन के जानशीन की हैसियत से संवार रहे हैं। अपने जद्दे आ़ला आ़ला हज़रत, जद्दे अमजद हुज्जतुल इस्लाम, नाना जान मुफ्तीए आ़ज़म,वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आ़ज़म और अपने असातिज़ा में हज़रत

बहरूल उलूम मुफ़्ती सय्यद अफ़ज़ल हुसैन रज़वी की तालीमी व तदरीसी यादों को ताज़ा कर रहे हैं।

हज़रत ताजुश्शरीआ अस्रें हाज़िर के उन बर गुज़ीदा उलमाए दीन, मुफ़स्सिरीन व मुहद्दिसीन,फ़ुक़हा व मुतकल्लिमीन और मुफ़्तियाने शरअ़ मतीन में मुमताज़ हैसियत के हामिल हैं जिन के वजूदे मसऊद से बे शुमार मख़लूक़े ख़ुदा को हक़ शनासी और सदाक़त शआ़री की दौलते गिराँ नुमाया नसीब हुई,ज़ाती सीरत व किरदार में सफ़ा आफ़ताब की तरह दरख़्शाँ,मुआ़शिरत व समाजी फ़लाह व बहबूद के लिए हमा वक़्त मुज़तरब व कोशाँ। ऐसे बुज़ुर्ग व बरगुज़ीदा इस वक़्त बहर पहलू ज़वाल पज़ीर मुआ़शिरे में नापैद होते जा रहे हैं,वक़्ती मसलिहत,ज़ाती मफ़ाहिमत और दुनियावी मन्फ़अ़त ने दौरे जदीद को बहुत तौफ़ीक़ बना दिया है। हर चहार जानिब नफ़्सा नफ़्सी के आलम में इंसान इस्लाह व फ़लाह के तसव्वुर से भी मायूस व ना उमीद होता जा रहा है जबकि मायूसी व नाउमीदी काफ़िरों का शेवा है यह मायूसी नक़्क़ाराए वक़्त बन जाये अगर हज़रत ताजुश्शरीआ़ जैसी ताबेदार शख़्सीयत इस तारीकी के माहौल में शमा रौशन की सूरत में मौजूद न हों। कहा जाता है कि ऐसी मीनारा नूर हस्तियाँ अल्लाह तआ़ला के करम का मज़हर होती हैं। इस उम्मते मुस्तफ़वी को इन्आ़म व इकराम के तौर अता की जाती हैं। हज़रत ताजुश्शरीआ़ की ज़ात बा बरकत अ़तियाए ख़ुदावन्दी हैं हज़रत ताजुश्शरीआ़ उस वक़्त अपने मुक़द्दस मिशन के लिए मसरूफ़े जिहाद हुये जब हज़रत मुफ़्ती आज़म के विसाले पुर मलाल के बाद दुनिया बरेली को ख़ाली समझने लगी थी,पैग़ामे हक़ व सदाक़त के अ़लम बरदारों पर बे यक़ीनी का कोहरा छा गया था। एक तरफ़

दुश्मुनाने दीन.दूसरी त़रफ़ ह़ासिदीन अपने मिशन को आगे बढ़ाने के लिए घात में लगे हुये मैदाने अमल में उतरने के लिए पर तोल रहे थे। आ़ला ह़ज़रत इमाम अहले सुन्नत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िल बरेलवी का फ़रमाने ज़ीशान उस वक़्त के माहौल की मनज़र कशी कर रहा था।

इक त़रफ़ आदाए दीं इक त़रफ़ हैं ह़ासिदीं
बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करौड़ों दुरूद

अशद ज़रूरत थी.हालात ना साज़गार थे, मुख़ालिफ़त उरूज पर थी.ह़क़ की बात कहना मुश्किल हो रहा था,आप ने जुरअते ईमानी और अख़लाक़ी कुव्वत से मुस्लेह हो कर इल्मे स़दाक़त लहराया.दीन के दिफ़ाअ़ और अ़ज़मते मुस्तफ़ा जाने रहमत स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के तहफ़्फ़ुज़ के लिए इस क़दर सर फ़रोशी से मैदाने अ़मल में आये क़ि देखते ही देखते उन की बात को सुना जाने लगा,और उन के अफ़कार व ख़्यालात दिलों में उतरने लगे। जां सोज़ी या जां सिपारी की यह वह रिवायत थी जिसे ताईदे इज़दी ह़ासिल थी, और जिस पर रह़मते आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की करम गुस्तरयाँ साया फगन थीं।

पन्द्रहवीं स़दी हिजरी इक्कीसवी स़दी ईसवी के निस़्फ़े अव्वल में आस्माने इल्म व फ़ज़्ल पर ऐसे छाये कि सह़ाब रहमत बन सावन भादों की त़रह़ बरसे, इल्म व फ़ज़्ल की सूखी खेतियाँ सैराब हुईं। चमन लहलहाने लगे,तिशनिगाने इल्म व फ़ज़्ल और स़ाहिबाने तहक़ीक़ व तदक़ीक़ ने इस सरे चशमाए फ़ैज़ व करम से न सिर्फ़ अपनी इल्मी प्यास बुझाई बल्कि वह भी इल्म व फ़ज़्ल,तहक़ीक़ व तदक़ीक़ के चमन लाला ज़ार हुये,त़रह़ त़रह़ के ख़ुश रंग और ख़ुशबू वाले फूल खिले। क्या ख़ूब कहा ज़ौक़ ने :

गुलहाए रंगा रंग से है ज़ीनते चमन
ऐ ज़ौक़ इस जहाँ को है ज़ेब इख़्तिलाफ़ से

और फिर यह हुआ कि वह सब अपनी अपनी ख़ुशबूओं से आलमे इस्लाम को महकाने लगे। पूरी दुनियाए इस्लाम जिस से महक उठी। समन्दर की सीपों ने उस अब्रे निसयाँ से क़ीमती मोती चून लिए,तालाब व नदियाँ उसे बरसाती पानी समझ कर आप से बाहर हुईं।

बारिश में तालाब भी हो जाते हैं कम ज़रफ़
आप से मगर बाहर समन्दर नहीं होता

बलन्द टीले अपनी ऊँचाई और फ़र्ज़ी बलन्दी पर नाज़ा और मगरूर रह कर ख़ुश्क और बेफ़ैज़ रहे,न सैराब हुये न सब्ज़ा ज़ार व लाला ज़ार बने बल्कि सब्ज़ा ज़ार खेती और लाला ज़ार चमन ऐनाद व हसद और बादे समूम की लपटों से सूखने और मुरझाने लगे,न ही इल्म व फ़ज़्ल और रहमत व अनवार की इस बारिश से कुछ ज़ख़ीरा कर सके जो वक़्त पर काम आता। मगर इस माहौल में भी मायूस होने की ज़रूरत नहीं।

चमन के माली अगर बनालें चमन के मुवाफ़िक़ शीआ़र अब भी
चमन में आ सकती है पलट कर चमन की रूठी बहार अब भी

लिहाज़ा इस में न किसी बैसाखी की ज़रूरत है,न लिफ़्ट व क्रेन की,बस अख़लास़ व लिल्लाहियत और क़ौल व अ़मल में इत्तेहाद व यकसानियत की ज़रूरत है।

मुअर्रिख़े बरेली शरीफ़ मेरे शागिर्द रशीद,फ़रज़न्द रूहानी मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी जनरल सिक्रेट्री आल इन्डिया जमाअ़त रज़ाए मुस्तफ़ा मुअल्लिफ़ "मुफ़्तीए आज़म और उन के ख़ुल्फ़ा" और "हयाते ताजुश्शरीआ़" नौ जवान क़लम कारों में ज़ूद नवेस,पुख़्ता क़लम और दो दर्जन से ज़ाइद किताबों के मुसन्निफ़ व मुअल्लिफ़ हैं। मरकज़े इल्म व इरफ़ान बरेली शरीफ़ के

अहवाल व मुआरिफ़ और उन के माआख़ज़ व मराजेअ और ख़ान्दाने रज़ा के मशाहीर अकाबिरीन की सीरत व सवानेह पर गहरी नज़र रखने वाले रम्ज़ शनास शख़्सियत के मालिक हैं।"हयाते ताजुश्शरीआ"के क़बूले आम व ख़ास के बाद"नवादिराते ताजुश्शरीआ"पूरी आब व ताब के साथ मन्ज़रे आम पर ला चुके हैं। फ़कीर नूरी ने"नवादिराते ताजुशरीआ"पर इक सरसरी नज़र डाली यह किताब क्या है? ताजुश्शरीआ पर रीसर्च और पी एच डी करने वालों के लिए एक दस्तावेज़,रौशन राह और बुनियादी माख़ज़ है। हज़रत ताजुश्शरीआ की शख़्सीयत हश्ते पहलू हीरे की तरह है। जिस की हर किरन अपनी तरफ़ खींचती है। इस किताब से वह किरनें पूरी तरह नुमाया हैं। ख़ान्दाने रज़ा के जियालों की सवानेह व तज़करे,ज़ाती,क़ौमी,मिल्ली और मज़हबी हालत पर मुश्तमिल एक तारीख़ी आइना है,जिसे देख कर और पढ़ कर रूह तड़प उठेगी और दिल मसरूर होगा। बाद हु मुसन्निफ़ के लिए दिल से दुआयें निकलेंगी। मौलाना मुहम्मद शहाबुददीन रज़वी सल्लमहु ने"नवादिराते ताजुश्शरीआ" में जिन ख़ारदार वादियों से गुज़र कर क़ीमती और नादिर मालूमात फ़राहम की हैं वह उन्ही का हिस्सा हैं। इस मवाद की फ़राहमी में वह कब से लगे हुये हैं,यह इसकी जमा व तरतीब की तारीख़ का पता किताब ख़ुद देदेगी,बताने की ज़रूरत नहीं। यह किताब लाइक़े तवज्जोह भी है और क़ाबिले सद सताइश भी।

मैं ने मौसूफ़ से ज़ोर देकर कहा है कि: माज़ी,हाल और मुस्तक़बिल के लिहाज़ से कोई मुतज़ाद,मुतआरिज़ और मुतनाज़ा बात न आने पाये"नवादिराते ताजुश्शरीआ" बिल्कुल दस्तावेज़ी हैसियत की हामिल हो फिर भी अगर कोई कोरे बातिन इस में नक़्स तलाश करता है,तो उस

का हाल मक्खी जैसा होगा कि जिसे अच्छी चीज़ नज़र नहीं आती वह हमेशा गन्दगी पर बैठती है।

मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी अब उर्स रज़वी सफ़रुलमुज़फ्फ़र 1437 हिजरी 8 दिसम्बर 2015 ई में हज़रत ताजुश्शरीआ़ मदज़िल्लाहुल आ़ली के पन्द्रह नादिर व नायाब रसाइल नई आब व ताब के साथ ज़ेवरे त़बाअ़त से आरास्ता कर के ला चुके हैं। नीज़ हज़रत ताजुश्शरीआ़ मदज़िल्लाहुलआ़ली से मुख़्तलिफ़ मक़ामात और मवाक़े पर कश्फ़ व करामत का जो ज़हूर हुआ और उस को अहले अ़क़ीदत व मोहब्बत ने महफ़ूज़ कर लिया,वह अगर्चे खुद में एक बड़ा काम और तरतीब व तज़ईन की मन्ज़िलों से गुज़ार कर मन्ज़रे आ़म पर लाना जुये शेर लाने के मिस़दाक़ है। मगर मौसूफ़ ने यहाँ भी हौस़ले और हिम्मत से काम ले कर कुल नहीं तो कुछ अन्मोल हीरे और मोती लड़ी में पिरो कर एक हार बनाम''करामते ताजुश्शरीआ़'' तैयार कर दिया है,और हज़रत ताजुश्शरीआ़ के बाज़ कश्फ़ व करामात को ज़ेवरे तबाअ़त से आरास्ता कर के पेश कर दिया है। जो क़ाबिले सताइश भी है,क़ाबिले ज़्यारत और लाइक़े मुत़ाला भी,और अहले सिलसिला के लिए बेश बहा तोहफ़ा भी अल्लाह तआ़ला मौस़ूफ़ की इन सब काविशों को क़बूले आ़म व ख़ास़ अ़त़ा फ़रमाये। आमीन।

आज इस बात की शदीद ज़रूरत है कि हम अपने अकाबिर व असलाफ़ की इल्मी और रूहानी हालात व कैफ़ियात,फ़ज़ाइल व कमालात,अक़ाइद व नज़रियात ख़िदमात जलीला और ज़र्री कारनामों से अ़वाम व ख़्वास़ अहले सुन्नत को ज़्यादा मुतआ़रफ़ करायें ताकि उन के इल्मी फ़ैज़ान और रूहानी क़दरों से ज़्यादा लोग फ़ैज़याब हो सकें,ताकि आदाए दीन और हासिदीन की ज़बान व

क़लम को क़ाबू में किया जा सके।

अरबाबे इल्म व दानिश से मुख़्लिसाना गुज़ारिश है कि इस दस्तावेज़ को तन्क़ीद और तअ़न व तशनीअ़ का मौज़ू न बनायें बल्कि मुसन्निफ़ को ज़र्री मशवरों से नवाज़ें। यह हमारे अख़्लास व मोहब्बत का तक़ाज़ा है। इस राह की मुश्किलों और दुशवारियों को वही कुछ जानता है जो इस राह से गुज़रता है। दूसरा इन अज़ीयतों से आश्ना नहीं।

अल्लाह तआ़ला ख़ान्दाने रज़ा के हर हर फ़र्द ख़ुसूसन हज़रत ताजुश्शरीआ़ मद्दज़िल्लाहुल आ़ली उन के जा नशीन व फ़रज़न्द हज़रत मौलाना अ़सजद रज़ा ख़ा,हज़रत ताजुश्शरीआ़ की आल नस्बी व रूहानी और तमाम वाबस्तगाने सिलसिला आलिया रज़विया को दुशमनों के शर,हासिदों के हस्द व जुमला अमराज़ जिस्मानी व रूहानी और आसेब रोज़गार से मामून व महफ़ूज़ फ़रमाये, आमीन।

हज़रत ताजुश्शरीआ़ मद्दज़िल्लाहुल आ़ली के साया आ़तिफ़त को ता देर हम सब के सरों पर क़ाइम व दाइम रखे और उन के फ़ुयूज़ात इल्मिया,अ़मलिया और रूहानिया से माला माल फ़रमाये, आमीन।

फ़कीर नूरी सय्यद शाहिद अ़ली हसनी रज़वी जमाली करीमी
(ख़लिफ़ाए हुज़ूर मुफ़्ती आज़म,क़ाज़िए शरअ़ व मुफ़्ती ज़िला रामपुर)
शैख़ुल हदीस व नाज़िमे आ़ला मरकज़ी दर्सगाह
अहले सुन्नत अलजामिअ़तुलइस्लामिया पुराना गंज,रामपुर

आरिफ़बिल्लाह हज़रत ताजुश्शरीआ का मुख़्तसर तआरुफ़

विलादत :

जानशीन मुफ्ति-ए-आजम अल्लामा मुफ्ती आलहाज अश्शाह मुहम्मद अख़तर रज़ा अज़हरी क़ादरी इब्ने मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रजा जीलानी इब्ने हुज्जतुलइस्लाम मौलाना मुहम्मद हामिद रज़ा इब्ने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी25फ़रवरी 1942 ई. को मोहल्ला सौदागरान बरेली शरीफ़ में पैदा हुये।

ख़ानदानी पसमन्ज़रः

ताजुश्शरीआ का ख़ान्दान अफ़ग़ानिन नसल और क़बील-ए-बढ़ेच से तअ़ल्लुक़ रखता है। मूरिसे आला शाहज़ादा सईदुल्लाह ख़ाँ कन्दहार हुकूमत अफ़ग़ानिस्तान के वली अ़हद थे,ख़ानदानी इख़्तिलाफ़ की वजह से क़न्दहार को तर्क वत़न कर लाहौर आये। यहाँ पर गवर्नर ने शीशमहल में आप के क़ियाम का इन्तिज़ाम किया और दरबार मुहम्मद शाह बादशाह देहली को इत्तिलाअ़ भिजवाई,दरबार से शाही मेहमाननवाज़ी का हुक्म सादिर हुआ। फिर शाहज़ादा सईदुल्लाह ख़ाँ ने देहली बादशाह मुहम्मद शाह से जा कर मुलाक़ात की,आप को बादशह ने फौज का जनरल बना दिया और आप के साथियों को भी फौज में अच्छी जगह मिल गई। रूहेलखन्ड में कुछ बग़ावत के आसार नुमाया हुये तो बादशाह ने आप को रुहेलख़न्ड की दारुस्सुलतनत बरेली शरीफ भेज दिया

ताकि वहाँ अमन व अमान क़ाइम करें। आप के साहबज़ादे सआदत यार ख़ाँ दरबार देहली में वज़ीर –ए–मुम्लिकत थे,उनको कलीदी क़लमदान मिला था,उनकी अपनी अ़लाहिदा मुहर थी। हाफ़िज़ काज़िम अ़ली ख़ाँ के अ़हद में मुग़लिया हुकूमत का ज़वाल शुरू हो गया। हर तरफ़ बग़ावतों का शोर और आज़ादी व ख़ुदमुख़्तारी का ज़ोर था। आप अवध की कमान संभालने पहुँचे। आप के फ़रज़न्द मौलाना शाह रज़ा अ़ली ख़ाँ बरेलवी जिन्होंने 1857 ई. में अहम किरदार अदा किया। अंग्रेज़ ने उनका सर क़लम करने के लिए पाँच हज़ार के इन्आम का एलान किया था। आप के दो फ़रज़न्द मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ाँ बरेलवी और दूसरे मौलाना हकीम तक़ी अ़ली ख़ाँ बरेलवी तवल्लुद हुये, जिन्होंने दरजनों किताबें लिखीं, मौलाना नक़ी अ़ली ख़ाँ बरेलवी के तीन फ़रज़न्द तवल्लुद हुये।

(1) आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ क़ादरी फ़ाज़िले बरेलवी

(2)मौलाना हसन रज़ा ख़ाँ बरेलवी

(3) मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा ख़ाँ बरेलवी।

तस्मिया ख़्वानी :

जानशीन मुफ़्तिए–आज़म की उ़मर शरीफ़ जब चार साल, चार माह, चार दिन की हुई तो वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी ने तक़रीब बिस्मिल्लाह ख़्वानी मुन्अ़क़िद की, और उसमें दारूलउ़लूम मन्ज़रे इस्लाम के जुमला त़लबा को

दअवत दी। हुज़ूर मुफ़्ति–ए–आज़म कुद्दिसा सिर्रहु,ने रस्मे बिस्मिल्लाह अदा कराई। और "मुहम्मद" नाम पर अक़ीक़ा फरमाया। पुकार ने का नाम "मुहम्मद इस्माईल रज़ा" और उर्फ़ "मुहम्मद अख़्तर रज़ा" तजवीज़ हुआ। हुज़ूर मुफ़्ति– ए–आज़म की साहबज़ादी यानी जानशीने मुफ्ति–ए–आज़म की वालिदा माजिदा ने तअ्लीम व तरबियत का ख़ास ख़्याल रखा। चूंकि नाना जान का सहीह जानशीन इसी नवासे को मुस्तक़बिल में बनना था, और सारी तवक़्क़ुआत इन्हीं से वाबस्ता थीं, इसी लिए नाना जान हुज़ूर मुफ़्ति–ए–आज़म की दुआये भी आप ही के हक़ में निकलती रहीं।

हुसूले उ़लूमे इस्लामिया :

जानशीने मुफ़्ति–ए–आज़म ने घर पर वालिदा माजिदा से कुरआन करीम नाज़रा ख़त्म किया। उसी दौरान वालिद माजिद से उर्दू की किताबें पढ़ी। घर पर तअ्लीम हासिल करने के बाद वालिद बुज़ुर्गवार ने दारूलउ़लूम मन्ज़रे इस्लाम में दाख़िल करादिया। नोहमीर,मीज़ान, मुन्शइब वग़ैरा से हिदाया आख़ेरैन तक की कितबें दारूलउ़लूम मन्ज़रे इस्लाम के कुहना मशक़ असातिज़ा किराम से पढ़ीं। ताजुश्शरीआ ने फ़ारसी की इब्तिदाई कुतुब पहली फ़ारसी,दूसरी फ़ारसी,गुलज़ारे दबिस्ता,गुलिस्ताँ और बोस्ताँ मन्ज़र–ए–इस्लाम के उस्ताद हाफ़िज़ इन्आ़मुल्लाह ख़ाँ तस्नीम हामिदी बरेलवी से पढ़ी। 1952 ई. में एफ आर इस्लामिया इन्टर कालेज में दाख़िला लिया। जहाँ पर हिन्दी और अंग्रेज़ी की तालीम

हासिल की।

मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द कुद्दुस सिर्रुहु के मुरीदे ख़ास जनाब निसार अहमद हामिदी सुलतान पूरी मरहूम की कोशिशे से जामिआ अज़हर क़ाहिरा(मिस्र)से अरबी अदब में महारत हासिल करने के लिए फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अब्दुत्तवाब मिस्री की ख़िदमात हासिल की गई थीं। शैख़ साहिब दारुल उलूम मन्ज़र इस्लाम में दर्स व तदरीस दिया करते थे। उनके ख़ास तलामिज़ा में आप का शुमार होता था। आप दौराने तालिबे इल्मी मामूल था कि अलस्सुबह अरबी अख़बारात उस्ताद को सुनाते और उर्दू हिन्दी के अख़बारात की ख़बरों व इत्तिलाआत को अरबी ज़बान में तर्जमा कर के सुनाते। आप को शैख़ साहिब बड़ी तवज्जोह और इन्हेमाक से पढ़ाते आप की ज़िहानत व फतानत को देखते हुये जामिआ अज़हर में दाख़िला का मशवरा मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ जीलानी को दिया तो वह तैयार हो गये। ताजुश्शरीआ जानशीन मुफ़्ति–ए– आज़म1963 ई. में जामिया अज़हर क़ाहिरा मिस्र तशरीफ़ ले गये। वहाँ आप ने "कुल्लिया उसुलुद्दीन" (एम–ए–)में दाख़ला लिया। मुसलसल तीन साल तक जामिया अज़हर मिस्र में रह कर फ़न्ने तफ़सीर व हदीस के माहिर असातिज़ा से इक्तिसाब इल्म किया।

ताजुश्शरीआ बचपन ही से ज़िहानत व फ़ितानत और कुव्वते हाफ़िज़ा के मालिक थे। और अरबी अदब के दिलदादा थे। जामिया अज़हर मिस्र में दाख़ला के बाद जब आप की जामिया के असातिज़ा और तलबा से

गुफ़्तगु हुई तो वह आप की बे तकल्लुफ़ फ़सीह व बलीग़ अ़रबी गुफ़्तगु सुन कर मह्वे हैरत हो जाते थे और कहते थे कि एक अ़जमियुन्नसल हिन्दुस्तानी अ़रबियुन्नसल अहले इल्म हज़रात से गुफ़्तगु करने में कोई तकल्लुफ़ महसूस नहीं करता। वाक़ई क़ाबिले हैरत बात है।

जामिया अज़हर मिस्र के शौअ़बा–ए–कुल्लिया–उसूलुद्दीन का सालाना इम्तिहान अगर्चे तहरीरी होता था। मगर मालूमाते अ़म्मा(जनरल नालेज) का इम्तिहान तक़रीरी होता था। चुनाँचेह जामिया के सालाना इम्तिहान के मौक़ा पर जब जानशीन मुफ़्ति–ए आ़ज़म का इम्तिहान हुआ तो मुम्तहिन ने आपकी जमाअ़त से इल्मे कलाम के चन्द सवालात किए, पूरी जमाअ़त में से कोई एक भी सवालात के सहीह जवाब न दे सका। मुम्तहिन ने रूये सुख़न आप की तरफ़ करते हुये सवालात को दोहराया। जानशीन मुफ़्ति–ए–आ़ज़म ने उन सवालात का ऐसा शाफ़ी व काफ़ी जवाब दिया कि मुम्तहिन तअ़ज्जुब की निगाह से देखते हुये कहने लगा कि "आप तो हदीस व उसूले हदीस पढ़ते हैं, तब इल्मे कलाम में कैसे जवाब दिया"। आप ने इल्मे कलाम कहाँ पढ़ा ?

जानशीन मुफ़्ती–ए–आ़ज़म ने जवाब में कहा कि "मैंने दारूलउ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली में चन्द इब्तेदाई किताबें इल्मे कलाम की पढ़ी थीं और मुझे मुताला का बहुत शौक़ था जिस की वजह से मैंने आप के सवालात के जवाब दे दिए। अगर इस से भी मुश्किल सवाल होता तो भी मैं सहीह जवाब देता।

आप के जवाब से मसरूर हो कर मुम्तहिन जामिया ने आप को जमाअत में पहला मक़ाम और पोज़ीशन दी,और आप अव्वल नम्बरों से पास हुये।

जामिया अज़हर से फ़रागत :

ताजुश्शरीआ मुफ़्ती मुहम्मद अख़तर रज़ा अज़हरी मद्दज़िल्लाहु 1963 ई में जामिया अज़हर मिस्र तशरीफ़ ले गये,और वहाँ पर तीन साल मुसलसल रह कर हुसूले इल्म में मशगूल रहे। दूसरे साल के सालाना इम्तिहान में आप ने शिरकत की। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ले अमीम से पूरे जामिया अज़हर क़ाहिरा में इम्तिहान में आला कामयाबी अता फ़रमाई। उस कामयाबी पर एडीटर माहनामा आला हज़रत "बरेली कवाइफ़ अस्ताना रज़विया" के उनवान से रक़मतराज़ हैं :

नबीर–ए–आला हजरत हुज्जतुलइस्लाम अलैहिर्रहमा और हज़रत मुफ़स्सिरे आज़म के फ़रज़न्दे दिलबन्द मौलाना अख़तर रज़ा ख़ाँ साहब ने अरबी में बी–ए–की सनद फ़रागत निहायत नुमाया और मुम्ताज हैसियत से हासिल की,मौलाना अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब न सिफ़ जामिया अज़हर में बल्कि पूरे मिस्र में अव्वल नम्बरों से पास हुये। मौला तआला उन को इस से ज़्यादा बेश अज़ बेश कामयाबी अता फ़रमाये। और उन्हें ख़िदमात का अहल बनाये, और वह सहीह मअना में आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत के जानशीन कहे जायें। अल्लाहुम्मा ज़िद फ़ज़िद।

ताजुश्शरीआ की 1966 ई. में जामेअ अज़हर

क़ाहिरा से फ़रागत हुई तो अव्वल पोज़ीशान हासिल करने की वजह से जामिआ की मुक़तदिर शख़्सियात ने आप को बतौर इन्आम "अज़हर अवॉर्ड" पेश किया और साथ ही साथ "सनदे फ़रागत व तहसीले उ़लूमे इस्लामिया"स` भी नवाज़े गये।

क़ाहिरा से बरेली तशरीफ़ आवरी :

जब आप जामेअ़ अज़हर से बरेली शरीफ़ तशरीफ़ लाये तो उनकी कैफ़ियत अ़जीब व ग़रीब थी। दर असल पहले जामिआ अज़हर जाना बहुत मुश्किल मरह़्ला था मुसलसल क़ियाम की वजह से अहले ख़ान्दान से मुलाक़ात व मुसाफ़ा ना मुम्किन था,बरेली आमद की ख़बर से खुशियों की लहर दौड़ गई। जनाब उमीद रज़वी बरेलवी यूँ तहरीर फ़रमाते हैं, बउ़नवान "आमदनत बाइस"...

गुलिस्ताने रज़वियत के महकते फूल, चमनिस्ताने आ़ला ह़ज़रत के गुले ख़ुशरंग, जनाब मौलाना मुह़म्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ स़ाहब इब्ने ह़ज़रत मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द रह़मतुल्लाहि अ़लैहि एक अ़र्सा दराज़ के बाद जामेअ़ अज़हर से फ़ारिगुत्तहस़िल हो कर 17नवम्बर 1966ई 1386हिजरी की सुबह़ को बहार अफ़ज़ाये गुलशने बरेली हुये। बरेली के जंक्शन स्टेशन पर मुतअ़ल्लिक़ीन व मुतवस्सिलीन व अहले ख़ानदान, उ़लमा–ए–किराम व तल्बा–ए– दारूलउ़लूम(मन्ज़रे इस्लाम)के अ़लावा बेशुमार मोअ़तक़दीन ह़ज़रात ने(जिन में बैरूने जात ख़ुस़ूस़न कानपुर के अह़बाब भी मौजूद थे) ह़ज़रत मुफ़्ती–ए–

आज़म मद्दज़िल्लाहु की सर परस्ती में शानदार इस्तिक़बाल किया, और साहबज़ादा मौसूफ़ को खुशरंग फूलों के गजरों और हारों की पेशकश से अपने वालिहाना जज़बात व खुलूस और अक़ीदत का इज़हार किया।

इदारा मौलाना अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी और मुतवस्सिलीन को इस कामयाब वापसी पर हदया–ए–तबरीक व तहनियत पेश करता है,और दुआ करता है कि अल्लाह तआ़ला बतुफ़ैल अपने हबीबे करीम अ़लैहिस्सलात वत्तस्लीम, उन के आबा किराम ख़ुसूसन आ़ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे आ़ज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का सच्चा सही वारिस व जानशीन बनाये।

ई दुआ़ अज़ मन व अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद।

(मौलाना रैहान रज़ा ख़ाँ मुदीर माहनामा आ़ला हज़रत बरेली दिसम्बर 1966 ई. 1386 हिजरी)

"हुज़ूर ताजुश्शरीअ़ को लेने के लिए हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म बज़ाते ख़ुद बनफ़्से नफ़ीस तशरीफ़ ले गये,और ट्रेन का बे ताबाना इन्तिज़ार फ़रमाते रहे,जैसे ही ट्रेन प्लेटफ़ार्म पर पहुंची सब से पहलेहज़रत ने गले लगाया, पेशानी चूमी और बहुत दुआयें दीं और फ़रमाया कि कुछ लोग गये थे मगर बदल कर आये मगर मेरे बच्चे पर जामिआ़ की तहज़ीब का कुछ असर नहीं हुआ,मा शाअल्लाह।"

अन्दाज़े तर्बियतः

हज़रत ताजुश्शरीआ़ के वालिद माजिद मुफ़स्सिर–ए–आ़ज़म हिन्द रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने आप की नश व

नुमा बड़े नाज़ व नअ़म और खुसूसी एहतिमाम के साथ की, दौराने त़ालिबेइल्मी आप को तक़रीर व वअ़ज़ की तरबियत देते थे। एक बार वालिद माजिद ने आप को क़रीब बुला कर बैठाया और फ़रमाया कि कल से त़लबा(मन्ज़र–ए– इस्लाम)को सैफ़ुलजब्बार(मुस़न्निफ़ा सैफ़ुल्ला हिलमसलूल अ़ल्लामा शाह फ़ज़ले रसूल उस्मानी बदाँयूनी)सुनाया करोगे। आप ने अ़र्ज किया कि अब्बा हुज़ूर अभी मेरी उर्दू भी अच्छी नहीं है,फ़रमाया कि सब ठीक हो जायेगी,यह काम तुम्हारे ज़िम्मा किया जाता है। आप ने दूसरे दिन से हम दर्स त़लबा को जमा किया और ख़ानक़ाहे आ़लिया रज़विया की छत पर बैठ कर ''सैफ़ुलजब्बार''का दर्स शुरू करदिया। इस त़रह मुतअ़द्दिद बार सैफ़ुलजब्बार का दर्स दिया और मुतालअ़ किया,वालिद माजिद के इस से कई मक़ासि़द पोशीदा थे,एक तो यह कि उर्दू एबारत ख़्वानी बेहतर हो जायेगी,दूसरी अक़ाइद–ए–अहले सुन्नत व जमाअ़त की ख़ूब जानकारी हासि़ल होगी,तीसरी वजह यह थी कि तक़रीर व ख़ित़ाबत करने में तकल्लुफ़ और झिझक ख़त्म हो जायेगी।

असातिज़ा किराम :

आप के असातिज़ा में क़ाबिले ज़िक्र असातिज़ा किराम के नाम दर्ज हैं :

1– हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म मौलाना अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा नूरी बरेलवी कुद्दुस सिर्रहु

2– बहरूलउ़लूम हज़रत मौलाना मुफ़्ती सैयद मुहम्मद

अफ़ज़ल हुसैन रज़वी मुंगेरी

3– मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम रज़ा जीलानी रज़वी बरेलवी

4 –फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलानां अ़ल्लामा मुहम्मद समाही शैख़ुल हदीस वत्तफ़सीर जामेआ अज़हर क़ाहिरा

5– हज़रत अ़ल्लामा मौलाना महमूद अ़ब्दुलग़फ़्फ़ार उस्ताज़ुलहदीस जामेआ अज़हर क़ाहिरा

6–उस्ताज़ुलअसातिज़ा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अहमद उ़र्फ़ जहाँगीर ख़ाँ रज़वी आज़मी

7 रैहाने मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा रहमानी रज़वी बरेलवी

8 फ़ज़ीलतुश्शैख़ मौलाना अ़ब्दुत्तवाब मिस्री उस्ताद मन्ज़र–ए–इस्लाम बरेली

9 मौलाना हाफ़िज़ इन्आ़मुल्लाह ख़ाँ तस्नीम हामिदी बरेलवी।

दर्स व तदरीस :

ताजुश्शरीआ़ अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी को 1967 ई में दारुलउ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली में दर्स व तदरीस देने के लिए पेश कश की गई। आप ने उस दअ़वत को क़बूलियत से सरफ़राज़ किया, 1967 ई. से तदरीस के मनसब पर फ़ाइज़ हो गये। ताजुश्शरीआ़ के बरादरे अकबर मौलाना रेहान रज़ा रहमानी बरेलवी ने 1978 ई. में "सदरूलमुदर्रिसीन" के आ़ला ओ़हदा पर तक़र्रुर किया। और इस ओ़हदे के साथ "रज़वीदारूलइफ़्ता" के नायबे मुफ़्ती भी रहे। दर्स व तदरीस का सिलसिला

मुसलसल बाराह साल तक चलता रहा।

हिन्दुस्तान गीर तब्लीग़ी दौरे की वजह से यह सिलसिला कुछ अय्याम के लिए मुन्क़तअ़ हो गया मगर कुछ ही दिनों बाद अपने दौलत कदे पर दर्स कुरआन व ह़दीस का सिलसिला शुरूअ़ किया। जिस में मन्ज़रे इस्लाम,मज़हरे इस्लाम और जामिआ़ नूरिया रज़विया के त़लबा कसरत से शिरकत करते, 1407 हिजरी और 1408 हिजरी को मदरसा अलजामियातुल इस्लामिया गंजक़दीम रामपुर में ख़त्म बुख़ारी शरीफ़ कराया।1408 हिजरी को जामिआ़ फ़ारूक़िया भोजपुर ज़िला मुरादाबाद में बुख़ारी शरीफ़ का इफ़्तिताह किया। 1409 हिजरी को दारूलउ़लूम अमजदिया कराची (पाकिस्तान)में बुख़ारी शरीफ़ का इफ़्तिताह़ फ़रमाया,और ज़िलहिज्जा1409हिजरी को अलजामिअ़तुल क़ादरिया रिछा बेहड़ी ज़िला बरेली शरीफ़ में शरह़ वक़ाया का त़वील सबक़ पढ़ाया। अब तक मुल्क व बैरुने मुमालिक में न जाने कितने मदारिस व जामीअ़ात में दर्से बुख़ारी दिए हैं। जामिआ़ फ़ारूक़िया बनारस में ख़त्म बुख़ारी के मौक़ा पर स़ाहिबे बुख़ारी और आख़िरी ह़दीस पर ढाई घन्टा तक़रीर फ़रमाई।

फतावा नवींसी का आग़ाज़ :

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ्ती–ए–आ़ज़म अ़ल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी दामत बरकातुहुमुल आ़लिया को अल्लाह तआ़ला ने वदीअ़त के त़ौर पर इल्मी व फ़िक़ही स़लाहियतों और जुज़याते फ़िक़्हिया पर कामिल दस्तरस,इल्मे कुरआन व ह़दीस पर

मुकम्मल इदराक अ़ता फ़रमाया। आप ने सब से पहले फ़तवा 1966ई/1386हिजरी में तह़रीर फ़रमा कर मुफ़्ती सैयद अफ़ज़ाल हुसैन मुंगेरी स़दर दारुलइफ़ता मन्ज़र-ए-इस्लाम को दिखाया,आप ने फ़रमाया कि अब मैंने देख लिया है नाना मोह़तरम को दिखा आइये, फिर आप ने अपने नाना ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुद्दुस सिर्रुहु की ख़िदमत में पेश किया। ह़ज़रत ने मुलाह़िज़ा फ़रमा कर आप से मुख़ात़ब हो कर दादे तह़सीन और ह़ौस़ला अफ़ज़ाई फ़रमाई और हिदायत की और फ़रमाया दारुलइफ़्ता में आ कर फ़तवा लिखा करो और मुझे दिखाया करो। इस से पहले फ़तवा में सवालात के शाफ़ी व काफ़ी जवाबात दिये। यह इस्तिफ़ता मरकज़ इस्लाम मदीनतुल मुनव्वर से आया था जिस में त़लाक़,निकाह़ मीरास से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल शरइया दरयाफ़्त किए गये थे। आप ने तफ़स़ील से दलाइल व बराहीन के साथ फ़तवा को मुज़य्यन कर के उस्ताज मोह़तरम और नाना ज़ान से दाद व तह़सीन ह़ासिल की।

नबीरा-ए-उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती ह़बीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी कहते हैं कि:

"कभी कभी नाग़ा हो जाता था तो ह़ज़रत की अहलिया मोह़तरमा पीरानी अम्माँ स़ाह़िबा अ़लैहिर्रहमा दरयाफ़्त फ़रमाती कि आज अख़्तर मियाँ नहीं आये हैं। उन से कहो कि रोज़ाना आया करे। ह़ज़रत इन को बहुत पसन्द फ़रमाते हैं।"

ताजुश्शरीआ़ जब भी फ़तावा की इस्लाह़ के लिए हाज़िरे ख़िदमत होते तो ह़ज़रत आप को अपने क़रीब बैठाते,फ़तावा मुलाहिज़ा फ़रमाते और ज़रूरत के तेहत कुछ इज़ाफ़ा तरमीम व तब्दील फ़रमा कर दस्तख़त फ़रमा देते,यह मामूल बरसों रहा। और ह़ज़रत के अय्यामे अ़लालत दफ़तरी कामों,दारुलउ़लूम मज़हर इस्लाम और "सनदे ख़िलाफ़त व इजाज़त" पर दस्तख़त़ करने और महर की तमाम तर ज़िम्मादारियाँ आप के सुपुर्द फ़रमा दी थीं। जिस को आप ने बाहुस्न व ख़ूबी अन्जाम दिया। आप खुद अपने फ़तवा नवीसी की इब्तिदा यूँ तह़रीर फ़रमाते हैं।

"मैं बचपन से ही ह़ज़रत(मुफ़्ती–ए–आ़ज़म)से दाख़िले सिलसिला हो गया हूँ,जामिआ़ अज़हर से वापसी के बाद मैंने अपनी दिलचस्पी की बिना पर फ़तवा का काम शुरू किया। शुरू शुरू में मुफ़्ती सैयद अफ़ज़ल हुसैन स़ाह़ब अ़लैहिर्रह़मा और दूसरे मुफ़्तियाने किराम की निगरानी में मैं यह काम करता रहा। और कभी कभी ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर फ़तवा दिखाया करता था। कुछ दिनों के बाद उस काम में मेरी दिलचस्पी ज़्यादा बढ़ गई और फिर मैं मुस्तक़िल ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने लगा। ह़ज़रत की तवज्जोह से मुख़्तस़र मुद्दत में इसकाम में मुझे वह फ़ैज़ ह़ासिल हुआ कि जो किसी के पास मुद्दतों बैठने से भी न होता।"

(माहनामा इस्तिक़ामत कानपूर स.151 रज्जबुलमुरज्जब 1403 हिजरी 1983 ई.)

ताजुश्शरीआ़ ने लेखक(मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी)

के एक सवाल के जवाब में फ़रमाया कि : मैंने दारुलउ़लूम मन्ज़र–ए–इस्लाम में पढ़ा और पढ़ाया, जामिआ अज़हर में भी पढ़ा,शुरू से ही मुझे मुत़ालअ़ का बहुत शौक़ था, अपनी दरसी किताबों के अ़लावा शरह ह़वाशी और ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ किताबों का रोज़ाना कसरत से मुतालअ़ करता,और ख़ास़ ख़ास़ चीज़ों को डायरी में नोट कर लिया करता था। उसके अ़लावा सब से अहम बात यह है कि मुझे जो कुछ भी मिला वह हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म कुद्दुस सिर्रहु की स़ोह़बत व इस्तिफ़ादा से हासि़ल हुआ। उनकी एक घन्टे की स़ोह़बत,इस्तिफ़सारात और इस्तिफ़ादा सालों की मेह़नत व मुशक़्क़त पर भारी पड़ते थे। मैं आज हर जगह हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म का इल्मी व रूह़ानी फ़ैज़ान पाता हूँ। आज जो मेरी हैसियत है वह उन्हीं की स़ोह़बते कीमया असर का स़दक़ा है।

तक़रीबन चौबीस साल से मुसलसल मुफ़्ती आ़ज़म क़ुद्दिसा सिर्रहु के उस मनस़ब को बहुस्न व ख़ूबी अन्जाम दे रहे हैं। ताजुश्शरीआ़ के फ़तावा आ़लमे इस्लाम सनद का दर्जा रखते हैं। एक अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ ता दम तह़रीर फ़तावा के रजिस्टरों की तअ़दाद 31 से मुतजावज़ हो गई है।

मरकज़ी दारुलइफ़्ता का क़ियामः

1981 ई.में ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म कुद्दुस सिर्रहु के इन्तिक़ाल के बाद आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी फ़ाज़िल बरेलवी के दौलत

कदा पर(जहाँ ताजुश्शरीआ की मुस्तकिल सुकूनत है) ''मरकज़ी दारुलइफ़्ता'' की बुनियाद डाली,1982 ई.में घर पर ही मसाइल के जवाबात एनायत फ़रमाते थे। बाज़ाबता तौर पर किसी इदारा की बुनियाद नहीं पड़ी थी,मगर उलमा व मशाइख़ और अवामे अहले सुन्नत की ज़रूरत का ख़्याल करते हुये''मरकज़ी दारुलइफ़्ता''के कियाम का फ़ैसला किया।

उस वक़्त हज़रत रोज़ाना दारुल इफ़्ता में जलवा अफ़रोज़ होते, और आप ने मौलाना मुफ़्ती क़ाज़ी अब्दुर्रहीम बस्तवी,मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद नाज़िम अली क़ादरी बाराबंकी,मौलाना मुफ़्ती हबीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी को मुफ़्ती की हैसियत से मरकज़ी दारुलइफ़्ता में मुक़र्रर फ़रमाया। फ़तावा को रजिस्टर में नक़ल की ख़िदमत के लिए मौलाना अब्दुलवहीद ख़ाँ बरेलवी को मामूर किया गया। मौलाना अब्दुल वहीद बरेलवी मरहूम ने 1983 ई से 2005 ई तक फ़तावा की नक़ल का काम किया। आज मरकज़ी दारुलइफ़्ता में मौलाना के हाथ से मुंदरिज फ़तावा के 80रजिस्टर होंगे। मौजूदा वक़्त में मर्कज़ी दारुलइफ़्ता से जारी फ़तावा की हैसियत मुल्क व बैरूने ममालिक में हर्फ़े आख़िर के दर्जा में हैं। जिस मसनदे इफ़्ता की बुनियाद मुजाहिदे जंग आज़ादी मौलाना मुफ़्ती रज़ा अली ख़ाँ बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने रखी थी वह आज तक बारौनक़ है।

अज़दवाजी ज़िन्दगीः

जानशीन मुफ़्ती आज़म का अक़्द मसनून हकीमुल-

इस्लाम मौलाना हसनैन रज़ा बरेलवी अलैहिर्रहमा की दुख़्तरेनेक अख़्तर सालेह सीरत के साथ तय कर दिया गया था। जिस की तक़रीब 3 नवम्बर 1968 ई शअबानुलमुअज़्ज़म 1388 हिजरी बरोज़ इतवार को महल्ला कांकर टोला पुराना शहर बरेली शरीफ़ से हुई जिन से एक साहबज़ादा मख़दूम गिरामी मौलाना अस्जद रज़ा क़ादरी बरेलवी और पाँच साहबज़ादियाँ तवल्लुद हुईं। जिन में सब की शादियाँ हो चुकी हैं।

हज़रत की अहलिया मोहतरमा यानी पीरानी अम्माँ साहिबा जिन को मैं हुज़ूर अम्मी जान कहता हूँ,अल्लाह तआला ने आप को बड़ी खूबियों से नवाज़ा है,आप के अन्दर शफ़क़त व मोहब्बत,उल्फ़त व हमदर्दी,ग़मगुसारी व मुरव्वत और रहनुमाई हद दर्जा पाई जाती हैं। बाहर से आने वाले मेहमानों के तआम व क़ियाम का इन्तिज़ाम करना। घर में रहने वाले ख़ुद्दाम की किफ़ालत और शहर में बहुत से ऐसे ख़ानदान हैं जो निहायत ही ग़रीब व कमज़ोर हैं, उन की हमेशा माली मदद करती हैं। ग़रीब व नादिर ख़्वातीन की रमज़ान शरीफ़ और ईद व बक़री ईद वग़ैरा के ख़ास मवाक़ेअ पर खाना,कपड़ा,कुछ नक़दी के साथ ख़ूब मदद करती हैं। इस के अलावा उन के पास ज़रूरत मन्दों की हमेशा एक क़तार लगी रहती है। नमाज़,रोज़ा,औराद व वज़ाइफ़,नमाज़े तहज्जुद व नवाफ़िल की ख़ास पाबंद हैं। हुज़ूर अम्मी जान की दुआओं में क़बूलियत की बड़ी तासीर पाई जाती है। आप को मौजूदा दौर की हज़रत राबिआ बसरी से ताबीर किया

जाये तो बेजा न होगा। अल्लाह तआला सेहत व सलामती अता फ़रमाये। (आमीन)

अल्लाह तबारक व तआ़ला आप के फ़रज़न्द को सल्फ़े सालिहीन और ख़ानदाने रज़ा का सच्चा नमूना बनाए और साहिबज़ादा गिरामी को वालिदे बुज़ुर्गवार ताजुश्शरीआ़ का सही मअ़नों में जा नशीन और क़ाइम मक़ाम बनाए। (आमीन)

हज व ज़ियारतः

ताजुशशरीआ़ मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी ने पहला हज 1403/4सितम्बर 1983 ई., दूसरा हज 1405/1985 ई. तीसरा हज 1406 हिजरी 1986 ई., में अदा फ़रमाये। और मुतअ़द्दिद बार उ़मरा से भी फ़ैज़याब हुये। अब हर साल रमज़ानुलमुबारक के हसीन अय्याम मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ में गुज़ारते हैं। ज़्यारत रोज़ाए नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के इश्क़ की शमअ़ कभी कभी साल में दो दो बार फ़रोज़ा होती है और ज़्यारते हरमैन से मुस्तफ़ीज़ होते हैं।

नस्बंदी के ख़िलाफ़ फ़तवा :

इंदिरागाँधी साबिक़ वज़ीर–ए–आज़म हिन्द का मिज़ाज आमिराना था,उनके दौरे इक्तिदार में अ़वाम पर ज़ुल्म व जबर किया गया,कांग्रेस पार्टी की सारी कुव्वत का नुक़्त इंतिख़्वाब सिर्फ़ और सिर्फ़ इंदिरागाँधी की ज़ात थी। उन्होंने यह सब बिला शिरकत ग़ैर इक़्तिदार पर अपनी गिरफ़्त क़ाइम रखने के लिए ही किया था। वह सियासी मुख़ालिफ़ीन को बेदर्दी से कुचल देने के लिए

सख़्त से सख़्त इक़दाम करने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करती थीं। इंदिरागाँधी के साथ उन के बेटे संजय गाँधी का ताना शाही नज़रिया पसे पुश्त काम कर रहा था। 1975 ई. में पूरे मुल्क में हंगामी हालात(इमरजेंसी) का एलान कर दिया गया,तमाम शहरियों के बुनियादी हुकूक़ सल्ब कर लिए गये, राक़ीबी को क़ैदे सलासिल में जकड़ कर नज़रे ज़िन्दा (जेल)कर दिया गया,"मीसा"जैसे जाबिर क़ानून को नाफ़िज़ुलअ़मल कर दिया गया। इन तमाम हालात के साथ ही दो से ज़्यादा बच्चे पैदा करने पर सख़्ती से पाबन्दी आ़इद कर दी गई और उन लोगों पर नसबन्दी करना ज़रूरी क़रार दे दिया। पुलीस अ़वाम को जबरन पकड़ पकड़ कर नस्बन्दी करा रही थी,उसी इसना में नसबन्दी के जवाज़ या अ़दमे जवाज़ पर शरई नुक़्ता नज़र जानने और अ़मल करने के लिए दारुलइफ़्ता बरेली से अ़वाम ने रजूअ़ करना शुरू़ कर दिया। दूसरी त़रफ़ देवबंद के दारुलइफ़्ता से क़ारी मुह़म्मद तय्यब मोहतमिम दारुलउ़लूम देवबन्द ने नसबन्दी के जाइज़ होने का फ़तवा दे दिया। मुल्क की हीजानी कैफ़ियत और उम्मते मुस्लिमा में इन्तिशार को देखते हुये जाबिर व ज़ालिम हुक्मराँ के ख़िलाफ़ ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म कुद्दुस सिर्रहु के हुक्म पर ताजुश्शरीआ़ ने नसबन्दी के ह़राम व नाजाइज़ होने का फ़तवा स़ादिर फ़रमाया। इस फ़तवा पर हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म के अ़लावा ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती क़ाज़ी अ़ब्दुर्रहीम बस्तवी, मौलाना मुफ़्ती रियाज़ अहमद सीवानी के

दस्तख़त हैं।

फ़तवा की इशाअ़त के बाद हुकूमत ने इस बात के लिए दबाव डाला कि यह फ़तवा वापस ले लिया जाये मगर हज़रत ने फ़तवा से रुजूअ़ करने से इन्कार कर दिया और नुमाइन्दगाने हुकूमत से साफ़ साफ़ कह दिया गया कि फ़तवा कुरआन व हदीस की रौशनी में लिखा गया है। किसी भी सूरत में वापस नहीं लिया जा सकता।

ख़िलाफ़त व इजाज़त की शानदार तक़रीबः

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरेलवी की ख़िलाफ़त व इजाज़त की तक़रीब,एक हसीन और शानदार तक़रीब थी,दारुलउ़लूम मज़हर–ए–इस्लाम बरेली के सेह रोज़ा इजलास 13/14/ 15/जनवरी 1962 ई/6/7/8 शअ़बानुलमुअ़ज़्ज़म 1381 हिजरी की स़दारत और सरपरस्ती ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्ती –ए–आ़ज़म कुद्दुस सिर्रुहु ने फ़रमाई।

हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म कुद्दुस सिर्रुहु ने मौलाना साजिद अ़ली ख़ाँ बरेलवी मोहतमिम दारुलउ़लूम मज़हर–इस्लाम को हुक्म दिया कि 15/जनवरी 1962 ई./8/ शअ़बान1381 हिजरी को सुबह 8बजे घर पर महफ़िले मीलाद शरीफ़ का इन्ऐक़ाद किया जाये। मीलाद ख़्वाँ हज़रात उ़लमा व मशाइख़ और त़लबा मदारिस व फ़ारिगुत्तहसील होने वाले त़लबा को दअ़वते शिरकत दे दी जाये। शदीद सर्दी के मोसम में कई हज़ार लोग मीलाद शरीफ़ में तशरीफ़ लाये और ताजुश्शरीआ़

अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी को बुलवाया,अपने क़रीब बिठाया,दोनों हाथ अपने हाथों में ले कर जमीअ–ए–सलासलेआ़लिया क़ादरिया सहोरवर्दिया, नक़्शबन्दिया चिश्तिया और जमीअ़े सलासिले अहादीस मुसलसल बिलअव्वलियत की इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया। तमाम औराद व वज़ाइफ़,आमाल व अशग़ाल,दलाइलुलख़ैरात,हज़बुलबहर,तअ़वीज़ात वग़ैरा वग़ैरा की इजाज़त मरहम्मत फ़रमाई।

इस मौक़े पर मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हबीबुर्रहमान अ़ब्बासी रईस आ़ज़म उड़ीसा,बुरहाने मिल्लत मुफ़्ती बुरहानुलहक़ जबल पूरी,मौलाना ख़लीलुर्रहमान मुहद्दिसे अमरोहवी, अ़ल्लामा मुश्ताक़ अहमद निज़ामी इलाहाबाद,मुफ़्ती नज़ीरुलअकरम नईमी मुरादाबादी मौलाना मुहम्मद हुसैन संभली,मौलाना अनवार अहमद शाहजहाँपुरी,मौलाना क़ाज़ी शमसुद्दीन जाफरी जौनपुरी,मौलाना कमाल अहमद तुलशीपुरी,मौलाना शअ़बान अ़ली हुब्बानी गोन्डवी,सूफ़ी अ़ज़ीज़ अहमद बरेलवी वग़ैरा जैसे जय्यद उ़लमा मशाइख़ मौजूद थे। सभी हज़रात ने उठ उठ कर यके बाद दीगरे ताजुश्शरीआ़ को मुबारकबादियाँ दीं।

(माहनामा नूरी किरन बरेली स:40,फ़रवरी1962ई/1381हिजरी)

जानशीन–ए–मुफ़्ती आ़ज़म को बचपन ही में हुज़ूर मुफ़्ती आ़ज़म कुद्दिसा सिर्रहु ने बैअ़त फ़रमा लिया था और बीस साल के बाद ख़ुद ही हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म ने मीलाद शरीफ़ की महफ़िल में ख़िलाफ़त व इजाज़त से

सरफ़राज़ फ़रमाया। जब हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म ने 15 जनवरी 1962 हिजरी 1381 हिजरी को ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई उस वक़्त शमसुलउ़लमा मौलाना क़ाज़ी शमसुद्दीन अहमद रज़वी जअ़्फ़री अ़लैहिर्रहमा, बुरहाने मिल्लत मुफ़्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी अ़लैहिर्रहमा भी तशरीफ़ फ़रमा थे। मुफ़्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी ने फ़रमाया कि हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म से मेरी गुफ़्तगु इस बारे में हुई है, कि हुज़ूर मुफ़्ती आज़म ने फ़रमाया था कि जानशीन अपने वक़्त पर वही होगा जिसे होना है। स़दरूश्शरीअ़ा मौलाना अमजद अ़ली रज़वी आ़ज़मी अ़लैहिर्रहमा से दरयाफ़्त किया था कि हुज़ूर आप का जानशीन कौन होगा ? तो आ़ला हज़रत ने हुज्जतुल इस्लाम अ़लैहिर्रहमा के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया बड़े मौलाना, मैंने अ़र्ज़ किया। उन के बाद फ़रमाया मुस़तफ़ा रज़ा (हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म)अ़र्ज़ किया उन के बाद फ़रमाया जीलानी जब आ़ला हज़रत ने नबीरा–ए–आ़ला हज़रत मुफ़स्सिरे आ़ज़म हिन्द अ़लैहिर्रहमा को मुरीद किया तो शजरा पर तहरीर फ़रमाया,"ख़लीफ़ा इन्शाअल्लाह बशर्ते इल्म व अ़मल"यह रजिस्टर मुरीदीन में तहरीर फ़रमाया। हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आ़ज़म कुद्दिसा सिर्रहु ने अपने जानशीन के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि इस(अल्लामा मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी) लड़के से बहुत उम्मीदें वाबस्ता हैं"।

हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दिसा सिर्रहु ने आख़री ज़माने में एक तहरीर जानशीने–मुफ़्ती–ए–आ़ज़म को एनायत फ़रमाई और उस में अपना "जानशीन" और

"क़ाइम मक़ाम" मुक़र्रर किया,

14/15/नवम्बर 1984 ई को मारहरा मुत्तहरा में उर्स क़ासमी की तक़रीब में अहसनुलउ़लमा मौलाना मुफ़्ती सैयद हसन मियाँ बरकाती सज्जादा नशीन ख़ानक़ाह बरकातिया मारहरा ने जानशीन मुफ्ती आ़ज़म का इस्तिक़बाल "क़ाइम मक़ाम मुफ़्ती–ए–आ़ज़म अ़ल्लामा अज़हरी ज़िन्दाबाद" के नअ़रा से किया और मजमअ कसीर में उ़लमा व मशाइख़ और फ़ुज़ला व दानिशवरों की मौजूदगी में जानशीन मुफ़्ती–ए–आ़ज़म को यह कह कर।

"फ़क़ीरे आस्ताना आ़लिया क़ादरिया बरकातिया नूरिया के सज्जादा की हैसियत से क़ाइम मक़ाम मुफ़्ती आ़ज़म अ़ल्लामा अख़तर रज़ा ख़ाँ साहिब को सिलसिला क़ादरिया बरकातिया नूरिया की तमाम ख़िलाफ़त व इजाज़त से माज़ून व मजाज़ करता हूँ। पूरा मजमा सुन ले, तमाम बरकाती भाई सुन लो, और यह उ़लमा–ए–किराम (जो उ़र्स में मौजूद हैं)इस बात के गवाह रहें"।

बअ़दाहु अहसनुलउ़लमा मौलाना सैयद हसन मिया बरकाती मद्दज़ुल्लाहु ने जानशीने मुफ़्ती–ए–आ़ज़म की दस्तारबन्दी की और नज़र भी पेश की।

सैयदुलउ़लमा मौलाना अश्शाह सैयद आले मुसतफ़ा बरकाती मारहरवी अ़लैहिर्रहमा ने जमीअ़े सलासिल की इजाज़त व ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई और ख़लीफ़ा–ए–इमाम अहमद रज़ा बुरहानेमिल्लत हज़रत मुफ़्ती बुरहानुलहक़ रज़वी जबलपुरी अ़लैहिर्रहमा ने भी तमाम

सलासिल और हदीस शरीफ़ की ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

वालिद माजिद मुफ़िस्सरे आज़म हिन्द ने अपने फ़रज़न्द अरजमन्द को क़बल फ़रागत इल्मे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा का जानशीन बनाया और एक तहरीर भी एनायत फ़रमाई।

रैहाने मिल्लत मौलाना मुहम्मद रैहान रज़ा बरेलवी मोहतमिम मन्ज़र इस्लाम अपनी इरादत में शाइअ होने वाले "माहनामा आला हज़रत" में बउनवान "कवाइफ़ दारूलउलूम" तहरीर फ़रमाते हैं। " वाज़ेह हो कि यह तहरीर उस ज़माने की है जब मफ़स्सिरे आज़म हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा बरेलवी कुद्दिसा सिर्रहु की तबीअत बहुत ज़्यादा अलील थी, और सारे लोगों को यह अंदेशा था कि अब मौलाना इब्राहीम रज़ा जीलानी बरेलवी ज़ाहिरी दुनिया से रुख़सत हो जायेंगे।

बवजहे अलालत यह तवक़्क़ो नहीं कि अब ज़्यादा ज़िन्दगी हो,बिना बरीं ज़रूरत थी कि दूसरा क़ाइम मक़ाम हो। लिहाज़ा अख़्तर रज़ा सल्लमाहु को क़ाइम मक़ाम व जानशीने आला हज़रत बना दिया गया,जानशीन का अमामा बाँधा गया, और इबा पहनाई गई। यह दस्तार और इबा और तलबा की दस्तार व उबा अहले बनारस की तरफ़ से हुई।"

(माहनामा आला हज़रत बरेली स:32,दिसम्बर 1962ई 1382हिजरी)

शेअर व शाइरी और नमूना-ए-कलाम

जानशीने मुफ़्ती-ए-आज़म ने तीन ज़बानों में शेअर व शाइरी में तबअ आजमाई की। उसकी यहाँ पर क़द्रे

वज़ाहत की जाती है। आप को ज़माना–ए– तालिबेइल्मी में ही शेअ़र व शाइरी का शग़फ़ हो गया था। मगर ज़्यादा रूजहान उसकी तरफ़ न था। इब्तिदा में शाइरी की इस़लाह अपने असातिज़ा और वालिद माजिद से लेते रहे, ज़माना–ए–तालिबेइल्मी की नअ़तें,नज़्में "माहनामा आला हज़रत" और माहनामा "नूरी किरन" में छपती रहीं। आस्ताना रज़विया पर मुन्अ़किद होने वाले "मुशाइरे" में भरपूर हिस्सा लेते और आला कामयाबी होती,ताजुश्शरीआ़ और आप के बरादर अक्बर मौलाना रेहान रज़ा ख़ाँ रहमानी बरेलवी की शाइरी का मवाज़ना भी होता। सुनने वालों का कहना है कि हर दो शख़्स के कलाम में एक अ़लाहिदा ही चाशनी होती, आप को शेअ़रगोई का शौक़ ज़माना–ए–तालिबे इल्मी से ही था। शहर में मुन्अ़किद होने वाले मुशाइरों में आप को मदऊ किया जाता। हाफ़िज़ इन्आ़मुल्लाह ख़ाँ तस्नीम हामिदी और जनाब उमीद रज़वी बरेलवी को वक़्तन फ़ोक़्तन अपने अशआ़र दिखालेते थे। उन्नीस साल की उ़मर की एक नअ़त पाक के चन्द शेअ़र मुलाहिज़ा हों।

इस तरफ़ भी एक नज़र महर दरख़शान जमाल
हम भी रखते हैं बुहत मुद्दत से अरमान जमाल
इक इशारे से किया शक़ माहे ताबाँ आप ने
मरहबा सद मरहबा सल्ले अ़ला शाने जमाल
फ़र्श आँखों को बिछाओ रह गुज़र में आशिक़ों
हर तरफ़ देखेंगे ऐसे जलवा–ए–शान जमाल
मर के मिट्टी में मिले वह बा खुदा बिलकुल ग़लत

मिस्ल साबिक़ अब भी हैं मरक़द में सुलतान जमाल
हासिदाने मुस्तफ़ा को दीजिए अख़तर जवाब
दर हक़ीक़त मुस्तफ़ा प्यारे हैं सुलतान जमाल

मार्च 1987 ई.1407 हिजरी को एक हादसा में चोट आ जाने के बाद जानशीन मुफ़्ती–ए–आज़म को कई रातें ठीक से नीन्द न आई। शब 10 मार्च 1987 ई को रात भर न सो सके, और उसी इज़्तिराब के आलम में उन्होंने मन्दर्जा ज़ैल नअ़त अक़दस कही।

चन्द अशआ़र दर्ज ज़ैल हैं :

तलातुम है यह कैसा आँसुओं का दीदा–ए–तर में
यह कैसी मौजें आई हैं तमन्ना के समन्दर में
तजस्सुस करवटे क्यों ले रहा है क़ल्बे मुज़तर में
मदीना सामने है बस अभी पहुंचा में दम भर में
न रखा मुझ को तैबा के क़फ़स में इस सितमगर ने
सितम कैसा हुआ बुलबुल पे यह क़ैद सितमगर में
सितम से अपने मिट जाओगे तुम ख़ुद ऐ सितमगारो
सुनो हम कह रहे हैं बे ख़तर दौरे सितमगर में
नबाते जलवा गाह नाज़ मेरे दीदा व दिल को
कभी रहते वह इस घर में कभी रहते वह उस घर में
मदीने से रहें ख़ुद दूर उस को रोकने वाले
मदीने में ख़ुद अख़्तर है मदीना चशमे अख़तर में

जब जानशीने मुफ़्ती–ए–आज़म को गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत करे बग़ैर हिन्दुस्तान वापस भेजदिया गया तो हुकूमत सऊदिया के ज़ुल्म व बरबरियत से मुतास्सिर हो कर यह नअ़त पाक कही,इस मौक़ा पर जब 17

फ़रवरी 1987 ई को झरया (बिहार) के एक जलसा में एक शाइर ने इसी ज़मीन में एक नअ़त पढ़ी थी। आप ने बरजस्ता स्टेज पर ही सात शेअ़र कहे और बक़िया अशआ़र ट्रेन में कहे। चौदह अशआ़र में से चन्द मुलाहिज़ा हों।

दागे़ फ़ुरक़ते तैबा क़ल्बे मुज़महिल जाता
काश गुम्बदे ख़ज़रा देखने को मिल जाता
मेरा दम निकल जाता उन के आस्ताने पर
उन के आस्ताने की खाक में मैं मिल जाता
मौत लेके आजाती ज़िन्दगी मदीने में
मौत से गले मिल कर ज़िन्दगी में मिल जाता
दिल पे जब किरन पड़ती उन के सब्ज़ गुम्बद की
उसकी सब्ज़ रंगत से बाग़ बनके खिल जाता
फ़ुरक़ते मदीना ने वह दीए मुझे स़दमे
कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता
दरपे दिल झुका होता इज़्न पाके फिर बढ़ता
हर गुनाह याद आता दिल ख़जिल ख़जिल जाता
मेरे दिल में बस जाता जलवाज़ार तैबा का
दागे़ फ़ुरक़त तैबा फूल बन के खिल जाता
उनके दरपे अख़्तर की हसरतें हुई पूरी
साइले दर अक़दस कैसे मन्फ़ अ़िल जाता

तसा़नीफ़ व तराजीमः

फ़क़ीहे इस्लाम मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा अज़हरी बरेलवी ने अपनी दीगर मस़रूफ़ियात के बावजूद तस्नीफ़ व तालीफ़ का सिलसिला जारी रखा। कसीर तअ़दाद में प्रोग्रामों और तब्लीग़ी असफ़ार की वजह से यह काम

कम हो पाता है। मगर हज़रत की आदते मुबारका है कि सफ़र व हज़र में मज़ामीन,फ़तावा,तस्नीफ़,व तालीफ़ की मसरूफ़ियात में इन्हेमाक में कमी नहीं आने देते हैं। हज़रत का मामूल है कि रोज़ाना सुबह व शाम अरबी इबारात का तर्जमा उर्दू ज़बान में और उर्दू ज़बान का तर्जमा अरबी में मरकज़ी दारुलइफ़ता के मुफ़्तियाने किराम या जामिआतुर्रज़ा के आसातिज़ा को इमला करा देते हैं।

फ़तावा जो दरूलइफ़्ता में मुफ़्तियाने किराम हल नहीं कर पाते हैं, उनको जमा कर दिया जाता है और जब बाहर तब्लीग़ी दौरे पर तशरीफ़ ले जाते, तो वह मसाइल साथ होते,ट्रेन वग़ैरा में सवालात के जवाबात क़लम बन्द करते। आज ताजुश्शरीआ दुनिया–ए–इस्लाम के लिए मरजा–ए–उलमा व फुक़हा बने हुये हैं।

इमामत व ख़िताबत :

हज़रत ताजुश्शरीआ ज़माना तालिबे इल्मी से ही इमामत के फ़राइज़ अन्जाम देने लगे थे। वालिद माजिद मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द मौलाना इब्राहीम रज़ा ख़ाँ जीलानी बरेलवी ने बाज़ाब्ता तौर पर "रज़ा मस्जिद" की इमामत व ख़िताबत का मन्सबे जलीला के लिए तहरीरी वसीयत नामा जारी किया था। हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म कुद्दुस सिर्रहु का मामूल था कि जब ताजुश्शरीआ हमराह होते तो आप को ही नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फ़रमाते। एक अर्से दराज़ से नमाज़ ईदैन बरेली की ईदगाह में इमामत के फ़राइज़ अन्जाम दे रहे हैं। मन्सब फ़र्ज़ शनासी और पुरवक़ार तरीक़े से मुतअल्लिक़ा फ़राइज़ अन्जाम देते हैं।

जब आप कुरआन शरीफ़ की तिलावत करते हैं,या खुत्बा पढ़ते हैं तो लेहने दाऊदी की याद कानों में बाज़गश्त करने लगती हैं। आप की क़िरअत में अ़रबी मिस्री लब व लहजा पाया जाता है।

बे मिसाल हुस्ने ख़त् :

हज़रत ताजुश्शरीआ़ फ़न्ने ख़िताती में महारत रखते हैं। इसलिए आप के मकातीब,मज़ामीन व मक़ालात और फ़तावा हुस्ने तह़रीर के लिहाज़ से बे मिसाल हैं। उन तह़रीरात को देखते ही दिल बाग़ बाग़ हो जाता है,इल्म व फ़ज़्ल के साथ साथ यह ख़ूबी बहुत कम उ़लमा व मुफ्तियाने एज़ाम में पाई जाती है। ह़ज़रत का त़र्ज़ ख़ित़ाती अ़हद व ज़मान के ऐतिबार से बदलता रहा है मगर हर ज़माना की तह़रीरें अपने आप में आ़ला नमूना और बे मिसाल ख़ित़ात़ी का आइना दार हैं। ऐसा मालूम होता है कि मोतियों की लड़ियाँ पिरोई हुई हैं। दर ह़क़ीक़त हुस्ने तह़रीर से खुद शख़्सियत का वह जमाले मख़्फ़ी बेहिजाब हो जाता है जिस तक रसाई बहुत मुश्किल है। ह़ज़रत के मकातिब के हुस्न ज़ाहिरी से हुस्न मअ़नवी आशकार होता है। राक़िमुस्सुतूर के पास ह़ज़रत की तह़रीरात अ़हद ब अह़द मौजूद हैं। ज़माना–ए त़ालिबे इल्मी,बादे फ़राग़त,अह़दे दर्स व तदरीस,अहदे दारुलइफ़्ता, अहदे जानशीनी, ज़माना–ए–शबाब और मौजूदा वक़्त की तह़रीरात मह़फ़ूज़ हैं। इस से हुस्न तह़रीर और फ़न्ने ख़ित़ात़ी का बाख़ूबी अन्दाज़ा होता है। और ह़ज़रत की एक ख़ुसूसियत है कि फ़ुलस्केप के काग़ज़ पर बग़ैर नीचे

कुछ रखे लिखते जाते हैं और मजाल है कि कोई लाइन ज़रा सी भी टेढ़ी हो जाये।

उम्मते मुस्लिमा की फिक्र मन्दी :

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म जहाँ उम्मते मुस्लिमा की मज़हबी रहनुमाई फ़रमा रहे हैं, वहीं क़ौमी व मिल्ली मसाइल में भी रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम दे रहे हैं। आ़लमे इस्लाम को दरपेश मसाइल के हल और उ़लमा–ए–अहले सुन्नत के इन्दिया के इज़हार और बैनलअक़वामी ताक़तों पर दबाव बनाने के लिए आप ने "उर्से रज़वी" के हसीन मौक़ा पर 22/जुलाई 1995 ई. में मर्कज़ी दारुलइफ़्ता सौदागरान में काइदीने मिल्लत, उ़लमा, मशाइख़ और अइम्मा मसाजिद का इजलास बुलाया जिस में मुल्क व बैरूने मुल्क में उम्मते मुस्लिमा के मुख़्तलिफ़ पेचीदा मसाइल पर बहस व मुबाहिसा के बाद क़रारदाद पास की गई। उन क़रार दादों में, यकसाँ सीवल कोड, के नफ़ाज़ की मुख़ालिफ़त, तंज़ीमे अइम्माए मसाजिद के ज़रीआ़ औक़ाफ़ पर ग़ासिबाना क़ब्ज़ा, उ़लूमे दीनी और दुनियावी की त़रफ़ मुसलमानों की ख़ुसूसी तवज्जह मरकूज़ करने, आपसी इन्तिशार व इख़्तिलाफ़ को मैदाने जंग व जिदाल के बजाय अपने काइदीन की बारगाह में तवज्जो त़लबी, चेचेनया और फ़िलिस्तीनी मुसलमानों की हिमायत, टाडा के तहत गिरफ़्तार मुसलमानों की आज़ादी वग़ैरा वग़ैरा उमूर पर हुकूमते हिन्द से मुत़ालबात किए गये।

इस मुश्तरका अख़्बारी एलानिया पर हजरत के

अ़लावा अ़ल्लामा ज़ियाउलमुस्तफ़ा क़ादरी,मौलाना अ़ब्दुलमुबीन नोअ़मानी,मौलाना अ़ब्दुलमुस्तफ़ा रुदोलवी, अलहाज मौलाना मुहम्मद सईद नूरी,मौलाना रियाज़ हैदर हनफ़ी, मौलाना अनवार अहमद क़ादरी,मौलाना आरज़ू अशरफ़ी,अल्लामा मुहम्मद हुसैनी अशरफ़ी,मौलाना मुहम्मद हुसैन अबुलहक़्क़ानी,मुफ़्ती मुहम्मद मतीउ़र्रहमान मुज़तर रज़वी,मौलाना बशीरुलक़ादरी वग़ैरा के दस्तख़त़ हैं।

तहफ़्फ़ुज़े मुस्लिम पर्सनल लॉ की तह़रीक :

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म अ़ल्लामा मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बरेलवी उम्मत मुस्लिमा की रहनुमाई और कियादत में हमेशा पेश पेश रहे। एक ज़माना वह था जब शाह बानो मसअला को ले कर पूरे मुल्क में मुस्लिम पर्सनल लॉ पर हमले किए जा रहे थे, सुप्रीम कोर्ट ने शरीअ़ते इस्लामिया के मन्शा व मबदा के ख़िलाफ़ फ़ैस़ला स़ादिर कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसला के ख़िलाफ़ उलमा अहले सुन्नत ने चैलेंज किया और पूरे मुल्क मे एहतिजाजी मज़ाहिरा व इजलास के ज़रीआ़ अपने जज़बात व एहसासात को हुकूमते हिन्द तक पहुँचाया। अ़वामी सत़ह पर दबाव इस क़द्र बढ़ गया था कि हुकूमते हिन्द को मजबूरन पार्लियामेंट के ज़रीआ़ क़ानून बना कर सुप्रीम कोर्ट के फ़ैस़ला को कलअ़दम क़रार देना पड़ा।(तहफ़्फ़ुजे मुस्लिम पर्सनल लॉ अज मौलाना यासीन अख़तर मिस्बाही मत़बूआ़ दारुलक़लम देहली)

हुकूमती ओ़हदा से इस्तिग़ना :

उत्तर प्रदेश के साबिक़ वज़ीर आ़ला नारायन दत

तैवारी (गवर्नर आंध्रा प्रदेश) ख़ानदाने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा क़ादरी फ़ाज़िले बरेलवी से गहरा तअ़ल्लुक़ रखते हैं। उन्होंने अपने अ़हद में हज़रत के बरादरे अकबर मौलाना रेहान रज़ा ख़ाँ रहमानी मियाँ को एम–एल–सी–नामज़द किया था। उनकी मुक़र्ररा मीआ़द ख़त्म हो जाने के बाद जानशीन–ए–मुफ़्ती–ए–आज़म के लिए कोशा रहे मगर हज़रत ने मना फ़रमा दिया। 1989 ई में जनाब उस्मान आ़रिफ़ नकशबंदी (गवर्नर उत्तर प्रदेश) आप के दरे दौलत पर हाज़िर हुये और एम–एल–सी–नामज़द करने की हुकूमते उत्तर प्रदेश की मंशा ज़ाहिर की मगर हज़रत ने ओ़हदा क़बूल करने से मना फ़रमा दिया। उत्तर प्रदेश के गवर्नर उस्मान आ़रिफ़ ने आप से बहुत मिन्नत व समाजत की मगर आप राज़ी न हुये। उस्मान आ़रिफ़ साहब आप से क़ल्बी लगावो और अ़क़ीदत रखते थे। औलिया–ए–किराम के आस्तानों पर हाज़री देना और मशाइख़ से दुआ़यें लेना उन का मामूल था। हज़रत की बेपनाह इज़्ज़त और अदब व एहतिराम करते थे। मगर कुरबान जाइये इस अल्लाह के वली पर कि दुनिया को ग़ालिब होने न दिया और हुकूमती ओ़हदा से हमेशा दूर रहे। क्या आज के तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में ऐसा मुम्किन है?

मुरादाबाद के मुक़द्दमा में शानदार कामयाबी :

अल्लाह तआ़ला ने जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ्ती–ए–आ़ज़म अ़ल्लामा अख़तर रज़ा अज़हरी मद्दजुल्लाहु को वह मक़बूलियत अ़ता फ़रमाई है कि जिस इलाक़े में पहुँच

जायें वह इलाक़ा का ऐलाक़ा आप का गिरवीदा हो जाता है। मुफ़्ती सय्यद शाहिद अ़ली रज़वी रामपुरी के बक़ौल :

जहाँ दूसरे पीराने एज़ाम सालिहासाल लोगों को दाख़िले सिलसिला करने के लिए मेहनत करते हैं,तरग़ीब दिलाते हैं,मगर हज़रत सिर्फ़ उस जगह एक घन्टा के लिए तशरीफ़ ले जाये तो वह लोग आप के नूरानी जलवा ज़ेबा को देखते ही मुरीद होने के लिए बिला तरग़ीब बे ताबाना बेक़रार हो जाते हैं। यह ख़ुदादाद मक़बूलियत आप को ही मयस्सर है।

इसी मक़बूलियत व शोहरत को देखते हुये हासिदीन से न रहा गया,उन से कुछ न बन पड़ा तो हज़रत के ख़िलाफ़ एक मुक़द्दमा दाइर कर दिया। पहले थाना नाग फ़नी मुरादाबाद में एफ़–आई–आर–दर्ज कराने के लिए इंस्पेक्टर से रजूअ़ किया। जब उस ने इस फ़र्ज़ी रिपोर्ट पर मुक़द्दमा क़ाइम करने से मना कर दिया तो उस हासिद ने 20/नोमब्र 1996 ई. को मुरादाबाद कोर्ट में इस्तिग़ासा दाइर किया। जिस की बुनियाद पर थाना में एफ–आई– आर–दर्ज हो गई। जब बरेली इत्तिलाअ़ पहुँची तो साहबज़ादा गिरामी मौलाना अ़सजद रज़ा ख़ाँ क़ादरी,मुफ्ती अ़ब्दुलमन्नान कलीमी मुरादाबादी, राक़िमुस्सुतूर और बरादरम मुजीब रज़ा ख़ाँ मरहूम इब्न हज़रत मौलाना हबीब रज़ा ख़ाँ बरेलवी, आ़ली जनाब अफ़रोज़ मियाँ मुरादाबाद पहुँचे। कोर्ट में जानकारी हासिल की,बादोहु अपना जवाब दाख़िल किया गया। हमारे वकील के जवाबात सुन कर फ़ाज़िल जज हैरान

रह गया। जज ने 22 फ़रवरी1999ई को हज़रत के हक़ में 8सफ़हात पर मुश्तमिल शानदार फ़ैसला सादिर किया। यह बात याद रहे कि बावजूद मुख़ालिफ़ की हज़ार कोशिशों के हज़रत कभी भी कोर्ट तशरीफ़ नहीं ले गये। मुक़द्दमा की पेरौकारी राक़िमुस्सुतूर ने की,हर तारीख़ पर बरेली से मुरादाबाद जाता था अलहम्दु लिल्लाह हक़ की फ़त्ह व नुसरत हुई और बातिल शिकस्त व रीख़्त हुआ।

हालते हाज़िरा के शरई तक़ाज़े:

एक मुफ़्ती के लिए ज़रूरी है कि ज़माना के हालात और कवाइफ़ पर नज़र रखते हुये शरई और आईली क़ानूनी रहनुमाई का फ़रीज़ा अन्जाम दे। 1995 ई में हुकूमते हिन्द के शोअ़बा"इलेकशन कमीशन"ने तमाम बाशिन्दगाने मुल्क के लिए"शनाख़्ती कार्ड"का रखना और इस्तेमाल करना ज़रूरी क़रार दे दिया था। इस "शनाख़्ती कार्ड"में नाम वलदियत और पूरा पता व उ़मर दर्ज होती है। साथ ही फ़ोटो चस्पाँ होता है। फ़ोटो हराम होने की वजह से आस्ताना आ़लिया रज़विया के मरकज़ी दारुलइफ़्ता में"शनाख़्ती कार्ड"बनवाने या न बनवाने के लिए सवालात का अंबार लग गया। दूसरी त़रफ़ अलेकशन कमीशन ने भी सख़्ती करना शुरू कर दी कि हर काम में मसलन बैंक अकाउन्ट,ख़रीद व फ़रोख़्त, मुलाज़िमत तालीम व तदरीस और वोटिंग वग़ैरा में इसी शनाख़्ती कार्ड के इस्तेमाल को लाज़िमी क़रार दिया गया है। इसी दौरान अलजामिअ़तुल अशरफ़िया मुबारकपुर में "मज्लिसे शरई"की मीटिंग का ऐहतिमाम हुआ। हज़रत जानशीनए मुफ़्तीए आज़म ने "मज्लिसे शरई" की सदारत

फ़रमाई। रईसुत्तहरीर अ़ल्लामा अरशदुलक़ादरी की तजवीज़ पर आप ने"शनाख़्ती कार्ड"बनवाने कीं इन अल्फ़ाज़ के साथ इजाज़त दी कि"इस सूरत में त़लब के वक़्त ज़रूरते मलजिया या ह़ाजते शदीदा मुतह़क़्क़क़ होगी। लिहाज़ा ख़ास़ शनाख़्ती कार्ड के लिए तस्वीर खिचवाने की इजाज़त होगी"(फ़रवरी 1995 ई मज्लिस शरई मुबारकपुर)

अ़वाम की शदीद तरीन ज़रूरत के तह़त ह़ज़रत ने मशरूत़ इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई, तो एक त़ब्क़ा में नुक्ता-चीनी शुरू हुई, जब इस की ख़बर ह़ज़रत को हुई तो आप ने एक वज़ाह़ती बयान जारी फ़रमाकर बह़स को बन्द कर दिया। लिखते हैं :

ऐसे नये मसाइल जो फ़िलवाक़े फ़रइया अ़मलिया हों,और उन से मुतअ़ल्लिक़ कोई स़रीह़ जुज़इया न मिल सके तो हर आ़लम नहीं बल्कि माहिर व तजर्बाकार मुफ़्ती की त़रफ़ रजूअ़ करना चाहिए। और उस मुफ़्ती पर लाज़िम है कि उस़ूले शरई के पेशे नज़र इस का हुक्म स़ादिर फ़रमाये। उस़ूले शरअ़ से हट कर फ़तावा देना हर गिज़ जाइज़ नहीं। अगर उस ने जिसे दलील क़रार दिया और फिर वाज़ेह हुआ कि यह दलील,दलीले शरई नहीं तो फ़ौरन उस पर रजूअ़ लाज़िम है और ह़क़ का ऐलान करना चाहिए। किसी ह़राम शय के मुबाह़ होने का फ़तवा उस वक़्त दिया जायेगा जबकि वहाँ यह ज़ाब्त़ा स़ादिक़ आये"अज़्ज़रूरात तन्बीहुलमहज़ूरात"और मुफ़्ती को तयक़्क़ुन हो जाये कि इस ज़रूरते शरइया के मुआ़रिज़ कोई दूसरा क़ाइदा शरइया नहीं है। (क़ल्मी फ़तवा)

अरब दुनिया में मसलके आ़ला हज़रत की इशाअ़तः

जानशीन–ए–हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म ने हिन्द व पाक के अ़लावा दरजनों अ़रब ममालिक का तब्लीग़ी सफ़र फ़रमाया,और अब भी यह सिलसिला जारी है,आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी फ़ाज़िले बरेलवी के मसलक की तरवीज व इशाअ़त के लिए आप अंथक जद व जिहद फ़रमा रहे हैं। उस की एक अ़ज़ीम मिसाल यह है कि रमज़ानुलमुबारक 1404 हिजरी"रोज़नामा अलहुदा अबूज़हबी"ने ख़ुसूसी नम्बर शाइ किया। जिस में यह लिखा कि"बरेलवियत एक नया फ़ितना है,नया मज़हब है" ताजुश्शरीअ़ को यह पढ़ कर शदीद बेचैनी हुई कि अ़रब की दुनिया में आ़ला ह़ज़रत क़ुद्दुस सिर्रहु को बदनाम किया जा रहा है। आप ने"मुत्तह़िदा अ़रब इमारात" से शाइ होने वाले(11)ग्यारह मुल्की अख़्बारात से रजूअ़ किया और "रोज़नामा अलहुदा"का जवाब अ़रबी में तरतीब दे कर शाई कराया। और बाज़ाब्ता त़ौर पर बर्रे स़ग़ीर में एक मुहिम चलाई ताकि उन अख़बारात पर दबाव बने और आ़ला ह़ज़रत कुद्दुस सिर्रहु के मसलक को बदनाम करने वालों की साज़िश नाकाम हो जाये। ह़ज़रत ने हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और बंगलादेश में दस्तख़ती मुहिम की अपील भी जारी की।

हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म के नमाज़े जनाज़ा की इमामत :

ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ जब दौलत कदे पर जलवा अफ़रोज़ होते हैं तो अहले शहर का यह मामूल रहता है कि किसी ने वसीयत की है कि अगर मेरा इन्तिक़ाल हो जाये तो ह़ज़रत से नमाज़े जनाज़ा पढ़वाई जाये वग़ैरा वग़ैरा। आप बा हुस्ने त़बीब व ख़ातिराइन लोगों की दअ़वत को क़बूल फ़रमाते हैं,कहीं नमाज़ जनाज़ा की इमामत के लिए तशरीफ़ ले जा रहे हैं तो किसी की

दुकान व मार्केट का इफ़्तेताह करने जा रहे हैं, फिर कहीं किसी के घर में महफ़िले मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम में शिरकत करने जा रहे हैं। कहीं मुरीदीन की दअ़वत पर बैअ़त के लिए जलसे को रौनक़ बख़्श रहे हैं।

हुज़ूर मुफ़्ती–ए आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ बरेलवी कुद्दिसा का विसाल 14मुहर्रमुलहराम 1402/12 नवम्बर 1981 ई को शब में हुआ। हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म ने अपनी नमाज़े जनाज़ा की इमामत के लिए किसी भी "सय्यद" के लिए वसीयत नहीं फ़रमाई थी मख़दूमा साहिबा छोबी (अहलिया मोहतरमा हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म)ने फ़रमाया "कि नमाज़े जनाज़ा मौलाना अख़्तर रज़ा साहिब पढ़ायें,अगर वह नहीं पढ़ाते हैं तो फिर मौलाना तहसीन मियाँ पढ़ायें।"हज़रत मख़दूमा साहिबा अ़लैहिर्रमा के हुक्म के मुताबिक़ हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हिन्द कुद्दिसा सिर्रहु की नमाज़े जनाज़ा ताजुश्शरीआ़ अ़ल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी ने पढ़ाई। मगर चन्द मुत्तेबईन ने यह मशहूर कराया कि नमाज़े जनाज़ा की इमामत हज़रत मौलाना मुख़्तार अशरफ़ कछौछवी ने पढ़ाई,जो सरासर ग़लत फ़हमी पर मब्नी है। ताजुश्शरीआ़ ने अपने एक मक़ाला में खुद इस मसअला की वज़ाहत की हैं।

"जद्दा मोहतरमा हज़रत छोबी साहिबा ने हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म की नमाज़े जनाज़ा की इमामत के लिए दो अफ़राद को नामज़द किया था,एक मैं फ़क़ीर,दूसरे सदरूलउलमा हज़रत मुफ़्ती तहसीन रज़ा ख़ाँ साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि और इस सिलसिला में खुद हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म नव्वरा हुल्लाह मरक़दा हु ने किसी के लिए कोई वसीयत न फ़रमाई थी,मुझे तज़करा को छेड़ने का अफ़सोस है,मगर यह इसलिए ज़रूरी है कि बाज़

हलके यह ख़बर उड़ा रहे हैं कि हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म अ़लैहिर्रहमा ने अपनी नमाज़े जनाज़ा के लिए किसी सय्यद को नामज़द फ़रमाया था।"

यह ग़लत़ ख़बर इतनी मशहूर की गई कि हुज़ूर मुफ़्ती आ़ज़म के तज़करा नवीसों ने भी इसी को बार बार दुहराया जब कि राक़िमुस्सुतूर ने तक़रीबन दस साल क़ब्ल अपनी एक किताब बनाम "हुज़ूर मुफ़्तीए आ़ज़म के सियासी अफ़कार" में ह़ज़रत की इमामत के तअ़ल्लुक़ से लिखा था,इस पर बाज़ ने ऐअ़तिराज़ किया,बादहु ह़ज़रत की तफ़्स़ीली तह़रीर आ जाने से अहले इल्म और अ़वाम पर ह़क़ीक़ते ह़ाल का इंकिशाफ़ हो गया। राक़िमुस्सुतूर (शहाबुद्दीन) की तज़करा नवेसियों से गुज़ारिश है कि वह तह़क़ीक़ी बुनियादों और दरायात की कसौटी पर परखी गई रिवायत को ही स़फ़हे क़िरत़ास पर नक़ल करें। इस से ग़लतुल अ़वाम के रास्ते पर चलने से बचा जा सकता है।

जब ह़ज़रत मख़्दूमा मोहतरमा स़ाहिबा का इन्तिक़ाल हुआ तो आप ने क़ब्ल विस़ाल वस़ीयत फ़रमा दी थी कि मेरी नमाज़े जनाज़ा मौलवी अख़्तर मियाँ सल्लमहु पढ़ायेंगे। 10मार्च 1985 ई को बाद नमाज़े ज़ोहर इस्लामिया इन्टर कालेज मैदान में ह़ज़रत ने नमाज़े जनाज़ा की इमामत के फ़राइज़ अंजाम दिए।

सुबूते करामाते औलिया अल्लाह

अल्लाह तआ़ला के मक़बूल व मक़रिब और नेक बन्दों में कुछ सालिक और कुछ मजज़ूब होते हैं,जिन्हें अल्लाह का वली कहा जाता है। सालिक अल्लाह के वह महबूब और नेक बन्दे होते हैं,जो मुआ़शिरे में रह कर दीने इस्लाम पर अ़मल पैरा और "الحب فی الله و البغض فی الله" के आईना दार होते हैं। रहे मजज़ूब तो वह फ़ना फिल्लाह होते हैं,जो ज़िक्रे इलाही में मह्‌वे और दीन व मुआ़शिरे की बज़ाहिर कोई परवाह नहीं रखते। ऐसे ही लोगों के बारे में,अल्लामा यूसुफ़ नब्हानी अ़लैहिर्रहमा ने एक हदीस शरीफ़ नक़ल की है,''कुछ परा गन्दा बाल,गुब्बार से अटे हुये और फटे कपड़ों वाले होते हैं,उनकी कोई इंसान परवाह तक नहीं करता,लेकिन अगर वह किसी बात;पर क़स्म ख़ुदा की खा ले तो अल्लाह तआ़ला उन की क़स्म पूरी फ़रमा देता है।''

हदीस शरीफ़ में अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने किसी मख़सूस़ बात पर क़स्म खाने की वज़ाहत नहीं फ़रमाई,बल्कि मजमूई त़ौर पर किसी भी बात को वह चाह लें और ज़िद कर लें तो यक़ीनन वह बात अल्लाह तआ़ला पूरी फ़रमाता है।

विलायत किसे कहते हैं :

विलायत का मोहतरम व मुअ़ज़्ज़ज़ दर्जा किन लोगों को कब मिलता है,इस के बारे में मुहक़्क़िक़ीन ने लिखा है,कि वली वह मोमिने स़ालेह़ है जिस को मअ़रफ़त

व कुर्बे इलाही का एक ख़ास दर्जा मिलता है,और फिर शरीअ़त के मुताबिक़ इबादत व रियाज़त करने के बाद विलायत का अ़ज़ीम मर्तबा हासिल होता है,और कभी इब्तिदन बिला रियाज़त व मुजाहिदा के भी मिल जाता है।

औलियाए किराम में सब से बड़ा दर्जा ख़ुलफ़ाए अरबा यानी सय्यदिना सिद्दीक़े अकबर,सय्यदिना फ़ारूक़े आज़म,हज़रत उस्मान ग़नी और,हज़रत मौला अ़ली रिज़वानुल्लाह तआ़ला अ़लैहिम अजमईन को हासिल है,उस के बाद ग़ौस,कुत्ब,अब्दाल,औताद,नक़बा,आसार व क़ियाफ़ा,नजबा,हवारी हज़रात,रजई हज़रात, ख़ात्म, रिजालुलग़ैब वग़ैराहुम,औलिया किराम के तबक़ात,मरातिब और अक़साम को,हज़रत अ़ल्लामा यूसुफ़ नब्हानी अ़लैहिर्रहमा ने तफ़सील से,अपनी किताब"जामेअ़ करामात औलिया"में ज़िक्र फ़रमाया है। तफ़सील की यहाँ गुन्जाइश नहीं है। वैसे हर ज़माने में औलियाए किराम होते हैं,कोई ज़माना ऐसा नहीं जिस में औलिया हज़रात न रहे हों,क़ियामत तक यह हज़रात होते रहेंगे,मगर उन का पहचानना आसान नहीं।

वली कौन हज़रात होते हैं,इस तअ़ल्लुक़ से हज़रत अ़ल्लामा यूसुफ़ नब्हानी अ़लैहिर्रहमा ने ,अ़ल्लामा तफ़ताज़ानी, अ़ल्लामा क़ैशरी और इमाम राज़ी अ़लैहिमुर्रहमा के नज़रिया को बयान फ़रमाया है कि"वली वह होता है जिस की ताआ़त में तसलसुल हो,या उस की हिफ़ाज़त व निगरानी का ज़िम्मा अल्लाह करीम ने अपने ज़िम्मे ले

लिया हो"अब उस का खुज़लान व रूस्वाई नहीं होती। और खुज़लान यह है कि वह इसयान व नाफ़रमानी पर क़ादिर हो जाये,और तसलसुल इताअत,उसे इस नाफ़रमानी से रोक देता है। और कुदरते ताआत अल्लाह की तौफ़ीक़ से हमेशा उस के साथ रहती है। अल्लाह करीम खुद फ़रमाता है"وهو يتلى الصالحين" यानी अल्लाह नेक लोगों का मुतवल्ली होता है लेकिन याद रहे कि वली नबियों की तरह मासूम नहीं होते बल्कि वह महफ़ूज़ होते हैं। महफ़ूज़ का मतलब यह है कि वह गुनाहों पर इसरार नहीं करते।

(जामेअ़ करामात औलिया अज़ अल्लामा यूसुफ़ नब्हानी स 127 मत़बूआ़ देहली)

विलायत के बा अज़मत दर्जे पर वह शख़्स फ़ाइज़ होगा,जो اطيعوا الله و اطيعوا الرسول की अ़मली तफ़सीर,और الحب فى الله و البغض فى الله का आईना दार हो और अम्रबिलमअ़रूफ़ पर अ़मलपैरा,और नहीं अनिल मुन्कर से इज्तिनाब करता हो।

अब आइये ज़रा औलियाए किराम की अ़ज़मत व अहमियत,तसर्रुफ़ व करामात को कुरआन व अहादीस के तनाज़िर में मुलाहिज़ा करें।

आयाते कुरआनिया से सुबूते विलायत व करामतः

الا ان اولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون الذين آمنوا وكانوا يتقون لهم البشرى فى الحياة الدنيا و فى الاخرة لا تبديل لكلمات الله ذلك هو فوز العظيم(سورة يونس آية ٦٢)

सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है और न कुछ ग़म,वह जो ईमान लाये और

परहेज़गारी करते हैं,उन्हें ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िन्दगी में और आख़िरत में अल्लाह की बातें बदल नहीं सकते यही बड़ी काम्याबी है।

दूसरी जगह यूँ इरशाद है:

وھزی الیك بجذع النخلۃ تساقط علیك رطبا جنیا فکلی و اشربی۔ (سورۂ مریم، آیۃ۲۰)

और खजूर की जड़ पकड़ अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पक्की खजूरें गिरेंगी तो खा और पी।

एक दूसरी जगह इरशाद है :

کلما دخل علیھا زکریا للمحراب و جد عندھا رزقا قال یا مریم انی لك ھذا ۔قالت ھو من عند اللہ ان اللہ یرزق من یشاء بغیر حساب (سورۂ عمران، آیۃ۳۵)

जब ज़करिया उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते,उस के पास नया रिज़्क़ पाते,कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहाँ से आया ? बोलीं वह अल्लाह के पास से है,बेशक अल्लाह जिसे चाहे उसे बे गिनती दे।

واذا اعتزلتموھم وما یعبدون الا اللہ فأو ا الی الکھف ینشر لکم ربکم من رحمتہ ویھئی لکم من امرکم مرفقا .و تری الشمس اذا طلعت تزاورعن کھفھم ذات الیمین و اذا غربت تقرضھم ذات الشمال (سورۃالکھف، آیۃ۱۵)

और जब तुम उन से और जो कुछ वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे काम में आसानी के सामान बना देगा और ऐ

महबूब!तुम सूरज को देखोगे कि जब निकलता है उन के ग़ार से दाहनी तरफ़ बच जाता है और जब डूबता है तो उन से बायें तरफ़ कतरा जाता है।

अहादीसे करीमा से सुबूते विलायत व करामात :

ماعرج فی الصحیحین عن ابی هریرة رضی الله عنه ان النبی صلی الله تعالیٰ علیه وسلم قال، لم یتکلم فی المهد الا ثلاثة، عیسیٰ ابن مریم علیها السلام و صبی فی زمن جریح الناسك و صبی اٰخر، اما عیسیٰ فعرفتموهم ،و اما جریح فکان رجلا عابدا ببنی اسرائیل کانت له ام، فکان یوما یصلی اذشتاقت الیه امه، فقالت یا جریح فقال یا رب الصلوة خیر ام رؤیتها ثم صلی فدعته ثانیا فقال مثل ذلك حتیٰ قال ثلاث مرات و کان یصلی ویدعها فاشتد ذلك علی امه قالت اللهم لاتمته حتی تزیه المؤمسات، و کانت زانیة هناك فقالت لهم انا افتن جریح حتیٰ یزنی فاتته فلم تقدر علی شئی و کان هناك راع یا ویٔ بالليل الیٰ اصل صو معته فلما اعیاها را ودت الراعی عن نفسها فاتاها فولدت، ثم قالت ولدی هذا من جریح، فاتاه بنواسرائیل و کسروا صومعته و شتموه فصلی و دعا ثم نحس الغلام، فقال ابو هریرة کانی انظر الی النبی صلی الله تعالیٰ علیه وسلم حین قال بیده یا غلام من ابوك ؟فقال الراعی، فندم القوم علی ما کان منهم و اعتذر الیه و قالوا نبنی صومعتك من ذهب او فضة فابی علیهم و بناها کما کانت، و اما الصبی لآخر فان امرأة کانت معها صبی لها ترضعه اذامر بها شاب جمیل ذو شارة حسنة فقالت اللهم اجعل بنی مثل هذا فقال الصبی لا تجعلنی مثله ثم مرت بها امرأة ذکروا انها سرقت وزنت وعوقبت، و فقالت اللهم لا تجعل ابنی مثل هذا فقال الصبی اللهم اجعلنی مثلها فقالت له امه فی ذلك فقال ان الشاب کان جبارا من الجبائرة فکرهت ان اکون مثله و ان هذا قیل انها زنت و لم تزن و

قیل انها سرقت و لم تسرق وهی تقول حسبی الله.

बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबी अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया,फन घोड़े में सिर्फ़ तीन बच्चों,ईसा बिन मरयम अ़लैहिस्सलाम,ज़ाहिद जरीह के दौर में एक बच्चे और एक और बच्चे ने गुफ़्तगु की है,ईसा अ़लैहिस्सलाम का मुआ़मला तो तुम्हें(स़हाबा)मालूम है।

अब रहा जरीह तो वह इस्राईलों में एक आ़बिद शख़्स़ था,उसकी वालिदा थीं,वह एक दिन नमाज़ पढ़ रहा था कि वालिदा को उस का प्यारा आया,उस ने पुकारा जरीह!जरीह कहने लगा,मौला करीम! नमाज़ बेहतर है या माँ की ज़्यारत?फिर नमाज़ पढ़ने लग गया,माँ ने दो बारा पुकारा,जरीह ने फिर पहला अ़मल दोहराया,तीन दफ़आ़ ऐसा ही हुआ,कि वह नमाज़ में मस़रूफ़ रहा और माँ का ख़्याल न किया,माँ को बात नागवार गुज़री,उस ने बत़ौर बद दुआ़ कहा अल्लाह!बदकार औ़रतों के फ़ितने में मुब्तला करने से पहले उसे मौत न देना,वहाँ एक बदकार औ़रत रहती थी,इसराईलों से कहने लगी,मैं जरीह को फ़ितनाए ज़ना में मुब्तला कर दूँगी,वह उस के पास आई मगर वह उस के हत्थे न चढ़ सका,एक चरवाहा जरीह के गिरजे के पास रात गुज़ार रहा था,जब जरीह आमादए गुनाह न हुआ तो चरवाहा से बदी की और बच्चा जन दिया,फिर ऐअलान करने लगी कि बच्चा जरीह का है,इसाईलों ने जरीह का गिरजा गिराया और उसे

गालियाँ दीं,जरीह ने नमाज़ पढ़ी दुआ मांगी फिर बच्चे को हाथ से चुका दिया,अबूहुरैरा कहते हैं गोया मैं अब भी हुज़ूर अलैहिस्सलात वस्सलाम को देख रहा हूँ,जब आप ने हाथ से इशारा फ़रमाया,(जरीह के इशारे की नक़ल फ़रमाते हुये)लड़के,तेरा बाप कौन है?बच्चे ने कहा चरवाहा लोग शरमिन्दा हो कर जरीह से मअ़ज़रत ख़्वाह हुये कहने लगे,हम सोने चाँदी का गिरजा बना देते हैं,जरीह न माना और फिर पहले की त़रह गिरजा बना लिया।

एक दूसरे बच्चे की गुफ्तगु यूँ है,कि एक अ़ौरत शीर ख़्वार बच्चे को दूध पिला रही थी कि एक ख़ुबसूरत ख़ुश मंज़र जवान गिरज़ा के पास से गुज़रा,औरत ने कहा,अल्लाह!मेरे बच्चे को भी ऐसा ही बना दे,बच्चे ने कहा अल्लाह!मुझे उस जैसा न करना,फिर एक अ़ौरत गुज़री,जिस पर चोरी और ज़िना का इल्ज़ाम था और वह सज़ा पा चुकी थी,दुध देने वाली अ़ौरत कहने लगी अल्लाह!मेरे बच्चे को इस जैसा न बनाना बच्चे ने कहा अल्लाह!मुझे इस जैसा बना दे,जब माँ ने पूछा तो बच्चे ने जवाब दिया,कि नौ जवान तो एक ज़ालिम व जाबिर था,मैं इस जैसा नहीं बनना चाहता,इस अ़ौरत पर ज़िना का इल्ज़ाम था मगर वह ज़ानिया न थी,इल्ज़ाम चोरी का था मगर वह चोर न थी बल्कि हस्बियल्लाह कहती जा रही थी।

وهو خبر الغار و هو مشهور فی الصحاح عن الزهری عن سالم عن ابن عمر قال قال رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه و سلم ثلاث رهط ممن کان قبلکم فآوهم المبیت الیٰ غار فدخلوه فان حدرت خصرة من الجبل وسدت علیهم باب الغار، فقالوا والله لا

ينـجيكم من هذه الصخرة الا تدعوا الله بصالح اعمالكم، فقال رجل منهـم كان لى ابو ان شيخان كبيرا ن و كنت لا اعبق قبلهما فنامافى ظـل شـجرة، يومافلم ابرح عنهما و حلبت لهما عموقهما فجئتهما به فـوجـد تهـمـا نائمين، فكرهت ان اوقظهما و كرهت ان اعبق قبلهما فـقـمـت والـقـدح فـى يـدى انتـظـر استيـقـاظ هما حتى ظهر الفجر فـاستيـقـظـا فشربا عبوقهما" اللهم ان كنت فعلت هذا ابتغاء وجهك فـافـرج عنا مانحن فيه هذه الصخرة" فانفرجت انفر اجالا يستطيعون الـخـروج مـنه، ثم قال الاخر، كانت لى ابنة عم وكانت احب الناس الـى فـراودتهـا عـن نـفسهـا فـامتنعت حتىٰ المت بها سنة من السين فـجـائتنى، فاعطيتها مالا عظيما على ان تخلى بينى و بين نفسها فلما قـدرت عـليهـا قـالت لا يحوز لك ان تفك الخاتم الا بحقه فخرجت من ذلك العمل و تركتها و تركت المال معها، "اللهم ان كنت فعلت ذلك ابتـغـاء و جهك فافرج عنها ما نحن فيه" فانفرجت الصخرة غير انهم لا يستطيعون الخروج منها۔قال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسـلـم ،ثـم قـال الثالث، لهم انى استجرت اجراء فاعطيتهم اجورهم غيـر رجـل واحل ترك الذى له، وذهب فثمرت اجرته حتىٰ كثرت منه الامـوال، فـجائنى بعد حين و قال يا عبد الله، اذ الى اجرتنى فقلت له ،كـل مـاتـرىٰ مـن اجـرتك مـن الابل والغنم والرقيق، فقال يا عبد الله اتستهزء بى، فقلت انى لا استهزء بك فاخذ ذلك كله" اللهم ان كنت فعلت ذلك ابتغاء و جهك فافرج عنا ما نحن فيه "فانفرجت الصخرة عن الغار فخرجوا يمشون وهذا حديث حسن صحيح متفق عليه۔

(جامع کرامات اولیاء از علامہ یوسف نبہانی، ص ۸۷۸-۹۵)

तर्जमा :– दूसरी हदीस ग़ार वाली,जो कुतुबे सिहाह में मशहूर है,कि इमाम ज़हरी ने हज़रत सालिम से रिवायत की है,उन्होंने यह रिवायत हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन

उमर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से ली है,इब्ने उमर कहते हैं,कि सरकारे रिसालत म आब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया,कि गुज़शता दौर में तीन अफ़राद मिलकर आ रहे थे,उन्हें एक ग़ार के क़रीब पहुँच कर रात आ गई,वह ग़ार में चले गये,अचानक एक पहाड़ी चटान ने गिर कर ग़ार का दरवाज़ा बन्द कर दिया,वह एक दूसरे को कहने लगे,बाख़ुदा अब इस बलाये नागेहानी से उसी सूरत में निजात पा सकते हो कि अपने नेक अ़मल का वास्ता दे कर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करो।

उन में से एक ने यूँ वाक़िआ़ सुनाया कि मेरे वालिदैन बहुत ज़्यादा बूढ़े थे और मैं उन से पहले शाम को दूध नहीं पिया करता था,वह दोनों एक दिन दरख़्त के साये में सो गये,मैं भी उन के पास ही रहा उन के लिए शाम का दूध लाया,जब उन के पास पहुँचा तो वह सोये हुये थे,मैं ने जगाना मुनासिब न समझा और उन से पहले खुद शाम का दूध पीना ना मुनासिब जाना,प्याला हाथ में लिए खड़ा रहा,उन के जागने का इन्तिज़ार करते करते सुब्ह हो गई, जागे तो अपना रात का दूध पिया(अब वह यह बयान कर के दुआ़ करने लगा)ऐ अल्लाह!अगर मैंने यह सब कुछ सिर्फ़ तेरी रज़ा के लिए किया था तो हमारी इस चटान वाली मुसीबत से हमें निजात अ़ता फ़रमा(उसकी इस दुआ़ से)वह चटान थोड़ी सिरक गई,मगर अभी वह बाहर नहीं निकल सकते थे।

फिर दूसरे ने अपना वाक़िआ़ यूँ सुनाया। मेरी एक

चचाज़ाद बहन थी,वह काइनात भर से प्यारी थी,मैंने उसे बुलाया मगर वह बे एअ़्तेनाई बरत गई,फिर उसे क़हत से एक साल दो चार होना पड़ा,मेरे पास मदद के लिए आई,मैंने उसे उस शर्त पर बहुत सा माल दे दिया कि वह मुझे अपनी तन्हाई से सरफ़राज़ करेगी,(जब तन्हाई में आई)और मुझे उस पर कुदरत ह़ासिल हो गई तो कहने लगी तो इस ख़ातिम को बिला ह़क़ न खोल(उसका यह कहना था)कि मैं अलग हो गया,उसे छोड़ दिया और माल भी उसी के पास रहने दिया(फिर यूँ दस्त बा दुआ़ हुआ)अल्लाह! अगर मैं ने यह सब तेरी रज़ा की ख़ात़िर किया था तो हमें कशाइश अ़त़ा फ़रमा दे और उस मुसीबत को दूर कर,चटान कुछ और हटी,मगर अभी निकलने के लिए रास्ता तंग था।

हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया,फिर तीसरा यूँ गोया हुआ ऐ अल्लाह!मैंने कुछ मज़दूर रखे थे,मैंने उन्हें मज़दूरी दे दी थी,स़र्फ़ एक मज़दूर मज़दूरी छोड़ कर चला गया मैंने उस की मज़्दूरी वाली उजरत को फलदार बना दिया और बुह्त माल पैदा किया। वह मज़दूर कुछ वक़्त के बाद आया और मुझे कहने लगा ऐ बन्दए खुदा! मुझे मेरी मज़दूरी दे दे मैंने उसे जवाब दिया कि यह ऊँट ,भेड़,बकरियाँ और गुलाम तेरा ही माल हैं यह सुन कर वह कहने लगा ऐ अल्लाह के बन्दे!मेरा मज़ाक़ न उड़ा?मैंने उस से कहा कि मैं जनाब का मज़ाक़ नहीं उड़ा रहा हूँ(यह सब आप का है ले लें)उस ने वह सारा माल समेट लिया। फिर यूँ दुआ़

की। मेरे अल्लाह!अगर यह सब कुछ मैंने तेरी चाहत के लिए किया था,तो हमारी मुसीबत को रफ़अ़ फ़रमा। अब क्या था चटान ग़ार के मुंह से हट गई और वह अपने सफ़र के लिए चल निकले। यह ह़दीस हुस्ने सह़ीह और मुत्तफ़िक़ अ़लैहि है।

करामत किसे कहते हैं :

अल्लाह रऊफ़ व रह़ीम और करीम है वह अपने बन्दों की इ़ज़्ज़त अफ़ज़ाई के लिए अपनी ख़ुसूसी अ़त़यात और नवाज़िशात से नवाज़ता है तो उन से कुछ उमूर ख़र्क़ आ़दत स़ादिर होते हैं जिसे करामत से ताबीर किया जाता है।

इस्तिदराज किसे कहते हैं :

कुछ गुनेहगार फ़ासिक़ व फ़ाजिर बन्दों को उन के कुफ़्र, सरकशी, और इ़स्यान पर मज़ीद मोहलत व बढ़ावा देने के लिए ढील दे देता है,और उन से भी कुछ बातें ख़र्क़ आ़दत स़ादिर हो जाती हैं,जिसे इस्तिदराज कहते हैं। अगर किसी फ़ासिक़ फाजिर और काफ़िर बन्दे से इस्तिदराजन,ख़र्क़ आ़दत कोई बात ज़ाहिर हो जाये तो उस का यह मत़लब हरगिज़ नहीं लिया जायेगा कि वह अल्लाह का वली और नेक बन्दा है।

इस्तिदराज को कुरआने अ़ज़ीम में कई नामों से जि़क्र किया गया है। जिसे अल्लामा यूसुफ़ नब्हानी अ़लैहिर्रहमा ने तफ़सील से ज़िक्र किया है।

इस्तिदराज की ह़क़ीक़त :

इरशादे ख़ुदावन्दी है। سنستدرجهم من حيث لا يعلمون

(पारा 9 आयत 182)

क़रीब है कि हम आहिस्ता आहिस्ता ले जायेंगे जहाँ से उन्हें ख़बर न होगी।

इस्तिदराज का मअ़ना यह है कि बन्दे को दुनिया में अल्लाह करीम हर वह चीज़ अ़ता फ़रमा दे,जो इस बन्दे की कजरवी,गुम्राही और जिहालत में इज़ाफ़ा का सबब बन जाये। यह अशया उस के लिए अल्लाह करीम से दूरी बढ़ाती चली जाती हैं,उ़लूम अ़क़लिया में तहक़ीक़न यह बात साबित हो चुकी है कि अगर काम को बार बार दोहराया जाये तो एक रासिख़ मलका उस काम के करने पर पैदा हो जाता है।

अब अस़ल मसअला की त़रफ़ आइये। जब इंसान का दिल दुनिया की त़रफ़ माइल हो जाता है और अल्लाह करीम उस बन्दे की मुराद पूरी भी फ़रमा देता है और वह अपने मतलूब को पा लेता है तो उसे एक लज़्ज़त सी ह़ासिल हो जाती है। इस लज़्ज़त का हुस़ूल उसे मज़ीद दुनिया की त़रफ़ माइल कर देता है। यह मैलान उसे मज़ीद कोशिश व जहद पर आमादा करता है। अब यह मैलान व कोशिश इस आदमी को एक से दूसरे की त़रफ़ बढ़ाते चले जाते हैं और यह दोनों ह़ालतें दर्जा बदर्जा क़वी होती जाती हैं। अब वह उन लज़्ज़तो में खो जाता है तो लाज़िमी नतीजा यह होगा कि वह मक़ामात, मकाशिफ़ात और दरजात मुआ़रिफ़ से गिरता चला जाता है। अब जितना मैलान दुनिया की त़रफ़ बढ़ता चला जायेगा उतना ही अल्लाह तआ़ला से दूर

होता चला जायेगा और विसाले ख़ुदावन्द और तक़र्रुबे इलाही ख़त्म हो जायेगा। यही इस्तिदराज है।

मकर :

अल्लाह तआला का इरशाद है। فلا يأمن مكر الله الا القوم الخاسرون (پ۹،آیۃ۹۹)

(अल्लाह की ख़ुफ़िया तदबीर से निडर नहीं होते,मगर तबाही वाले)

नीज़ इरशाद फ़रमाया: ومكروا مكرا و مكرنا مكرا وهم لا يشعرون (پ۱۹،آیۃ۵۰)

(उन्होंने अपना सा मकर किया और हम ने अपनी ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई और वह ग़ाफ़िल रहे)

नीज़ फ़रमाया: ومكروا و مكر الله و الله خير الماكرين (پ۳آیۃ۵۴)

(और काफ़िरों ने मकर किया और अल्लाह ने उन के हलाक की ख़ुफ़िया तदबीर फ़रमाई और अल्लाह सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है।)

कैद :

इरशादे हक़ है: يخادعون الله و هو خادعهم

(वह अपने गुमान में अल्लाह तआला को फ़रेब दिया चाहते हैं और वही उन्हें ग़ाफ़िल कर के मारेगा)

नीज़ इरशाद फ़रमाया: يخادعون الله والذين آمنوا و مايخدعون الا انفسهم (پ۱آیۃ۹)

(वह फ़रेब दिया चाहते हैं अल्लाह और ईमान वालों को और हक़ीक़त में फ़रेब नहीं देते मगर अपनी जानों को।

इम्ला :

ولا تحسن الذين كفروا انما نملی لهم خيرا لانفسهم انما نملی لهم ليزدادوا اثما(٤،آية ١٧٨)

(और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वह जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उनके लिए भला है,हम तो इसी लिए उन्हें ढील देते हैं कि गुनाह में बढ़ें)

अहलाक :

इरशादे रब्बानी है,(حتیٰ اذافرحوا بما اوتوا اخذنا هم(پ۷،آیۃ۴۴)

यहाँ तक कि जब ख़ुश हुये उस पर जो उन्हें मिला हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया)फिर और के बारे में इरशाद हुआ।

واستكبرواهو وجنوده فی الارض بغير الحق وظنوا انهم الينا لا يرجعون فاخذناه و جنوده فنبذناهم فی اليم (اپ۲۰/آیۃ۳۸)

(और उस ने और उस के लशकरियों ने,ज़मीन में बेजा बड़ाई चाही और समझे कि उन्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं तो हम ने उसे और उस के लशकर को पकड़ कर दरिया में फैक दिया)

इन आयाते इलाहिया से साबित हुआ कि मुरादों तक पहुँचना, इस बात की दलील नहीं कि ऐसा आदमी दरजात कमालात को पा चुका है या वह नेकियों और खुरात को हासिल कर चुका है।

करामत व इस्तिदराज में फ़र्क़ :

अब रही यह बात कि करामत व इस्तिदराज में क्या फ़र्क़ है ? तो आइये हम इस की वज़ाहत करते हैं,साहिबे करामत को ज़ुहूर करामत के वक़्त ख़ुशी

मयस्सर नहीं होती बल्कि उसे अल्लाह का ख़ौफ़ होता है और क़हरे ख़ुदावन्दी से वह ज़्यादा डरने लगता है,क्योंकि उसे ख़ौफ़ होता कि जिसे वह करामत समझ रहा है कहीं इस्तिदराज न हो।

लेकिन साहिबे इस्तिदराज का मुआमला बिल्कुल दूसरा होता है। वह अपने इस्तिदराज को देख कर मुसर्रत व ख़ुशी महसूस करता है,और समझता है कि उसे यह करामत(यानी इस्तिदराज)बतौर इस्तिहक़ाक़ मिला है अब वह अपनी अ़ज़मत को पा कर दूसरों को हक़ीर समझने लग जाता है,उस में ग़ुरूर पैदा होता है, अल्लाह करीम के ऐताब व गिरफ़्त से वह ख़ुद को मामून समझने लग जाता है, सुये आ़किबत से निडर हो जाता है। अब अगर देखने वाला ऐसे हालात मुलाहिज़ा करता है तो उसे यक़ीन कर लेना चाहिए कि यह साहिब करामत नहीं बल्कि साहिब इस्तिदराज है।

इसी बिना पर हमारे मुहक़्क़िक़ीन फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ख़ुदावन्दी से उ़मूमन इन्क़ेताअ़ करामत के क़ियाम पर ही आ कर होता है इसी लिए मुहक़्क़िक़ औलिया किराम करामत के इज़हार से इस तरह ख़ौफ़ खाते हैं जिस तरह मुसीबत व बला से ख़ौफ़ खाया जाता है।

(जामेअ़ करामात औलिया,स 14 मतबूआ़ देहली)

औलिया अल्लाह का इल्म व क़ुदरत :

औलिया अल्लाह का इल्म निहायत वसीअ़ होता है हत्ता कि बाज़ों को मा काना व मा यकून (जो कुछ हुआ और जो कुछ होगा)लौहे महफ़ूज़ पर इत्तिलाअ़ देते हैं

और मरने के बाद उन के कमालात और कुव्वते और ज़्यादा हो जाती हैं,जैसा कि शैख़ अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी कुद्दिसा सिर्रुहु ने "तकमीलुलईमान" में मशाइख़ सुफ़िया के अक़्वाल को नक़ल फ़रमाया है। कि "मुशाइखे सुफ़िया कुद्दिसा अल्लाह सर हम गोयन्द कि तसर्रुफ़ बाज़ औलिया दर आलमे बरज़ख़ दाइम व बाक़ी अस्त व तवस्सुल व इस्तिमदाद बेअरवाहे मुक़द्दमा ईशा साबित व मुअस्सिर अस्त(क़ानून शरीअत अ़ल्लामा शम्सुददीन जौनपुरी)यानी"औलिया इन्तिक़ाल के बाद भी तसर्रुफ़ करते हैं उन को वसीला बनाना और उन से मदद मांगना साबित व मुअस्सिर है।"

अहले सुन्नत के नज़दीक इल्म व इदराक मौती है मरदों की तहक़ीक़ कर के फ़रमाया :

وهذا ينتفع بزيارة قبور الا برار و الا ستعانة من نفوس الاخيار

यानी इसी लिए औलिया की क़बरों की ज़्यारत और बुज़ुर्गों कीरूहों से मदद मांगना नफ़अ़ देता है।

इमाम ग़िज़ाली अ़लैहिर्रहमा फ़रमाते हैं : हर कि इस्तिमदाद कर्दा मीशवद बुये हयात इस्तिमदाद कर्दा मीशवद बुये बाद अज़ वफ़ात यानी जिस से ज़िन्दगी में मदद मांग सकते हैं,उस से मरने के बाद भी मांग सकते हैं।

इमाम ग़ज़ाली अ़लैहिर्रहमा ने तहरीर फ़रमाया है :

قال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ما من عبد الا و لقلبه عينا ن يدرك بهما الغيب فاذا اراد الله تعالىٰ بعبد خير افتح عينى قلبه ليرى ما هو غائب من بصره وهذا الروح لا يموت لموت البدن

यानी जब अल्लाह तआ़ला बन्दे के दिल की आँखें खोल देता है तो वह ग़ैब की बातें जान लेता है और यह रूह़ बदन के मरने से नहीं मरती है।

मशाइख़ सुफ़िया कहते हैं,कि बाज़ औलिया अल्लाह का तस़र्रुफ़ आ़लमे बरज़ख़ में भी बाक़ी रहता है,और उन की अरवाह मुक़द्दसा से इस्तिमदाद व इस्तिआ़नत फ़ायदा मन्द होता है।

हुज्जतुलइस्लाम इमाम गज़ाली रह़मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं,कि जो ह़ज़रात बह़ालते ज़िन्दगी बरकात दिया करते थे, वह बाद अज़ वफ़ात तवस्सुल व बरकत देने की अहलियत रखते हैं क्योंकि मरने के बाद रूह़ का बाक़ी रहना ह़दीसों और इजमाअ़े उम्मत से साबित है और बह़ालते ह़यात और बादे वफ़ात हर ह़ालत में रूह काम करती रहती है, बदन को तस़र्रुफ़ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और मुतस़र्रिफ़ ह़क़ीक़ी तो अल्लाह तआ़ला ही है। (तकमीलुलईमान अज़ अ़ल्लामा अ़ब्दुलह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी स 123 मतबूआ़ नूरिया बुकडिपो बराऊ शरीफ़)

मज़ाराते औलिया पर ह़ाज़िरी और मदद मांगना :

मज़ाराते औलिया पर ह़ाज़िरी दे कर मदद मांगने और उन से फ़ैज़ व बरकत ह़ासिल करने को आ़लमे इस्लाम का एक बड़ा त़बक़ा सिर्फ़ जाइज़ ही नहीं मानता है बल्कि उसे मुस्तह़सन समझ कर ह़ाज़िरी देता और स़ाहिबाने मज़ार से औलिया पर ह़ाज़िरी दे कर मदद मांगने मज़ार से अपनी परेशानियाँ और मुश्किलात के दूर होने के लिए बारगाहे रब्बुलइज़्ज़त में दुआ़ करने की दरख़्वास्त करता है। इस्तिमदाद व इस्तिआ़नत

औलिया,पर बड़ी तवील बहस से उलमाए किराम ने की हैं,उस के लिए आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा और दीगर उलमाए किराम की किताबें मुलाहिज़ा करें।

इस्तिआनत के तअल्लुक से आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी कुद्दिसा सिर्रुहु ने लिखा है"इस्तिआनत हकीकतन यह है कि उसे कादिर बिज़्ज़ात बे नियाज़ जाने कि बे अताए इलाही वह खुद अपनी ज़ात से उस काम की कुदरत रखता हो,इस मअ्ना का गै़रे खुदा के साथ ऐअ्तिकाद हर मुसलमान के नज़दीक शिर्क है,न हरगिज़ कोई मुसलमान गै़र के साथ उस मअ्ना का क़स्द करता है,बल्कि वासिता वसूल फ़ैज़ व ज़रीआ वसीला क़ज़ाए हाजात जानते हैं और यह क़तअन हक़ है। खुद रब्बुल इज़्ज़त तबारक व तआला ने कुरआन में हुक्म फ़रमाया। وابتغوا اليه الوسيلة यानी अल्लाह की तरफ़ वसीला ढूंडो। बा ई मअ्ना استعانت بالغير हर गिज़ इस हस्र के मनाफ़ी नहीं,"اياك نستعين"जिस तरह वजूदे हक़ीक़ कि खुद अपनी ज़ात से बे किसी के पैदा किए मौजूद होना,ख़ास बजनाब इलाही तआला व तक़द्दुस है,फिर उस के सबब दूसरे को मौजूद कहना शिर्क हो गया,जब तक वही मौजूदे हक़ीक़ी मुराद न ले।

(ईमान कामिल,स 117 मतबूआ नूरिया बुकडिपो बराऊशरीफ़)

(माख़ूज़ मज़मून मौलाना जमाल अहमद रज़वी मुदीरे माहनामा फ़ैज़ुर्रसूल बराऊंशरीफ शरीफ़ स.19ता23 बाबत मार्च 2015 ई / जमादिलऊला 1436 हिजरी)

जीप का पलट जाना

मौलाना हबीबुन्नबी रज़वी नूरी जमाली शाहिदी मुदर्रिस अलजामिअ़तुलइस्लामिया रामपुर ने अपना एक ऐनी मुशाहिदा तहरीर किया है,लिखते हैं कि यह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ 1989 ई के अवाइल का है,जब मुहक़्क़िके अ़स्र मुबल्लिग़े मसलके रज़ा चशम व चिराग़ सादात पीलीभीत शरीफ़ ख़लीफए हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अल हाज सय्यद शाहिद अ़ली हसनी रज़वी नूरी जमाली शैख़ुलहदीस व नाज़िमे आला मरकज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत जामिअ़तुल इस्लामिया व क़ाज़िए शरअ़ व मुफ़्ती ज़िला रामपुर की दअ़वत पर क़ाज़ियुलक़ुज़्ज़ात,ताजुश्शरीआ जानशीने मुफ़्तिए आज़म हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अलहाज मुहम्मद अख़तर रज़ा ख़ाँ साहब अज़हरी दामत बरकातुहुमुल क़ुदसिया,मरकज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत अलजामिअ़तुल इस्लामिया पुराना गंज रामपुर तशरीफ़ लाये,जहाँ अराकीन असातिज़ा व तलबा जामिआ ने मौसूफ़ का शायाने शान ख़ैर मक़दम किया।

मौज़ूवज़ा प्रोग्राम के तेहत इसी दिन हज़रत ताजुश्शरीआ मौज़ा उस्मान नगर ज़िला रामपुर तशरीफ़ ले गये,जहाँ कसीर तादाद में लोगों ने हज़रत के दस्त हक़ परस्त पर शर्फ़े बैअ़त हासिल किया,उस्मान नगर में कुछ देर क़ियाम के बाद हज़रत ताजुश्शरीआ वहाँ से रुख़सत हो कर एक खुली हुई जीप में रवाना हुये। जीप

में हज़रत ताजुश्शरीआ के साथ,हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी और ड्राइवर समीत छःअफ़राद सवार थे। जीप में सवार यह क़ाफ़िला रामपुर बिलासपुर शाहिराह पर''पीला खार नदी''के किनारे बांध पर से गुज़र रहा था। चलती हुई जीप जब बांध के खड़ंजे के ऊपर से गुज़री तो अचानक खड़ंजे के किनारे की ईंटें उखड़ गई,जिस से जीप का तवाजुन बिगड़ गया और जीप ने तीन पलटे खायीं और हैरत अंगेज़ तौर पर तक़रीबन पचास साठ फिट गहराई में,बांध के नीचे एक गड्ढे में पहुँच कर,सीधी खड़ी हो गई। जीप में मौजूद दूसरे लोग हवास बाख़ता थे। जीप जैसे ही ज़मीन पर रुकी तो लोगों ने देखा कि हज़रत ताजुश्शरीआ सीट पर सजदा की हालत में पुर सुकून बैठे हैं। चन्द लमहों बाद ही आप ने पूछा?सय्यद साहब आप ठीक हैं,आप को चोट तो नहीं आई?नहीं हुज़ूर मैं ठीक हूँ कोई चोट नहीं आई हज़रत अल्लामा सय्यद शाहिद अली रज़वी ने फ़ौरन जवाब दिया,और दरयाफ़्त किया हज़रत आप तो ख़ैरियत से हैं,हज़रत ने फ़रमाया बेहम्देही तआला बख़ैरियत हूँ। इस हादसा में किसी एक फ़र्द के भी कोई क़ाबिल ज़िक्र चोट नहीं आई सब लोग बहिफ़ाज़त रहे,अलबत्ता जीप की छत का पिछला हिस्सा टूट गया और पहचानने में नहीं आ रही थी कि यह जीप है।

हज़रत ताजुश्शरीआ की जीप के पीछे पीछे मोटर साइकिलों पर सवार अक़ीदतमन्दों और वाबस्तगाने सिलसिला आलिया क़ादरिया रज़विया का एक अज़ीम

क़ाफ़ला साथ चल रहा था,जिस ने खुली आँखों से यह अंदोहनाक हादसा देखा और मैं बचाओ के नुक़्ता नज़र से घबराये हुये अन्दाज़ में फ़ौरन ही एक महफ़ूज़ रास्ते से नीचे जाये हादसा तक पहुँचा और जीप में सवार सब हज़रात को बाख़ैर व आफ़ियत देख कर मैं हैरतज़दा रह गया। यह वाक़िआ यक़ीनन ख़र्क़ आदत था,इसलिए कि तमाम तौर पर इस क़िस्म के हादसात में जानें नहीं बचतीं चेह जाइकि किसी के चोट तक न आये। यह हज़रत ताजुश्शरीआ दामत बरकातुहुमुल कुदसिया की खुली हुई करामत थी।

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती सय्यद शाहिद अली साहब रज़वी का बयान है कि जैसे ही जीप ने पलटा खाया तो हज़रत ताजुश्शरीआ ने''या अल्लाह या रहमान या रहीम''का विर्द करना शुरूअ कर दिया था,और जब जीप ठहरी तो आप सजदा की हालत में थे।

यहाँ यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है,कि हज़रत सय्यद साहिब क़िब्ला भी इस हादसा जांकाह के वक़्त कुछ कलमाते ख़ैर विर्दे ज़बान किए हुये थे,इस वाक़िआ के ऐने शाहिदीन आज भी सैकड़ों की तादाद में मौजूद हैं,क्योंकि जब यह हादसा हुआ,चश्मे ज़दन में लोगों की एक भीड़ वहाँ इकठ्ठी हो गई थी।

अल्लाह अल्लाह इस दौरे क़हतुर्रिजाल में,अल्लाह के कैसे कैसे बरगुज़ीदा बन्दे इस जूद हैं जिन की बरकतों से बड़े बड़े हादसे टल जाते हैं। यह ऐसे ही नुफ़ूसे कुदसिया हैं जिन के लिए कहा गया है।

औलिया रा हस्त कुदरत इलाह
तीर जस्ता बाज़ गर्दान्द ज़ राह

इस हादसा के बाद गाड़ी वहीं छोड़ कर,तक़रीबन साठ फिट की चढ़ाई चढ़ कर हज़रत ताजुश्शरीआ और सारे रफ़क़ाए सफ़र वहाँ से पैदल चल कर बांध के ढहलवान को पार कर के ऊपर सड़क पर आ गये,और वहाँ से पैदल चलते हुये तक़रीबन एक मील का फ़ासला तै कर के"शंकर चौराहे" पर पहुँचे और वहाँ बाग़ वाली मस्जिद में नमाज़े ज़ोहर अदा फ़रमाई,इसी दौरान शहर से राबता कर के दूसरी गाड़ी मंगवाली गई थी। नमाज़े ज़ोहर से फ़राग़त पा कर यह क़ाफ़ला दो बारा मरकज़ी दर्सगाह अहले सुन्नत अलजामिआतुलइस्लामिया पुराना गंज रामपुर पहुँचा,और मस्जिद जामिआ में हज़रत ताजुश्शरीआ की इक़्तिदा में सब ने नमाज़े अस्र अदा की फिर कुल शरीफ़ हुआ,इस के बाद कसीर तादाद में लोग हज़रत ताजुश्शरीआ के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत हुये। नमाज़े मग़रिब भी हज़रत ही की इक़्तिदा में अदा की गई।

नमाज़े मग़्रिब के बाद यह अज़ीमुश्शान क़ाफ़ला, हज़रत ताजुश्शरीआ और हज़रत मुफ़्ती सय्यद शाहिद अली रज़वी की मुईत में,एक जुलूस की शक्ल में रामपुर के क़स्बा नगलिया आक़िल के लिए रवाना हुआ। जैसे ही यह क़ाफ़ला नगलिया आक़िल पहुँचा,तो वालियाने क़स्बा ने नअरा हाए तकबीर व रिसालत व ग़ौसियत से पुर जोश ख़ैरमक़दम किया। उलमाए अहले सुन्नत ज़िन्दा

बाद,हुज़ूर ताजुश्शरीआ ज़िन्दाबाद के फ़लक शिगाफ़ नअ़रों से सारी बस्ती गूंज उठी। सब लोग जोश व वलवला और निहायत अ़क़ीदत व ऐहतिराम के साथ हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ को मुतअ़य्यना नशिस्त गाह मदरसा सिराजुल उ़लूम ले गये।

राक़िमुलहरूफ़ अपने मुतअ़ल्लिक़ीन रिश्तेदारों और मुहिब्बीन के साथ हज़रत के इस्तिक़बाल करने वालों में पेश पेश रहा। खुसूसन मौलाना अ़तीक़ुर्रहमान अज़हरी ललवारी सदरूलमुदर्रिसीन मदरसा सिराजुल उ़लूम ने हज़रत की पज़ीराई की।

इस वक़्त वहाँ मौजूद लोगों का जो वालिहाना अन्दाज़ व वारफ़तगी का आ़लम था,उसे लफ़्ज़ों में समेटना बड़ा मुश्किल है। ग़र्ज़ यह कि सैकड़ों मुतलाशियाने हिदायत आप के इर्द गिर्द हल्क़ा बांधे खड़े थे। आप ने सब को तौबा कराई,और सब को सिलसिलाए आ़लिया क़ादरिया रज़विया नूरिया में बैअ़त फ़रमा कर सरकारे ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की गुलामी और पनाह में दे दिया। आप ने इशा की नमाज़"नगलिया आ़क़िल"में ही अदा फ़रमाई,और कुछ देर नगलिया आ़क़िल ही में क़ियाम फ़रमा कर हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ वहाँ से रुख़सत हुये और फिर रामपुर के लिए अ़ज़्मे सफ़र किया,क्यों कि हज़रत ताजुश्शरीआ़ ने अलहाज ज़हूर अहमद रज़वी रुक्न जामिआ के बेहद इसरार पर उन की दअ़वत इस शर्त पर क़बूल फ़रमाई थी कि वह दअ़वत के लवाज़िमात के बेजा मसारिफ़ से गुरेज़ कर के

सिर्फ़ मूंग की खिचड़ी पकवायेंगे।

चुनांचि हज़रत ताजुश्शरीआ मद्दज़िल्लाहुल आली हस्बे वअ़दा तक़रीबन 11 बजे शब मौसूफ़ के मकान वाक़ैअ़ पुराना गंज पहुँचे,दस्तरख़्वान को ज़ीनत बख़्शी और दअ़वत दहिन्दा की ख़ातिर बुज़ुर्गो की आ़दत मुबारका के मुवाफ़िक़ चन्द लुक़्मों पर इक्तिफ़ा किया मगर अहले ख़ाना और दीगर हाज़िरीन को खुब खिलाया।

इस मौक़े पर मन्ज़ूर अहमद रज़वी,नबी अहमद क़ादरी ख़ाज़िन जामिआ,सग़ीर अहमद अज़हरी मुहासिबे जामिआ,अमीर अहमद सैफ़ी रज़वी, अलहाज शब्बीर अहमद रज़वी,जमील अहमद ख़ाँ रज़वी के ऐलावा बहुत से मुहिब्बीन व मुख़्लिसीन और अराकीन जामिआ मौजूद रहे। खाने से फ़राग़त पा कर हज़रत ताजुश्शरीआ दामत बरकातुहुमुल कुदसिया अपने ख़ादिम मौलाना शकील अहमद ख़ाँ साहब रज़वी,जो इस पूरे सफ़र में हज़रत के साथ रहे थे,को अपने साथ ले कर बज़रीआ कार शब को ही बरेली शरीफ़ के लिए रुख़सत हो गये।

नमाज़ के लिए ट्रेन का रुकना

11/ मार्च 2015 ई को हज़रत ताजुश्शरीआ, बनारस के लिए काशी विशनाथ एक्सप्रेस से रवाना हुये। अ़स्र की नमाज़ बरेली जंक्शन पर अदा फ़रमाई। मग़्रिब शाहजहानपुर में अदा की और इशा के वक़्त ट्रेन लखनऊ पहुँच गई। स्टेशन पहुँचने से पहले हज़रत बैतुलख़ुला गये, जब हाजत से फ़ारिग़ हुये,तो ट्रेन के छूटने का वक़्त हो गया,हज़रत जब बैतुलख़ुला से बाहर तशरीफ़ लाये

उस वक़्त तक ट्रेन रवाना नहीं हुई थी,मगर चन्द लमहा में ट्रेन चलने लगी,हज़रत नमाज़ इशा अदा करने के लिए जाये नमाज़ निकालने का हुक्म दे रहे थे,बरादरम मुहम्मद यूसुफ़ अख़्तर रज़वी ने बैग से जाये नमाज़ निकाली, हज़रत ने फ़रमाया मुसल्ला बिछा दो तो यूसुफ़ रज़वी ने कहा कि हुज़ूर ट्रेन चलने लगी है,हज़रत के हुक्म पर मुसल्ला बिछा दिया गया,जैसे ही मुसल्ला पर हज़रत ने क़दम रखा फ़ौरन ट्रेन रुक गई,हज़रत नमाज़ के लिए खड़े हो गये,ट्रेन में जगह तंग और हज़रत की नक़ाहत को देखते हुये,एक तरफ़ मुहिब्बे मोहतरम मुफ़्ती मुहम्मद शुऐब रज़ा क़ादरी और दूसरी तरफ़ यह राक़िमुस्सुतूर मामूली सहारा देते रहे। हज़रत ने इत्मीनान के साथ खड़े हो कर नमाज़ इशा अदा फ़रमाई बस सलाम फेरते ही ट्रेन चलने लगी,हज़रत ने सलाम फेरा,फिर फ़रमाया कि ट्रेन कहाँ पर है,राक़िम ने अर्ज़ किया हुज़ूर ट्रेन अभी प्लैट फ़ारम पर ही है। हज़रत ने फ़रमाया कि चलो अलहम्दु लिल्लाह नमाज़ अपने वक़्त पर अदा हो गई। इस करामत के ज़हूर के वक़्त मौलाना आशिक़ हुसैन कशमीरी, अलहाज मुहम्मद यूसुफ़ नूरी पोरबन्दर, अलहाज शाहनवाज़ हुसैन रज़वी(दुबई)मौजूद थे। (मुहर्रम 14/मार्च 2015 ई बरोज़ हफ़्ता बवक़्त इशा बरेली)

आँख का आपरेशन बग़ैर इंजक्शन

हज़रत ताजुश्शरीआ साउथ अफ़रीक़ा मारीशश हरारे,ज़िम्बावे तनज़ानिया वग़ैरा के तक़रीबन एक दरजन ममालिक के तब्लीग़ी सफ़र पर 14/मार्च 2015 को बरेली

शरीफ़ से रवाना हुये,क़ियाम दौलत कदा बरेली से ही आँख से कभी कभी ख़ून निकल रहा था,सभी लोगों ने हज़रत से इतना त़वील सफर करने से मना किया,मगर तारीख़ दे चुके थे,इस लिए वअ़दा ख़िलाफ़ी न हो,तशरीफ़ ले गये। आप के हमराह आप के स़ाहिबज़ादा गिरामी मौलाना अ़स्जद रज़ा क़ादरी भी थे। डरबन(साउथ अफ़रीक़ा) पहुँचने पर आँख में तकलीफ़ ज़्यादा बढ़ गई,22/अप्रेल 2015 ई को अस्पताल ले जा कर आँख के मशहूर और तजर्बाकार डाक्टर को दिखाया। उन्होंने कुछ दवायें तजवीज़ कीं और आप्रेशन का मशवरा दिया।

यह वह आँख है जिस का तक़रीबन 20 साल क़ब्ल बम्बई में आप्रेशन हो चुका था,उसी दौरान आँख के तहफ़्फ़ुज़ के पेशे नज़र प्लास्टिक के दो टुकड़े डाक्टर ने लगा दिए थे,वह टुकड़े उभर कर आ गये थे,इसलिए आँख से ख़ून बहने लगता था। डरबन के डाक्टर ने कहा कि इस आँख के आप्रेशन के ऐलावा कोई और त़रीक़ा नहीं है,जिस से इस पर कन्ट्रोल पाया जा सके। 24 अप्रेल 2015 को आप्रेशन की तारीख़ मुक़र्रर कर दी, हज़रत को मुरीदीन व अक़ीदत मन्द अस्पताल लेकर पहुँचे,आप्रेशन की तैयारियाँ मुकम्मल हो गई।

डाक्टर ने ह़ज़रत को आप्रेशन से क़ब्ल बेहोशी का इंजक्शन लगाना चाहा जैसा कि डाक्टरों का मामूल है मगर आप ने सख़्ती से मना फ़रमा दिया,कि इस त़रह के इंजक्शन में नाजाइज़ चीज़ों की अमीज़िश होती है और दूसरी नशीली अशया होती हैं,इसलिए मैं इंजक्श़न नहीं

लगवा सकता। डाक्टर साहब ने हज़रत को बहुत मुतमइन करने की कोशिश की मगर हज़रत ने इनकार फ़रमाया,फिर डाक्टर साहब ने हज़रत से दूसरी गुज़ारिश की कि इतना हिस्सा सुन कर देता हूँ,हज़रत इस पर भी तैयार नहीं हुये। और सुन करने से भी मना कर दिया। ऐन आप्रेशन के वक़्त डाक्टर साहब के साथ डाक्टरों का पूरा पैनल हज़रत को समझाने की कोशिश करता रहा,कि आप्रेशन बग़ैर सुन किए या बग़ैर इंजक्शन लगाये नहीं होता है,हज़रत ने बड़े इत्मीनान के साथ उन डाक्टरों के पूरे पैनल से फ़रमाया कि आप लोग बिल्कुल बे फ़िक्री के साथ मेरी आँख का अप्रेशन कीजिए,मैं किसी भी तरह की नाजाइज़ अशया का इस्तेमाल नहीं करता हूँ,और ना ही पसन्द करता हूँ,इन्शाअल्लाह तआ़ला मुझे कोई तकलीफ़ नहीं होगी,मेरे जददे अमजद ने भी बग़ैर इंजक्शन के आप्रेशन कराया था। आप लोग अपना काम करें। इस गुफ़्तगू के बाद डाक्टरों ने हिम्मत जुटाई और आप्रेशन का आग़ाज़ कर दिया। हज़रत बहुत मुतमइन और बिल्कुल साकित व जामिद बैठे रहे,तक़रीबन साढ़े तीन घन्टा आप्रेशन चला,और आँख में सात टांके लगे।आप्रेशन की तकमील तक आप की ज़ुबान मुबारक पर दुरूद शरीफ़ और क़सीदा बुर्दा शरीफ़ का विर्द जारी रहा। डाक्टर हज़रात यह नहीं समझ पा रहे थे कि आप क्या पढ़ रहे हैं मगर लबों की जुंबिश से महसूस होता था कि आप कुछ पढ़ रहे हैं।

आप्रेशन से फ़ारिग़ हो कर डाक्टर का तासिर हैरत

अंग्रेज़ था,उन्होंने सभी लोगों की मौजूदगी में कहा कि मैं दुनिया भर में जाता हूँ अब तक बग़ैर इंजक्शन लगाये मैंने या किसी और डाक्टर ने आप्रेशन नहीं किया,मगर यह शख़्सियत अपने आप में मुन्फ़िरद है। दुनिया का सब से नालाइक़ डाक्टर में हूँ, कि मैंने बग़ैर इंजक्शन लगाये आप्रेशन किया,और यह ज़ात दुनिया की वाहिद ज़ात है कि इतनी मज़बूत,हिम्मत और रूहानी कुव्वत वाली है कि साढ़े तीन घन्टे तक बिल्कुल जिस तरह बैठाया गया था बैठे रहे,ज़रा सी भी जुंबिश नहीं की,जब कि इस तरह के बड़े आप्रेशन में तकलीफ़ से आदमी तड़प उठता है,एक ज़रा सा कांटा चुभ जाने से आदमी कराह उठता है मगर यह शख़्सियत पूरी दुनिया में शायद वाहिद होगी,जिस के अन्दर मैं रूहानी और ईमानी कुव्वत देखता हूँ। डाक्टरों की पूरी टीम आप की इस्तिक़ामत पर हैरान थी।

हज़रत के दादा हुज्जतुलइस्लाम मौलाना हामिद रज़ा ख़ाँ बरेलवी कुद्दिसा सिर्रुहु ने भी,अपने अंगूठे का आप्रेशन जयपुर में बग़ैर इंजक्शन के कराया था और एक घन्टा तक आप्रेशन होता रहा,और आप सब्र व सुकून के साथ पंज गंज दुरूद शरीफ़ का विर्द करते रहे,यहाँ तक कि आप्रेशन मुकम्मल हो गया। (4 मई 2015 बरोज़ पीर)

डाक्टर झूटा रिपोर्ट झूटी

हज़रत ताजुश्शरीआ की तक़रीबन एक माह के सफ़र से बरेली शरीफ़ वापसी हुई। ईदुल फ़ित्र की नमाज़ ईद गाह बाक़रगंज में पढ़ाई। चन्द अय्याम गुज़रे थे कि 25/जुलाई 2015 ई को बाद नमाज़ मग़रिब लगातार

चार उल्टियाँ हुई उल्टी बिल्कुल काली थी फ़ौरन साहबज़ादा गिरामी मौलाना अस्जद रज़ा ख़ाँ साहब ने डाक्टर परवेज़ नूरी सिद्दीक़ी को फोन कर के बुला लिया,उन्होंने चेकप किया,ख़ून की जांच की रिपोर्ट हासिल करने के लिए सेन्टर भेज दी,दवा तजवीज़ की और दवा खाने पर उल्टियाँ बन्द हो गई। बाद नमाज़े इशा तक़रीबन रात के दस बजे होंगे,कि डाक्टर साहब तशरीफ़ लाये,कहने लगे कि फ़िक्र मन्द की बात यह है कि हज़रत ने सुबह सिर्फ़ आधी रोटी तनावुल की थी उस के बाद पूरा दिन गुज़र चुका है कुछ भी नहीं खाया और काली उल्टी हो गई,इस लिए मेरा मशवरा है कि आप देहली ले जाइये। मौलाना अस्जद मियाँ ने हज़रत से देहली चलने के लिए कहा फ़रमाया कि नमाज़ पढूँगा। हज़रत ने नमाज़ अदा फ़रमाई दूर दराज़ से आये हुये लोगों को मुरीद किया,मुलाक़ातें फ़रमाई फिर अन्दरून ख़ाना तशरीफ़ ले गये और आराम करने लगे। अस्जद मियाँ फिर हज़रत के पास पहुँचे,देहली चलने के लिए कहा,तो हज़रत ने फ़रमाया कि मेरी तबीअत बेहतर है और मैं अब आराम करूँगा,डाक्टर की रिपोर्ट झूटी है।

मौलाना अस्जद मियाँ बरादरम दानिश रज़ा और राक़िमुस्सुतूर(लेखक)रात भर नहीं सोये फ़िक्र दामन गीर रही रात तक़रीबन डेढ़ बजे डाक्टर अनीस बेग और डाक्टर शर्दअग्रवाल से मौलाना अस्जद मियाँ ने बात की 2015 ई सुबह 6 बजे जांच करने के लिए राम पुर गार्डन से दो साहिबान आ गये,चेक करने के लिए ख़ून ले गये।

दस बजे बरादरम दानिश रज़ा रिपोर्ट लेने के लिए पहुँचे रिपोर्ट में कुछ वाज़ेह नहीं हो रहा था,फिर डाक्टर अनीस बैग आ गये और अपने हास्पिटल में चलने का मशवरा दिया,11बजकर 45 मिनट पर हज़रत सौदागरान से"बैग हास्पिटल" के लिए रवाना हुये,हास्पिटल में हज़रत के पहुँचने की ख़बर ने शहर में हल चल मचा दी,गली कूचे हास्पिटल के दरो दीवार इंसानी सैलाब से भर गये थे। हज़रत के गुर्दा का एक्सरे हुआ। शुगर,ब्लडप्रेशर वग़ैरा की जांचे हुई,एक दिन और एक रात हास्पिटल में गुज़ार कर 27/जुलाई को 12बजे घर वापस तशरीफ़ लाये। डाक्टर शरदअग्रवाल ने नब्ज़ की तशख़ीस़ और जांच रिपोर्टो के बाद बताया कि हज़रत की त़बीअ़त में काफ़ी सुधार हुआ है और त़बीअ़त बेहतर है।

दौराने इलाज शदीद बीमारी में हज़रत ने तमाम नमाज़ें खड़े हो कर पढ़ीं,फ़राइज़ तो फ़राइज़ सुन्नत भी खड़े हो कर अदा की,कभी कभी कमज़ोरी की वजह से खड़े होने में दिक़्क़त हो जाती थी,तो बरादरम यूसुफ़ अख़्तर हलका सा सहारा दे दिया करते थे। रोज़ाना के मामूलात औराद व वज़ाइफ़ में बिल्कुल फ़र्क़ नहीं आने दिया,मौलाना आ़शिक़ हुसैन कशमीरी और मुफ़्ती शुऐब रज़ा क़ादरी को बराबर इल्मी मौज़ूआ़त पर इमला कराते रहे और मुसलसल तस्नीफ़ व तालीफ़ व दीगर फ़तवाजात व तर्जमा पर तहरीरी काम भी जारी रहा।

ज़ाहिरी हालत में दूर रह कर दीदार और जिन्नात से हिफ़ाज़त

27/जुलाई 2015 ई को मैं अपने आफ़िस में बैठा हुआ था,हज़रत से मिलने वालों का बे पनाह हुजूम

था,इसी दरमियान तीन या चार शख़्स़ काफ़ी लम्बे तड़ंगे आफ़िस में दाख़िल हुये,सलाम व दुआ़ के बाद कहने लगे,कि आप ने मुझे पहचाना,मैंने कहा कि हाँ चेहरा पहचान रहा हूँ,मगर नाम याद नहीं आ रहा है,उन में एक बुज़ुर्ग शख़्स़ियत थी,सफ़ेद दाढ़ी थी,नूरानी चेहरा और इस पर सफेद कपड़े और सर पर सफेद रूमाल व टोपी ने चेहरा को निहायत बा रौनक़ बना दिया था। उन्होंने जेब से मुजल्लद एक छोटी सी पाकिट साइज़ की किताब को मेरी त़रफ़ बढ़ाते हुये कहा कि देखिये यह क्या है। मैं ने देखा तो वह शजरा शरीफ़ था,अन्दर खोला तो मौस़ूफ़ का नाम मेरे हाथों से हाजी अह़मद अ़ली क़ादरी रज़वी जम्मू व कश्मीर लिखा हुआ था,वह 2 फरवरी 2007 को ह़ज़रत से दाख़िले सिलसिला हुये थे।

ह़ाजी अह़मद अ़ली रज़वी के हमराह मौलाना दिल मुह़म्मद रज़वी मरहूम के स़ाह़िबज़ादे महमूद अह़मद रज़वी,एडवोकेट हाई कोर्ट जम्मू कशमीर भी थे। ह़ाजी स़ाह़ब ने अपने स़ाह़बज़ादे आफ़ताब अह़मद का तआ़रूफ़ कराते हुये बताया कि उन को मुरीद कराने के लिए लाया हूँ,बोले कि वाक़िआ़ यह हुआ कि उस के ऊपर जिन्नात के असरात हैं,अकसर ह़ाज़िरी हो जाती है।

एक बार जिन्नात इस के ऊपर हमला आवर हो गये,मैं घबरा गया कि अब क्या करूँ,कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि दफअ़तन मेरी ज़बान से यह आवाज़ निकली कि "तुम जानते हो सर परस्ती कौन कर रहे हैं और मैं किस बुज़ुर्ग का मुरीद हूँ" कि इतने में ह़ज़रत

ताजुश्शरीआ मेरी पुश्त की तरफ़ खड़े थे कि आफ़ताब अहमद ने देखा और घबरा गया, उस के ऊपर जो जिन्नात के असरात थे,वह काफूर होते नज़र आये,उस के मुंह से यह आवाज़ सुनाई देती रही कि अब मैं नहीं आऊँगा,अब मैं नहीं आऊँगा आफ़ताब अहमद की ख़्वाहिश हुई कि जिस पीर से आप मुरीद हैं उन के पास मुझे ले चलिए,मैं भी उन्हीं से मुरीद होना चाहता हूँ,पहले में ज़्यारत करूँगा फिर मुरीद हूँगा। हाजी साहब हज़रत कि नशिस्त गाह में गये बग़ैर कुछ कहे आफ़ताब अहमद कहने लगे कि यही शख़्सियत है,जिन को मैंने देखा तो उन्हीं की हैबत और रूहानी फैज़ान ने जिन को भागने पर मजबूर कर दिया था। फिर आफताब अहमद हज़रत के दस्ते हक परस्त पर मुरीद हो गये,चार लोगों को राक़िम ने शजरा शरीफ़ दिया और बहुत ख़ुश हो कर,जम्मु कश्मीर के लिए रवाना हो गये,अल्लाह तआला उन को इसी तरह से पीर व मुरशिद का फ़ैज़ान नसीब फ़रमाये। (आमीन सुम्मा अमीन)

प्लेन का लेट हो जाना

आवाइल 1992 ई की बात है कि राक़िमुस्सुतूर हज़रत के हमराह बतौर ख़ादिम पहली बार लम्बे सफ़र कलकत्ता गया,हज़रत का क़ियाम जनाब मुहम्मद अय्यूब ख़ाँ रज़वी मरहूम के दौलतकदा पर था, दो दिन के क़ियाम और मुख़्तलफ़ जगहों पर इजलास व दअ़वत व तब्लीग़ के प्रोग्राम में शिरकत करने के बाद,शब 3 बजे क़ियाम गाह पर वापसी हुई,हज़रत ने फ़रमाया अब

मुख़्तसर सा वक़्त बचा है,नमाज़ फजिर पढ़ कर सोया जाये,अय्यूब साहब चाये लेकर हाज़िर हुये,इसी वक़्फ़ा में हज़रत ने मुझे कुछ लिखने का हुक्म फ़रमाया, मैंने वह मरासिला तैयार किया। इतने में फजिर की अज़ान होने लगी। नमाज़ जमाअत से पढ़ी गई,फिर मुसलसल सफ़र की थकावट की वहज से नींद फ़ौरन ही आ गई,11बजे बेदार हुये,फिर चलने की तैयार होने लगी,शाम को चार बजे की फलाइट दमदम एयरपोर्ट से देहली के लिए थी। नाश्ता और खाना एक साथ किया,नमाज़ ज़ोहर घर पर अदा हुई शब ही में फलाइट के दो टिकट अय्यूब मरहूम ने ला कर मुझे दिए थे,वह टिकट मैंने हज़रत की तकिया के नीचे रख दिए थे। इस ख़्याल से कि चलते वक़्त"सदरी"की जेब में रख लूँगा मगर मैं भूल गया।एयर पोर्ट चलने की तैयारी होने लगी,हज़रत ने अपनी सदरी मुझे ऐनायत फ़रमाते हुये कहा कि उस को पहन लो मैंने हज़रत की सदरी पहन ली,और अकसर दौराने सफ़र हज़रत की सदरी मैं ही पहन लिया करता था,हज़रत बहुत कम सदरी पहनते थे,मगर सदरी साथ में ज़रूर रखते थे,उस की वजह यह थी कि उस में ज़रूरी कागज़ात, पास्पोर्ट, टिकट, क़लम और दवा वग़ैरा रखे जाते थे,जब एयरपोर्ट के लिए चलने लगे तो हज़रत ने फ़रमाया कि सब सामान रख लिया है,मैं ने अर्ज़ किया हुज़ूर सारा सामान रख लिया है। हज़रत मुतमइन हुये,गाड़ी में बैठे कुछ ही दूर चले थे,कि फिर फ़रमाया कि सामान चेक कर लिया है, मैंने फिर वही जवाब दिया कि

सब चेक कर लिया है। जब एयरपोर्ट के क़रीब पहुँचे फ़रमाया कि एक एक सामान चेक किया है मैंने अ़ज़ किया कि हुज़ूर हाँ,फिर फ़रमाया कि टिकट कहा है,बस इतना कहना था कि फ़ौरन याद आया कि टिकट तो तकिया के नीचे ही रह गया। स़दरी के चारों जेब चेक किए मगर टिकट तो मैंने रखा ही नहीं था। वह भूल गया था। एयरपोर्ट बिल्कुल क़रीब था प्लेन का वक़्त बिल्कुल आधा घन्टा बचा था,मैं फ़ौरन अय्यूब रज़वी के साथ घर वापस आया,यह वक़्त बहुत ट्रेफिक के रश का होता है घर गया एक घन्टा लगा,इधर लोग ह़ज़रत से प्लेन के ताख़ीर से उड़ने के लिए दुआ़ कराने लगे। जब मैं टिकट लेकर वापस पहुँचा तो मालूम हुआ कि दो घन्टा प्लेन लेट है,बहुत आराम से बोर्डिंग कराया। तब पता चला कि ह़ज़रत शुरू ही से याद दिहानी करा रहे थे,और यह ह़ज़रत की ज़िन्दा करामत है कि मैं टिकट भी ले आया पिलेन लेट हो गया,बहुत सारे लोग ताख़ीर की वजह से दाख़िले सिलसिला भी हो गये। यह है औलिया किराम का मर्तबा यह है अहलुल्लाह की शान।

(9 अगस्त 2015 ई बरोज़ हफ़्ता)

मस्जिद में चन्दा

1997 ई की बात है कि सूबाए बिहार का राक़िमुस्सुतूर ने ह़ज़रत की त़रफ़ से प्रोग्राम दे दिया था यह तारीख़ें तक़रीबन दस दिन की थीं,हर एक दिन ह़ज़रत के तीन से चार इजलास हुआ करते थे। और ऐसा ख़ाका तैयार किया था कि जिस जगह से ह़ज़रत

चलेंगे और जहाँ तक जाना है तो लबे सड़क से मुत्तसि़ल जितने भी गाँव और क़स्बे होंगे सभी जगह 15 मिनट ह़ज़रत रुक कर बैअ़त व इरशाद फ़रमायेंगे,इस त़रह़ उन दस दिनों में दरजनों प्रोग्राम हो गये। और दरजनों गाँव व देहात के इलाक़ों में ह़ज़रत के कुदूम मैमनत लुज़ूम पहुँच गये तक़रीबन आधा सूबाए बिहार आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी और ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ्तीए आ़ज़म कुद्दिसा सिर्रुहु के फ़ैज़ान से माला माल हो गया था।

ह़ज़रत शहरे किशन गंज से बहादुर गंज जाते हुये मुफ़्ती मत़ीउर्रह़मान मुज़तर रज़वी और ख़्वाजए इल्म व फन ह़ज़रत ख़्वाजा मुज़फ़्फर हुसैन रज़वी मरहूम के गाँव तशरीफ़ ले गये। रास्ते में एक स़ाह़ब ग़ालिबन मौलाना मुफ़्ती अय्यूब मज़हर क़ादरी के भाई या क़रीबी रिशतेदार मिले,वहाँ से आगे बढ़े होंगे कि एक मस्जिद या मदरसा की तामीर हो रही थी। चन्दा की अपील का बैनर लगा हुया था मअ़न मुझे ख़याला आया कि यह ग़रीब मुसलमानों का इलाक़ा है,यहाँ मदद होना चाहिए, मेरे पास इतने रुपये भी नहीं हैं कि मैं फिलहाल उनकी मदद कर दूँ,मैं अपने ज़हन व ख़्याल में सोचता हुआ जा रहा था,गाड़ी तेज़ रफ़्तारी के साथ बढ़ रही थी,आगे ही कुछ फ़ास़ले पर क़ियाम गाह थी। क़ियाम गाह पर पहुँचे सामान गाड़ी से ला कर कमरा में रखा,ह़ज़रत कुछ देर के लिए आराम करने लगे,जब बेदार हुये फ़रमाया कि तुम इस वक़्त क्या सौच रहे थे, बैग मैं फलाँ जगह का

नज़राना रखा होगा,उस को ले लो और जा कर उस मस्जिद या मदरसा में तआउन कर दो,यह निहायत ही अच्छा अ़मल है। अल्लाह ऐसे लोगों को बेतरीन जज़ा देता है।

मैं ने अ़र्ज़ किया हुज़ूर मैं वाक़ेई यही सोंच रहा था कि उन की मदद होनी चाहिए। आप ने कश्फ़ के ज़रीऐ मेरे दिल का ह़ाल जान लिया है। अब मैं वहाँ के जो ज़िम्मे दार होंगे उन से मिलकर आप की त़रफ़ से तामीर मस्जिद में चन्दा दूँगा। फिर फ़रमाया कि जा कर तआ़उन करो मगर नाम के इज़हार की ज़रूरत नहीं है। मैंने एक मोटरसाइकिल वाले को साथ में लिया और अकेले ही चला गया। मुतवल्ली स़ाह़ब से मुलाक़ात हुई मैं ने सिर्फ़ अपना इतना तआ़रूफ़ कराया कि मैं बरेली शरीफ़ से ह़ाज़िर हुआ हूँ,फ़लाँ जलसा में आया हूँ,यह दस हज़ार रुपये मस्जिद की तामीर में बत़ौर तआ़उन ह़ाज़िर हैं। वह बहुत खुश हुये।

ह़ज़रत दिलों का ह़ाल जानते हैं। अपने मुरीदीन व खुद्दाम के जज़बात व एहसासात की क़द्र करते हैं। यही औलियाए किराम व मुक़र्रिबाने बारगाहे इलाही की पहचान है। (17 अगस्त 2015 ई)

कैंसर से निजात

अजीज़म अ़ब्दुल्लाह रज़वी साकिन महल्ला मलूकपुर बरेली किसी कम्पयूटर कम्पनी में मुलाज़िमत करते हैं। डाक्टर ने आप को कैंसर का मर्ज़ बता दिया। बरेली से देहली पहुँचे यहाँ जांच करा कर टाटा कैंसर

हास्पिटल में जांच के लिए पहुँचे सभी ने कैंसर जैसे महलक मर्ज़ के होने की बात कह दी। मौसूफ़ फ़ौरन अपने पीर व मुरशिद हज़रत ताजुश्शरीआ की ख़िदमत में हाज़िर हुये और ज़ार व क़तार रोने लगे,हज़रत ने दरयाफ़्त किया कि क्यों रो रहे हो,ख़ादिम ने कहा कि हुज़ूर डाक्टरों ने कैंसर बता दिया है,जांच रिपोर्ट में भी कैंसर के नुमाया निशानात बताये हैं। हज़रत ने डाक्टर पर गुस्सा होते हुये फ़रमाया कि डाक्टर झूटा और डाक्टर की रिपोर्ट झूटी, फिर क़रीब आने का इशारा फ़रमाया। हज़रत बहुत देर तक अब्दुल्लाह रज़वी पर पढ़ पढ़ कर दम करते रहे। अभी चन्द माह क़ब्ल राक़िम को घर जाते हुये रास्ते में मिल गये,मैंने मालूम किया कि आप की तबीअत कैसी है, कहने लगे कि जिस दिन से हज़रत ने दम फ़रमाया है उसी दिन से मुझे बड़ी राहत मिली और कैंसर का मर्ज़ काफूर हो गया। अब जांच रिपोर्ट में बिल्कुल ही कैंसर का कहीं नाम व निशान नहीं है। यह सब पीर व मुरशिद की दुआ का असर है वरना मेरे घरवाले यह समझ रहे थे कि अब मेरी ज़िन्दगी के चन्द ही अय्याम रह गये हैं, मगर मेरे पीर व मुरशिद की यह ज़िंदा करामत है कि मैं आप के सामने सही व सालिम खड़ा हूँ। और कम्पनी भी जवाइन कर ली है और मैं बहुत अच्छी तरह से काम कर रहा हूँ। (22/सितम्बर 2015 ई)

नमाज़े जनाज़ा के बाद बारिश

शैरे बेशाए अहले सुन्नत मौलाना हशमत अली ख़ाँ पीली भीती अलैहिर्रहमा के साहबज़ादे मौलाना अहमद

मशहूद रज़ा का 19 सितम्बर 2015 ई को इन्तिक़ाल हो गया। इन्तिक़ाल की इत्तिलाअ़ हज़रत ताजुश्शरीआ़ को कराई कि मौलाना अह़मद मशहूद रज़ा स़ाह़ब ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने के लिए ह़ज़रत के नाम वस़ीयत की है। मौजूदा वक़्त में बरेली शहर से पीलीभीत का रास्ता वाया नवाबगंज बहुत ख़राब है रोड पर ईंट पत्थर का काम चल रहा है। निहायत ख़राब रास्ता होने के बावजूद भी ह़ज़रत ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने की मन्ज़ूरी अ़ता फ़रमा दी।

इसी ख़ानवादा के जवाँ साल बरादरम बरकात रज़ा क़ादरी बरकाती बिन मौलाना मुह़म्मद मियाँ रज़वी बिन मुल्लाह लियाक़त हुसैन ख़ाँ रज़वी मरहूम महल्ला सुर्ख़ा बरेली शरीफ़ शरीक नमाज़ जनाज़ा थे। बरेली वापसी पर बयान किया कि मैंने किसी ह़दीस की किताब में पढ़ा था कि नमाज़ जनाज़ा के बाद अगर बारिश हो जाती है तो स़ाह़िब–ए–मय्यत की बख़्शिश हो जाती है। मैंने ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ से अ़र्ज़ किया हुज़ूर आप नमाज़ पढ़ायेंगे साथ ही बारिश की दुआ़ भी फ़रमा दें ताकि यह रह़मत की बरकत से मेरे मामूँ अह़मद मशहूद रज़ा स़ाह़ब मरहूम की बख़्शिश का सामान फ़राहम हो जाये। ह़ज़रत ने 25 हज़ार पर मुश्तमिल अफ़राद की इमामत फ़रमाई और देखते ही देखते आस्मान पर बारिश के आसार नुमाया हो गये। और फ़ौरन बारिश होने लगी। यह है ह़ज़रत की दुआ़ की मुस्तजाबियत और स़ाह़िब–ए–मय्यत की नेकी की दलील। अल्लाह तआ़ला मरहूम को ग़रीक़ रह़मत फ़रमाये अमीन। (22/सितम्बर 2015 ई)

ऐसी कैफ़ियत कभी नहीं देखी

गालिबन जनवरी 1996 ई की बात है कि राक़िमुस्सुतूर(लेखक) हज़रत ताजुश्शरीआ के हमराह लुधियाना (पंजाब)के तब्लीगी सफर पर था। जनाब ऐनुलहक़ रज़वी की दअ़्वत पर लुधियाना पहली बार हज़रत का जाना हुआ। दिन में महल्ला ग़्यासपुरा में एक मदरसा का संगे बुनियाद रखा कि शब में जलसा का एहतिमाम था। जलसा में तक़रीबन दो लाख इंसानों का हुजूम था,ऐसा लगता था कि जैसे पूरा सूबा पंजाब आज लुधयाना में जमा हो गया है। हज़रत तक़रीबन एक बजकर कुछ मिनट पर जलसा गाह में तशरीफ़ ले गये। नअ़रों के पुर हुजूम शोर ने हज़रत के मिज़ाज को बरहम कर दिया, फिर मैंने हज़रत का मिज़ाज बनाया और अ़वाम को ख़ामोश किया। हर मुक़र्रिर व शाइर हज़रत की शान में मन्क़बत पढ़ता था। हज़रत ने मना फ़रमाया कि मेरी क़सीदा ख़्वानी के बजाये इस्लाम व सुन्नियत पर तक़रीर करें और शोअ़रा नअ़्ते रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पढ़ें। इख़्तितामे इज्लास से क़ब्ल तक़रीबन 75 हज़ार फ़रज़न्दाने तौहीद ने हज़रत के हाथ में अपना हाथ दे कर ग़ौसे आ़ज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की गुलामी का पटटा डालने का ओ़हद व पैमान किया।

वहीं पर चन्द वहाबी देवबन्दी भी जलसा सुनने और हज़रत का दीदार करने आये थे। हज़रत को देखते ही मिम्बर पर आ गये। किसी ने मुझ से कहा कि यह

लोग आप से बात करना चाहते हैं। मैं उन की त़रफ़ मुतवज्जोह हुआ,कहने लगे कि हम लोग मौलवी क़ासिम नानौतवी के क़स्बा नानोतन के रहने वाले हैं,यहाँ एक फ़ैक्ट्री में काम करते हैं। ह़ज़रत जैसी नूरानी शख़्सियत आज तक हम ने नहीं देखी है। और आज हम ने सुन्नी और देवबन्दी का फ़र्क़ समझा है,इसलिए अब हम ह़ज़रत के हाथ पर तौबा व रजूअ़ इलल्लाह करना चाहते हैं। मैं फ़ौरन ह़ज़रत के पास ले गया,पूरा वाक़िआ बयान किया। ह़ज़रत ने तौबा व तजदीदे ईमान कराया। दाख़िले इस्लाम व सुन्नियत फ़रमा कर मुरीद किया। ग़ालिबन पाँच लोग थे। यह है ह़ज़रत के चेहरए ज़ेबा की जुफ़ेशनियाँ जिन की नूरानी शुआओं से नज़रें ख़ैरा हो जाती हैं, और दिल व दिमाग़ की सलत़नत बदल जाया करती है।

दूसरे दिन लुधियाना से सहारनपुर जाना था,ह़कीम मुहम्मद अहमद क़ादरी मोहतमिम दारुलउ़लूम ग़ौसिया रज़विया बरकात स़ाबिर सहारनपुर से ह़ज़रत मुलाक़ात करना चाहते थे। मुझे रास्ता मालूम नहीं था,सहारनपुर दो पहर 12 बचे पहुँचे,एक जगह रास्ता मालूम किया तो बताया गया कि बरेलवी मस्जिद पूछिये तो हर आदमी बतादेगा। फिर हर जगह मैं "बरेलवी मस्जिद" की जगह का पता मालूम करता रहा, कहीं कोई दिक़्क़त नहीं आई और मुहम्मद अहमद स़ाहब की ख़ानक़ाह में पहुँच गये,हकीम स़ाहब और अहबाब की मुसर्रतों की इन्तिहा न थी। दो घन्टा क़ियाम कर के वापस लुधियाना आये,और

ट्रेन का इन्तिज़ार करने लगे। मुझ से बेवकूफ़ी यह हुई कि स्टेशन से गाड़ी वाले को वापस भेज दिया, इस ख़्याल से कि अब ट्रेन का वक़्त हो गया। कहाँ यह परेशान होंगे और इन्तिज़ार करेंगे। मगर प्लेटफ़ॉर्म पर पहुँच कर मुझे अपनी ग़लती का एहसास हुआ कि ट्रेन तो दो घन्टा लेट है। सामान प्लेटफ़ॉर्म पर रखा और कुर्सी पर हज़रत बैठ गये। कुछ देर बाद टहलने लगे,नमाज़ का वक़्त हुआ ज़ोहर और अस्र की नमाज़ एक ही वज़ू से प्लेटफ़ॉर्म पर पढ़ी,ट्रेन का ऐअ़लान हुआ कि पंजाब मील आधा घन्टा और लेट हो गई है। मैं दिल ही दिल में यह महसूस कर रहा था कि हज़रत नाराज़ होंगे,मगर हज़रत उस दिन बहुत खुश थे। इस दिन प्लेटफ़ॉर्म पर कम ही आदमी थे,मैं हज़रत के साथ पूरे प्लेटफ़ॉम पर टहलता रहा,हज़रत छड़ी लिए टहलते हुये बहुत खुश नज़र आ रहे थे,हज़रत के चेहरे मुबारका पर इतनी ज़्यादा खुशी के आसार लबों पर मुसकुराहटें,और गुफ़्तगु में लत़ाफ़त बर्क़ रफ़्तारी,मुतानत व संजीदगी मैंने कभी नहीं देखी। उस दिन का नुक़्शा आज भी मेरे क़ल्ब व ज़हन पर नक़्श है। जब याद करता हूँ तो हर चीज़ ज़हन के पर्दे पर उतर कर मेरी नज़रों के सामने आ जाती है,कि आज हज़रत की ख़ुशी व मसर्रत का राज़ क्या है। मैंने सालहा साल के त़वील सफ़र के दौरान ऐसी त़मानियत व रूहानियत नहीं देखी। तक़रीबन 3घन्टा का लम्बा इन्तिज़ार मालूम ही नहीं हो सका कि कब शुरू हुआ और कब जाकर ख़त्म हो गया।

कंजुलईमान तस्ही शुदा की इशाअत का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ

गुज़श्ता दिनों ग़ालिबन ईदुलअज़हा के दूसरे दिन 11ज़िलहिज्जा 1436 हिजरी 26 सितम्बर 2015 ई को राक़िमुस्सुतूर से मुलाक़ात के लिए हज़रत मौलाना मुहम्मद यामीन नईमी साहिब उस्ताज़ जामिआ नईमिया मुरादआबाद व मालिक नईमिया बुकडिपो देहली दफ़्तर में तशरीफ़ लाये। आप से राक़िम के क़दीमी मरासिम हैं। पुराने कुतुब ख़ाना का हाल दरयाफ़्त करने पर उसकी पूरी तारीख़ बयान कर दी। फिर मैंने मालूम किया कि आप की तहरीक पर हज़रत ताजुशशरीआ ने "तर्जमा कुरआन कंजुलईमान" की तस्हीह फ़रमाई थी,उस की तफ़सीलात ज़हन में मौजूद हो तो गी बयान कर दें।

हज़रत मौलाना यामीन नईमी साहब क़िब्ला ने बताया कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की हयात में सदरूलअफ़ाज़िल हज़रत मौलाना सय्यद नईमुद्दीन मुरादआबादी ने"कंज़ुलईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"की किताबत करा कर सब से पहले मुरादआबाद से तबअ़ कराया। और तबाअ़त का काम बड़े ऐहतिमाम से किया था। उस के बाद एक तवील अ़र्सा गुज़र गया कि "कंजुलईमान" की इशाअ़त नहीं हुई,जब कि मौलवी अशरफ़ अ़ली थानवी और मौलवी अबूलउ़ला मौदूदी के तर्जमा कुरआन की बराबर इशाअ़त हो रही थी उसी दरमियान चितली क़ब्र चूड़ी वालान देहली में एक पंजाबी सिख को उर्दू की मज़हबी किताबों की इशाअ़त का शौक़ पैदा हुआ। उस ने"कुतुब ख़ाना इशाअ़तुलइस्लाम"

के नाम से एक मकतबा क़ाइम किया,देहली की सर ज़मीन से पहली बार और हिन्दुस्तान में दूसरी बार इस पंजाबी सिख ने कंज़ुलईमान शाइअ़ किया। कंज़ुलईमान की इशाअ़त पर जमाअ़ते अहले सुन्नत में बहुत ख़ुशी व मसर्रत महसूस की गई। यह सिलसिला सालों चलता रहा,1990 ई में मौलाना यामीन नईमी का कुतुबख़ाना इशाअ़तुलइस्लाम देहली जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ,कुतुब ख़ाना ने ज़मीर को झंझौड़कर रख दिया। देहली से आ कर आप ने सब से पहले यह पूरा माजरा हज़रत मौलाना मुबीनुद्दीन अमरोहवी अ़लैहिर्रहमा को सुनाया,आप ने यह अ़ज़्म मुसम्म कर लिया था कि कंज़ुलईमान की इशाअ़त हम करेंगे। हज़रत मुहद्दिस अमरोहवी ने आप की हौसला अफ़ज़ाई की और रहनुमाई करते हुये फ़रमाया कि मौलाना बरेली शरीफ़ चले जाइये,और ख़ान्वादाए आ़ला हज़रत की बुज़ुर्ग शख़्सियात से पूरा वाक़िआ़ बयान करिये इंशाअल्लाह तआ़ला कोई न कोई सबील ज़रूर निकलेगी। आप दो साल तक ग़ौर व फ़िक्र करते रहे और दर्द व कुर्ब बढ़ता रहा,1993 ई में आस्तानाए आ़लिया रज़विया पर हाज़िर हुये। हाज़िरी से क़ब्ल की शब में आप ने ख्वाब देखा कि मैं किसी तकलीफ़ में कुछ बयान कर रहा हूँ,कुरआन शरीफ़ की तिलावत कर रहा हूँ कि इतने में हज़रत ताजुश्शरीआ़ तशरीफ़ ले आये मुलाक़ात हुई,ख़्वाब में मज़ीद और क्या बात हुई यह याद नहीं रहा। इस ख़्वाब की ताबीर आप ने यह समझी कि मुझे बरेली शरीफ़ फ़ौरन हाज़िर होना चाहिए। आप दूसरे दिन बरेली

पहुँचे,सब से पहले आस्तानाए आ़लिया रज़विया पर हाज़िरी देने के बाद आप ने इरादा किया कि अब ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ और ह़ज़रत मुफ़्ती क़ाज़ी अ़ब्दुर्रह़ीम बस्तवी स़ाह़ब अ़लैहिर्रहमा स़दर मरकज़ी दारूलइफ़्ता बरेली शरीफ़ से शर्फ़ मुलाक़ात ह़ासिल कर के अ़र्ज़ मुद्दआ़ करूँ।

आप का बयान है कि मैं जैसे ही आस्ताना शरीफ़ से हाज़िरी देकर चौखट पर पहुँचा ही था कि पीछे से ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ तशरीफ़ ले आये। मअ़न ह़ज़रत ने फ़रमाया कि कई दिनों से आप का ख़्याल ज़ेहन में आ रहा था कि ख़त़ लिख कर आप को बुलाऊँ,मगर प्रोग्राम की मस़रूफ़ियात में मोहलत नहीं मिल पाती थी। बहुत अच्छा हुआ कि आप से यहाँ मुलाक़ात हो गई,आप यहीं रुकें,मैं अन्दर जा कर सलाम अ़र्ज़ कर के आ रहा हूँ। आस्ताना शरीफ़ से बाहर निकलने पर हज़रत ताजुश्शरीआ़ ने मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया और अपनी नशिस्तगाह में ले आये। फिर आप ने कंज़ुलईमान की इशाअ़त का एक ख़ाका हज़रत के सामने पेश किया,और पंजाबी सिख की इशाअ़त में ख़ामियाँ बताईं। ह़ज़रत बहुत ख़ुश हुये,फ़रमाया कि मैं ख़ुद यही चाह रहा था कि उस की तस्ह़ीह हो जाये फिर इशाअ़त की जाये। यह ह़ज़रत की करामत ही है कि दिल का ह़ाल मालूम कर लिया,एक अ़ज़ीम इशाअ़ती ख़ाका की ताईद व ह़िमायत फ़रमा कर मौलाना यामीन नईमी के इरादों को इस्तेहकाम अ़त़ा कर दिया।

आप ने बताया कि हज़रत ताजुश्शरीआ़ की सर बराही में 1993 ई में''कुरआन कम्पनी बरेली''के नाम से एक इशाअ़ती इदारा का नाम दिया गया। इसी इदारा के नाम से कंज़ुलईमान की इशाअ़त हुई,तस्ह़ीह़ की मुकम्मल ज़िम्मेदारी ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ ने अंजाम दी,और वक़्तन फ़वक़्तन अ़ल्लामा मुफ़्ती क़ाज़ी अ़ब्दुर्रहीम बस्तवी मुआ़विनत करते थे,ह़ज़रत ने पूरे कंज़ुलईमान में किताबत की तीन सौ ग्यारह ग़लतियाँ निकालीं। तस्ह़ीह का त़रीक़ा यह था कि ह़ज़रत मरकज़ी दारूलइफ़्ता में रौनक़ अफ़रोज़ होते और सामने कंज़ुलईमान होता तस्ह़ीह दर तस्ह़ीह में ग़ल्तियों के इम्कान को ख़त्म करने के लिए ह़ज़रत ने हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से शाइअ़ शुदा 11 नुस्ख़े जमा किए,अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा त़बअ़ शुदा नुस्ख़ों का तक़ाबुल करते और हर एक नुस्ख़े को दूसरे नुस्ख़े से मिलाते थे। ह़ज़रत के सामने ह़ज़रत सदरुलअफ़ाज़िल अ़लैहिर्रह़मा का मत़बूआ़ नुस्ख़ा भी पेश नज़र रहा है। मुकम्मल एक साल की मेहनत शाक़्क़ा के बाद कंज़ुलईमान की किताबत मुरादआबाद में हो कर मन्ज़रे आ़म पर आया। ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ ने अपनी जेबे ख़ास़ से इशाअ़त के लिए चालीस हज़ार रुपये मौलाना यामीन नईमी स़ाह़ब को दिए। यही तस्ह़ीह शुदा नुस्ख़ा अब मुतअ़द्दिद बार शाइअ़ हो चुका है। यह उस दौर की बात है जब एक छोटी सी किताब को छपवाने के लिए मुस़न्निफ़ीन सरमायादारों के चक्कर लगाया करते थे,मगर अब ह़ालात बदल चुके हैं,जमाअ़त अहले सुन्नत के पास

सरमाया की कोई कमी नहीं है,और न ही इदारों के पास कोई कमी है।

मौलाना यामीन नईमी साहब का ख़्वाब में हज़रत ताजुश्शरीआ को देखना,हज़रत मुहद्दिसे अमरोहवी की रहनुमाई,फिर हाज़िरी, दरे आस्ताना पर हज़रत से अचानक मुलाक़ात, हज़रत का इशाअत के लिए आप को बुलाने का अज़्म,यह सब ऐसे हुआ जैसे कि बाहम दोनों गुफ़्त व शुनीद कर चुके हों। आप का ख़ुद कहना है कि यह तारीख़ी सफ़र मेरी ज़िन्दगी की मेअ़राज है,और मैं इसको हज़रत ताजुश्शरीआ की करामत तसव्वुर करता हूँ। (3 अक्तूबर2015 ई)

बयक वक्त दो जगह मौजूदगी

2013 ई में हज़रत ताजुश्शरीआ के हमराह साहबज़ादा मौलाना अस्जद रज़ा क़ादरी मोहतमिम जामिअ़तुर्रज़ा बरेली शरीफ़ साउथ अफ़रीक़ा के अ़लावा दारूस्सलाम,तंज़ानिया,हरारे,ज़िम्बाब्वे और मलावी वग़ैरा के तब्लीग़ी सफ़र पर तशरीफ़ ले गये थे। वापसी पर मलावी का एक वाक़िआ जो हज़रत की ज़िन्दा व जावी करामत से मन्सूब है,राक़िमुस्सुतूर से बयान किया। कि जुमा का दिन था मुहम्मद असलम मिर्ज़ा रज़वी मेरे पास बेताबाना आये और बग़लगीर हो गये और कहने लगे कि आप ने नमाज़ कहाँ पढ़ी। मैंने बताया कि फ़लाँ मस्जिद में पढ़ी,वहाँ हज़रत ने नमाज़े जुमा अदा कराई,असलम मिर्ज़ा ने नमाज़े जुमा किसी दूसरी मस्जिद में पढ़ी थी,यहाँ ऐने नमाज़ जुमा हज़रत ताजुश्शरीआ की ज़्यारत और मुसाफ़ा

व दस्त बोसी भी की थी,असलम मिर्ज़ा साहब का अपनी मस्जिद में ज़्यारत करना और हज़रत का किसी दूसरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ना,वाक़ेई किसी अज़ीम करामत से कम नहीं है। इसी मज्लिस में किसी ने कहा कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुलक़ादिर जीलानी बग़दादी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयक वक़्त 70 जगह जलवा नुमाई कर सकते हैं,तो उन के जानशीन और ख़लीफ़ा बयक वक़्त दो जगह क्यों नहीं हो सकते। असलम मिर्ज़ा साहब हज़रत की यह करामत देख कर फ़ौरन घर गये और अपने बीवी व बच्चों को ला कर हज़रत के दस्ते हक़ पर बैअ़त करा दिया। और उन्होंने यह अपना चशम दीद वाक़िआ़ तमाम लोगों से बयान कर के हैरत में डाल दिया। वह कहते हैं कि उस दिन से मेरी अ़क़ीदत व मोहब्बत में हज़ार दर्जा इज़ाफ़ा हो गया। (5 अक्तूबर 2015 ई)

हवाई जहाज़ का वापस आना

7/अक्तूबर 2015 ई बाद नमाज़े ज़ोहर क़ादरी राइस मील बेहड़ी ज़िला बरेली में बैअ़त व इरशाद का जलसा मौलाना मुख़्तार अहमद क़ादरी ने मुन्अ़क़िद किया था। हज़रत ताजुश्शरीआ़ के हमराह राक़िम(लेखक) के अलावा मौलाना मुहम्मद आ़शिक़ हुसैन कश्मीरी और मुफ़्ती शुऐब रज़ा क़ादरी भी थे। मोहतरम मुफ़्ती साहब ने अपनी तक़रीर में अपना ऐनी मुशाहिदा बयान किया कि गुज़श्ता साल हज़रत के हमराह ज़िम्बाब्वे के शहर हरारे के एयरपोर्ट पर हम लोग दूसरे शहर की फ्लाइट पकड़ने के लिए पहुँचे,ताख़ीर हो जाने की वजह से एयरपोर्ट

इन्तिज़ामिया ने कहा कि प्लेन रनवे पर जा चुका है। अब आप का जाना मुम्किन नहीं है। हज़रत से मुख़ातब हो कर अफ़सोस का इज़हार करने लगे कि अब दूसरी फ्लाइट भी नहीं है। प्रोग्राम मुतास्सिर हो जायेगा,काफ़ी लोग जमा हुये होंगे। प्रोग्राम ऑर्गेनाइज़र का क्या हाल होगा। हज़रत ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला पर तवक्कुल करो,अल्लाह जो करेगा बेहतर होगा,परेशान होने की कोई बात नहीं है। चन्द मिनट ही गुज़रे थे कि इन्तिज़ामिया के अहले कार आये,कहने लगे कि आप लोग चलें नामालूम क्या वजह रही कि प्लेनरनवे पर जाने के बाद वापस आ गया है। शायद आप लोगों को ले जाना मक़सूद था।

मुफ़्ती शोएब रज़ा साहब ने तक़रीर में यह भी कहा कि उदयपुर में शहरी हवा बाज़ी वज़ीर के लिए सिर्फ़ एक बार प्लेनरनवे पर जा कर वापस आया है,और न आज तक की तारीख़ में मैंने कहीं सुना और न कभी देखा कि ऐसा हुआ हो,मगर यह हज़रत की करामत ही है कि हवाई जहाज़ उड़ने के बाद फिर दोबारा वापस आया। और हम लोग खुदा का शुक्र अदा करते हुये प्लेन में बैठ गये। (10/अक्तूबर 2015 ई.)

बेटे की पैदाइश के लिए दुआ

हुज़ूर मुफ़्तिए आज़म कुद्दिसा सिर्रुहु के ख़लीफ़ा व नवासा हज़रत मौलाना अश्शाह ख़ालिद अली ख़ाँ बरेलवी के दामाद मौलाना अश्शाह मोहतशिम रज़ा ख़ाँ क़ादरी साकिन मोहल्लाह सौदागिरान हर रोज़ हज़रत की

ख़िदमत में हाज़िर बाश हो कर फ़ैज़याब हुआ करते हैं। एक दिन मुझ से मेरे बच्चों के बारे में मालूमात हासिल कर रहे थे कि पलट कर मैं ने भी मोहतशिम मियाँ से उन की औलाद के बारे में दरयाफ़्त कर लिया,कहने लगे कि तीन लड़कियाँ हैं और एक लड़का है,जो हज़रत ताजुश्शरीआ की दुआओं का मरहून मिन्नत है। मैंने सवाल किया वह कैसे बताया कि मेरी अहलिया मोहतरमा ने कहा कि आप हज़रत की ख़िदमत में जाते हैं तो लड़के के तवल्लुद होने की दुआ करायें,इस पर मोहतशिम मियाँ ने कहा कि मुझे अपने ज़ाती मुआमलात में कुछ कहते हुये शरमिन्दगी महसूस होती है,इस पर मोहतरमा ने हौसला दिया कि बुज़ुर्गों से दुआयें कराई जाती हैं,उन की दुआओं में वह तासीर होती है जिस से तक़दीर व तदबीर बदल जाया करती है।

आप का बयान है कि उन जुमलों से हौसला मिला,हिम्मत बंधी,हज़रत से दुआ की गुज़ारिश की कि हज़रत मेरी अहलिया ने बेटे के लिए दरख़्वास्त की है,कि तीन लड़कियाँ हैं। हज़रत ने हाथ उठा कर दुआ कर के फ़रमाया कि इंशाअल्लाह तआला बेटा पैदा होगा,अलहम्दु लिल्लाह चन्द माह बाद बेटा ही पैदा हुआ,जिस का नाम हज़रत ने ज़कवान रज़ा ख़ाँ(22/दिसम्बर 2013 ई) तजवीज़ फ़रमाया,उस के बाद फ़रमाया कि ज़कवान हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ास शागिर्द का नाम है। (20/अक्तूबर 2015 ई 6/मर्हम 1437 हिजरी)

ख़्वाब में मुजाहिदे मिल्लत के साथ देखा

अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद आ़शिकुर्रह़मान ह़बीबी शैख़ुल ह़दीस जामिआ़ ह़बीबिया इलाहअबाद तह़रीर करते हैं कि ह़ज़रत हुज्जुतुलइस्लाम मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ाँ बरेलवी कुद्दिदसा सिर्रुहु बन्दा के शैख़ हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत कुद्दिदसा सिर्रुहु के शैख़ हैं। ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ नबीरए ह़ज़रत हुज्जतुलइस्लाम हैं। हुज़ूर मुजाहिद मिल्लत कुद्दिदसा सिर्रुहु ने ह़ज़रत मुफ़्ती आ़ज़म हिन्दु कुद्दिदसा सिर्रुहु के लिए"चचा पीर"के अल्फ़ाज़ इस्तिेमा़ल किए,उन्हें हमेशा"चचा पीर" जाना और माना और हमेशा"चचा पीर" की त़रह़ उनका एह़तिराम फ़रमाया। ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ जानशीन ह़ज़रत मुफ़्तिए आ़ज़म हिन्द हैं।

एक त़रफ़ मुतज्ज़करा बाला निस्बतों का इदराक होता गया,दूसरी त़रफ़ मौसूफ़ की दूसरी फ़ज़ीलतों को भी पहचाना। बन्दा ने फ़ज़ाइल को भी मुलाह़िज़ा किया तस्नीफ़ी कार नामों का भी मुशाहिदा किया। बन्दा ह़ज़रत ममदूह की कई तसा़नीफ़ पर अपने तास्सुरात का इज़हार भी कर चुका है। इस त़रह़ इस "अख़्तर आ़ज़म"
की त़रफ़ के क़ल्ब का मैलान हो गया।

कुरआन को ख़ुदा की बनाई किताब क़रार देने पर गिरफ़्त करने और तौबा करवा देने के बाद कुतुब "बशरा"पर तक़रीज़ लिखने की वजह से हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत कुद्दिदसा सिर्रुहु पर कुफ़्र का हुक्म किया गया और तौबा,तजदीदे ईमान व तजदीद निकाह़ का मुत़ालबा किया गया। इस पर मुसन्निफ़"बशरा"की जानिब से

ऐबारत की तौज़ीह पर मुश्तमिल इस्तिफ़ता मुफ़्ती आज़म हिन्द कुद्दिदसा की ख़िदमत में पेश किया गया,और हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत कुद्दिदसा सिर्रुहु ने यह फ़रमाया कि"मुसन्निफ़ की इस तौज़ीह के बाद अगर हज़रत मुफ़्ती आज़म हिन्द हुक्म फ़रमायेंगे,मैं यह सब करूँगा। लेकिन उस ज़माने में जो साहिब हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द की बारगाह में रिसाई के लिए वास्ता उज़मा की हैसियत रखते थे,उन की मेहरबानी की बदौलत इस इस्तिफ़ता पर हज़रत मुफ़्ती आज़म हिन्द की तस्दीक़ से मुज़य्यन फ़तवा एक तवील मुद्दत के गुज़र जाने के बावजूद नहीं हासिल हो सका,और इस बात का अन्देशा पैदा हो गया कि आगे चल कर उसका बड़ा भयानक नतीजा सामने आयेगा। उस वक़्त हज़रत शाहज़ादा आला हज़रत नबीरए हुज्जतुलइस्लाम जानशीन मुफ़्ती आज़म हिन्द मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब दामत बरकातुहुमुल आलिया आगे बढ़े,फ़तवा लिखा,जिस पर हज़रत मुफ़्ती आज़म हिन्द ने तसदीक़ फ़रमाई,और हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत,नीज़ मुसन्निफ़"बशरा"की बरात साबित हो गई। हज़रत मम्दूह की तरफ़ बन्दा के मैलाने क़ल्ब का यह एक बहुत बड़ा सबब है। यह वाक़िआ 1978 हिजरी का है।

बन्दा बहुत कम ख़्वाब देखता है,देखे हुये उन्हीं कम ख़्वाबों में से 1995 ई का एक ख़्वाब है। बन्दा ने देखा कि हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत तशरीफ़ फ़रमा हैं,और आप के क़रीब हज़रत ताजुश्शरीआ भी हैं।

जब बन्दा ने हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत की क़दम बोसी की,हज़रत मम्दूह ने चन्द कुतुब व रसाइल बन्दा को इनायत फ़रमाये। 1999 हिजरी में जामिआ़ हबीबिया इलाहआबाद के सालाना जलसा के मौक़ा पर जब हज़रत मम्दूह तशरीफ़ लाये हुये थे,बन्दा ने आप की मौजूदगी में तक़रीर करते हुये इस वाक़िआ़ को बयान किया था। हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद अ़रबी अल मग़्रिबी कुद्दिसा सिर्रुहु के मज़कूर को भी बन्दा ने इस मौक़ा पर तक़रीर करते हुये सुनाया था,और सुबह नैनी जेल रोड इलाहाबाद में बीड़ी वाले शहन्शा साहब के मकान पर हज़रत मम्दूह को यह बताया था कि हज़रत अ़ल्लामा मुहम्मद अल अ़रबी मौसूफ़ ही को मग़्रिबी भी कहा जाता है। तबानी भी कहा जाता है। हज़रत अ़ल्लामा तबानी के क़ौल मज़कूर को बन्दा ने 10/शव्वाल 1424 हिजरी को शरई कोंसिल ऑफ इन्डिया,बरेली शरीफ़ के इफ़्तिताह के मौक़ा पर जलसे में तक़रीर करते हुये भी सुनाया था। मौला तआ़ला हज़रत की हयात ज़ाहिरा को दराज़ फ़रमाये और अख़्तर सतान बन्दा के इस नय्यरे आज़म के फ़ुयूज़ से मिल्लते इस्लामिया को बख़्शे,आमीन।

वालिद माजिद की करामत

हज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुलवाहिद क़ादरी अमीरे शरीअ़त हांलैन्ड का बयान है कि साहबज़ादए मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द हज़रत अ़ल्लामा शाह मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब और हज़रत मौलाना शमीम अशरफ़ साहब दोनों साथ साथ तहसीले इल्म के लिए जामिआ़ अज़हर

मिस्र तशरीफ़ ले गये थे। मौलाना शमीम अशरफ़ साहब मिस्र ही में थे कि इन्डिया में उनके वालिद माजिद का इन्तेक़ाल हो गया। मौलाना शमीम अहमद साहब अज़हरी ने इस सानेहा की इत्तेलाअ़ बज़रीआ़ ख़त हुज़ूर मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द को दी। हज़रत ने इस ख़त को पढ़ कर नमदीदगी के साथ अफ़सोस का इज़हार किया और फ़रमाया "अख़तर रज़ा का भी यही हाल होगा,वह मेरे इन्तिक़ाल पर यहाँ मौजूद नहीं होंगे" और हुआ भी यही कि हुज़ूर मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द का विसाल मुबारक 1965 ई में हुआ और हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ मद्दज़िल्लाहु आली 1966 में सनद फ़रागत हासिल कर के बरेली शरीफ़ वापस पहुँचे।

इस मौक़े से हुज़ूर मुरशिदी सय्यदी मुफ़स्सिरे आज़म हिन्द मुफ़्ती इब्राहीम रज़ा ख़ाँ रज़वी जीलानी मियाँ अ़लैहिर्रहमा की करामत का ज़हूर होता है,और यह हक़ीकत है कि वली की ज़बान से जो बात निकलती है वह मनसए शहूद पर जलवा गर हो ही जाती है। और उस से अपने फ़रज़न्द से क़ल्बी लगाओ व मोहब्बत का भी अन्दाज़ा होता है।

मर्दे ग़ैब का नाश्ता लाना

मुफ़्ती मुहम्मद सलीम अख़्तर बेलाली दरभंगा का बयान है कि आज से तक़रीबन बन्द्रह बरस पहले में उदयपुर (राजिस्थान) के क़रीब सड़ाड़ा क़स्बा में इमाम अहमद रज़ा कांफ़्रेन्स में ख़िताब करने के लिए मदऊ था। खुश क़िस्मती से सरकार ताजुश्शरीआ़ भी उस इलाक़ा में

फ़ैज़ान तक़सीम करने के लिए तशरीफ़ लाने वाले थे। हवाई अड्डे पर 21 तोपों की सलामी का एहतिमाम किया गया था,21 गाड़ियाँ हज़रत की कार के पीछे रज़ा कारों से भरी हुई इस्तिक़बाल के लिए मौजूद थीं,हवाई अड्डे का अमला उस अज़ीमुश्शान शख़्सियत को देखने के लिए परेशान था कि वह कौन सी ऐसी हस्ती है जिन के इस्तिक़बाल की यह तैयारियाँ हैं,हज़रत ताजुश्शरीआ जब हवाई जहाज़ से उतरे तो बरादराने वतन की अक़ीदत व मोहब्बत और उन से वाबस्तगी की कैफ़ियत इहाता बयान में लाना मुश्किल है। फिर जब जलसा गाह में हज़रत रौनक़ अफ़रोज़ हो गये तो मुन्तज़िमीन जलसा से वहाँ के बरादराने वतन ने ख़ासी गुज़ारिश की कि हज़रत के दीदार का हम को मौक़ा दिया जाये। मैंने अपनी आँखों से देखा कि हज़रत ताजुश्शरीआ आलिमाना जाह व जलाल के साथ स्टेज पर जलवा बार हैं,और क़तार दर क़तार सिर्फ़ बरादराने वतन सामने से गुज़र रहे हैं,यह तो उन का हाल था,अपनों का क्या हाल बताऊँ,हर आदमी अपना हर कुछ निसार करने को तैयार था,अजीब अक़ीदत व मोहब्बत का मुआमला था,यह सब कुछ उस का इज़हार था जो रब की जानिब से उन को वदीअत की गई है जिसे लोग मक़बूलियत फ़िलअबद के नाम से जानते हैं।

इस सफ़र में एक अजीब बात यह हुई जिसे मैं कभी भूल नहीं सका,और अक्सर इस वाक़िआ को बता कर हम लोगों से कहते हैं कि यह हज़रत की करामत

थी। मुआमला यूँ हुआ कि जलसा रात में ख़त्म हुआ। सुबह हज़रत की रवानगी थी और मुझे भी वहाँ से अपने जामिआ इस्लामिया अमानिया लवाम दरभंगा(बिहार)का सफ़र करना था,पूरी आबादी के लोग हज़रत को रुख़सत करने में लगे थे,हत्ता कि वहाँ के ख़तीब व इमाम मौलाना तय्यब रज़ा साहब जो हज़रत के मुरीद भी थे और उन्होंने ही मुझे भी मदऊ किया था,वह भी मुझे भूल बैठे थे। दिन के दस बज गये और मैं तन्हा कमरे में ठहरा हुआ था,सारे क़स्बे में चहल पहल हज़रत की मौजूदगी की रौनक़ में अजीब सा ऐहसास से दो चार था,कि अचानक एक आदमी मेरे कमरे में नाश्ता के साथ वारिद हुआ,और मेरे क़रीब बैठ कर कहा हज़रत ताजुशरीआ ने मुझे आप के पास भेजा है,और फरमाया है कि बिलाली को नाशता करा दो,बाद में किसी ने इसका इक़रार नहीं किया कि हज़रत ने मुझे भेजा था,पता नहीं यह मर्दे ग़ैब हज़रत की कौन सी ख़िदमत पे मामूर था। सरकारे मुफ़्ती आज़म के बाद अगर कोई इतनी मक़बूल शख़्सियत नज़र आती है तो यह ताजुश्शरीआ की ज़ात बा बरकात है,जिधर से हज़रत का गुज़र हो जाये ऐअलान आम हो जाता है कि इधर से सरकार गुज़रने वाले हैं,फिर ख़लाइक़ का हुजूम।

ई सआदत बज़ोर बाज़ नीस्त
ता न बख़्शद खुदाए बख़्शंद

उलमाए अहले सुन्नत बिहार ने यह महसूस किया कि हज़रत ताजुश्शरीआ का अगर दौरा हो जाये,और

लोग हज़रत की ज़्यारत से मशर्रफ़ हो जायें तो यह सुन्नियत का एक बड़ा काम होगा। इस सिलसिले अज़्जहब में दरभंगा शहर का नाम आया और सरकार ने मन्ज़ूरी इनायत फ़रमा दी। यह बात हज़रत के तअ़ल्लुक़ से काफ़ी मशहूर है कि हज़रत लोगों से कम मिलना पसन्द फ़रमाते हैं। ख़लवत पसन्द नहीं,अज़ दिहाम,दस्त बोसी क़दम बोसी से दूरी पसन्द है और उ़लमा अ़वाम व ख़्वास़ का यह ह़ाल कि मुझे मौक़ा मिले तो मुझे मौक़ा मिले हज़रत का क़ियाम दरभंगा में मुफ़्ती हालैन्ड ह़ज़रत मौलाना अ़ब्दुलवाजिद क़ादरी स़ाह़ब क़िब्ला के दौलत कदा पर था हज़रत के हमराह मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी भी ख़ादिम ख़ास़ साथ आये थे। हमीदियस क़िल्आ़ घाट के वसीअ़ व अ़रीज़ मैदान में जलसा का एहतिमाम था। अ़ल्लामा मुफ़्ती मतीउ़र्रह़मान स़ाह़ब क़िब्ला अ़ल्लामा मुफ़्ती मह़बूब रज़ा क़ादरी स़ाह़ब क़िब्ला वग़ैरा पेश पेश थे। ह़ज़रत का हुक्म था कि कोई दस्त बोसी न करे। मेरे साथ सारे उ़लमा को हिस़ार के लिए मुतअ़य्यन कर दिया गया, ह़ज़रत काफ़ी खुश थे कि मेरी मान ली गई है,लोगों का हुजूम बे पाया टूटा पड़ रहा था,हर कोई अपनी आँखों में इस रुख़े ज़ेबा के जमाल को समा लेना चाहता था। अ़जीब दीवानगी थी। ह़ज़रत से मौजूद उलमा ने नअ़्त मुक़द्दस सुनाने की गुज़ारिश की,जिसे क़बूलियत का शर्फ़ मिल गया। क्या बताऊँ कि सुनाने वाला एक आ़शिक़े रसूल अपने दिल की गहराई से मह़बूब ख़ुदा की बारगाह में कलाम पेश कर रहा था,एक

तो कलाम का असर फिर जब उसे कोई मुहिबे सादिक़ पेश कर रहा हो तो असर का दो बाला हो जाना फितरी था। एक पुर कैफ़ माहौल सारे मजमा पर तारी था। कुछ लोगों ने सोचा अच्छा मौक़ा हाथ आया,हज़रत कलाम पढ़ रहे हैं। चलो कुछ नज़र भी दे देंगे,और इसी मौक़ा पर दस्त बोसी का शर्फ़ भी ह़ासिल कर लेंगे, ज्यों ही दो चार आदमी गये हज़रत ने कलाम को रोक दिया और फ़रमाया कि अब कोई मेरे दरमियान मुख़्लिल होने आया तो मैं स्टेज से उतर जाऊँगा। लोग रुक गये,और हज़रत का फ़ैज़ान ख़ूब ख़ूब बरसा,आज भी लोग जब इस मन्ज़र को याद करते हैं तो ख़ूब लुत्फ़ अन्दौज़ होते हैं।

मुक़द्दमा में काम्याबी एक करामत

अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुलमन्नान कलीमी शहरे मुफ़्ती मुरादआबाद व शैख़ुलहदीस जामिआ़ अकरमुलउ़लूम लाल मस्जिद का बयान है कि फ़क़ीर अ़र्से 1985 ई से मख़दूमी ताजुश्शरीआ़ की ख़िदमत व मज्लिस और बाज़ अहम अस्फ़ार में मुईत व रफ़ाक़त का शर्फ़ ह़ासिल कर चुका है मैंने हर बार हज़रत क़िब्ला को तसल्लुब फ़िद्दीन का मज़हर अतिम और अपने अस्लाफ़ के हमा गीर अख़लाक़ व औसाफ़ और इल्म व फ़ज़्ल का सच्चा जा नशीन पाया। जब किसी उ़नवान पर आप का क़लम उठता है तो ऐसा महसूस होता है कि सय्यदिना आ़ला हज़रत का क़लम सियाले रवा दवा है। और जब ज़बान खुलती है तो यह महसूस किए बग़ैर कोई नहीं रहता कि सय्यदिना हुज़ूर मुफ़्ती आज़म हिन्द की शान अ़ल्मियत

नुमाया है।

फ़िक़ही मज्लिस हो या दारूलइफ़ता, उलमा की जमाअ़त हो या फुक़हा का गिरोह,मुतकल्लिमीन की नशिस्त हो या मुहद्दिसीन का मजमा,हर जगह आप मुक़तदा और मीरे मज्लिस नुमाया नज़र आते हैं।

यह तो इल्म व फ़ज़्ल की बात हुई। अल्लाह तआ़ला ने आप को सीरत व सूरत,हिल्म व बुर्दबारी और शफ़क़त व मेहरबानी में भी ऐसा ख़ुसूसी दर्जा अ़ता फ़रमाया है कि आप की पहली ज़ियारत के बाद ही तिशनिगाने रूहानियत आप की तरफ़ खिंचे चले आते हैं और यह महसूस किए बग़ैर नहीं रहते कि आप अपने अस्लाफ़ कराम और ख़ान्दानी मुक़तदियाने ऐज़ाम की बोलती तस्वीर और हम पैकर हैं।

फ़क़ीर ने बारहा हज़रत क़िब्ला से इक्तिसाब फ़ैज़ के लिए इस्तिफ़ता किया जिस के जवाब में आप ने ऐसे ऐसे लअ़ल व गौहर के फूल बरसाये कि सुन कर इंसान हैरतज़दा हो जाये और यह मानने पर मजबूर हो जाये कि यह अपने वक़्त के आ़लिमे रब्बानी और फ़क़िहुन्नफ़्स की हैसियत रखते हैं।

फ़क़ीर इस अमर के बयान में अपने को निहायत ख़ुश नसीब समझता है कि 1986 ई/1407 हिजरी में जब आप को सऊ़दी हुकूमत ने गिरफ़्तार किया तो मैंने हज़रत की हिमायत व बरअत में तक़रीबन बीसों क़िस्तों में अपने रुशहात क़ल्म के ज़रीआ़ नजदी हुकूमत के परखचे उड़ाये,और हज़रत क़िब्ला की बारगाहे क़ुदिदसा

में अपने कलम के ज़रीआ बेहतरीन ख़िराज अकीदत व मोहब्बत पेश करने की कोशिश की। जिस के शाहिद अदल की हैसियत से माहनामा सुन्नी दुनिया के कदीम शुमारे मौजूद हैं।

दूसरा जब हिन्दुस्तान में रेडियो और टेली वीज़न की हिल्लत व हुरमत की बहस छिड़ी तो वहाँ के बहुत सारे कद्रदानों में उस फकीर का नाम भी लिया जा सकता है।

तीसरा यह कि जब मुरादआबाद में आप पर एक नाम निहाद कम ज़रफ़ और बदतरीन किस्म के हासिद मौलवी ने"मसअला अल्लाह मियाँ"में अपन मनशा के मुताबिक़ आप की जानिब से फ़तवा न मिलने की रकाबत का बदला लेने और आप की परोकार शख़्सियत को मजरूह करने की नारवा जसारत करते हुये आप पर एक झूटा मुक़द्दमा मुरादआबाद कोर्ट के ज़रीआ क़ाइम कराया तो इस नाचीज़ कलीमी ने फ़ाज़िल जलील मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन साहब रज़वी अताउल्लाह उमरा व अलहाज अफ़रोज़ रज़ा ख़्वाहिर ज़ादा हुज़ूर ताजुश्शरीआ और साहबज़ादा गिरामी अल्लामा अस्जद रज़ा ख़ाँ साहब वैग़ारा के बाहमी मशवरा से मुक़द्मदा के पैरोकारी की मुकम्मल ज़िम्मेदारी अपने ज़िम्मा ली। और मुरादआबाद के ज़िला कोर्ट में जारी इस मुक़द्दमा की ऐसी पैरवी की कि मुख़ालिफ़ीन के पांव उखड़ गये और उन को ख़ासरुमराम होना पड़ा,और अल्लाह तआला ने हज़रत क़िब्ला को ऐसी फतह और जीत अता फरमाई

जिस का तस़ाव्वुर नहीं किया जा सकता है। इस अ़ज़ीमुश्शान कामयाबी पर यह कहना मुबालग़ा होगा कि आप के जद्दे करीम सय्यदिना इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर भी एक मुक़द्दमा क़ाइम किया गया,जिस की मुकम्मल पैरोकारी का शर्फ़ सय्यदिना हुज़ूर स़दरुलअफ़ाज़िल मुरादआबादी को ह़ासिल हुआ। बेऐनही इसी त़रह़ उन के फ़रज़न्द पर भी एक मुक़द्दमा क़ाइम किया गया जिस की पैरवी मुरादाबाद के तअ़ल्लुक़ से इस नाचीज़ के हिस्सा में आई। मौलाना मुहम्मद शहाबुद्दीन रज़वी बराबर हर तारीख़ पर मुरादाबाद आते और मैं उन के साथ कोर्ट जाता,वकीलों से स़लाह व मशवरा करता। मैं इस मुक़द्दमा की पैरवी को अपनी ख़ुश नसीबी व ख़ुश बख़्ती तस़व्वुर किया करता हूँ। और यह इज़आन और यक़ीन करता हूँ कि मेरे ऊपर सय्यदिना आ़ला ह़ज़रत का करम हुआ,और मैं इस ख़ानवादे के काम आ गया।

हर दिल अ़ज़ीज़ क़ाइद पर फ़ख़्र

डाक्टर मौलाना गुलाम ज़रक़ानी बिन रईसुत्तह़रीर अ़ल्लामा अरशदुलक़ादरी मुक़ीम हयूस्टन(अमरीका)का बयान है कि चन्द साल क़ब्ल जमशेदपुर में एक मस्जिद की संगे बुनियाद के जलसे में ह़ज़रत ताजुश्शरीआ़ के साथ मैं भी शरीक था। रांची एयरपोर्ट पर इंसानों का एक तूफ़ान इस्तिक़बाल के लिए ह़ाज़िर था। ज्यों ही ह़ज़रत मौस़ूफ़ बाहर तशरीफ़ लाये, लोग दस्तबोसी के लिए टूट पड़े। बड़ी मुश्किलों से मजमा को क़ाबू में किया

गया। जब जमशेदपुर पहुँचे तो यही आ़लम था। लोगों का शौक़ जिन्नो ख़ैज़ देखने के क़ाबिल था। जज़्बात के तलातिम में लोगों को अपनी सलामती की फ़िक्र न थी। बस ख़्वाहिश थी तो यही कि ह़ज़रत से मुसाफ़ा का मौक़ा मयस्सर आ जाये। इस दीवानगी की कैफ़ियत से मैं बड़ा मुतास्सिर हुआ,और जब ख़िताबत के लिए खड़ा हुआ तो मैं ने कहा था कि मैं जब ह़ज़रत मौसूफ़ और आप की मोहब्बत को देखता हूँ तो मुझे अफ़सोस भी होता है और ख़ुशी भी। अफ़सोस इसलिए कि लोग परवाना वार इस त़रह टूट पड़ते हैं कि ह़ज़रत का संभालना मुश्किल हो जाता है,और ख़ुशी इसलिए होती है कि हमारी जमाअ़त का क़ाइद ऐसा हर दिल अ़ज़ीज़ है कि लोग अपनी इ़ज़्ज़त नफ़्स ह़ज़रत के क़दमों में लुटाने में फ़ख़्र महसूस करते हैं।

और यह कैफ़ियत सिर्फ़ हिन्दुस्तान में ही नहीं होती,बल्कि बैरूने मुल्क भी ह़ज़रत के साथ वालिहाना शग़फ़ रखने वाले जां निसार इसी त़रह अपनी अक़ीदतों का ख़िराज पेश करते हैं। अभी चन्द साल क़ब्ल अमरीका के दौरे पर तशरीफ़ लाये थे। एक अ़क़ीदत मन्द की ज़ाती मह़फ़िल में मुह़द्दिसे कबीर मद्दज़िल्लाहुल आ़ली ने अपनी तक़रीर के बाद ह़ज़रत की ख़िदमत में माइक पेश करते हुये अ़र्ज़ किया कि अंग्रेज़ी में कुछ बयान फ़रमा दें। ह़ज़रत ने फिलबदीहा अंग्रेज़ी में काफ़ी देर तक बयान फ़रमाया। लोगों पर एक सकता त़ारी था कि इतनी साफ़ व शशता अंग्रेज़ी ज़बान।

यक़ीन करें उस शाब ऐसा महसूस हो रहा था कि वाक़ेई आलमे इस्लाम के क़ाइद को ऐसा ही होना चाहिए,कि जब इधर रुख़ किया अ़रबी में ख़िताब फ़रमाया फ़ारसी दाँ तबक़ा में बैठे तो फ़ारसी में गुफ़्तगु कर ली,अहले हिन्द व पाक के दरमियान मौजूद हों तो उर्दू में बोल पड़े और यूरोप व अमरीका में अक़ीदए हक़्क़ा की तब्लीग व इशाअ़त के लिए निकले तो अंग्रेज़ी ज़बान में अपना मुद्दा दुनिया के सामने पेश कर दिया।

पीरों के पीर

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रहमत अ़ली तैग़ी नाज़िमे आला मदरसा क़ादरिया ज़ियाए मुस्तफ़ा कलकत्ता कहते हैं कि यूँ तो कई पीढ़ी आगे से आप के ख़ान्दान में बा कमाल और मुतदीन उ़लमा पैदा होते रहे,और अभी भी आप का सारा घराना आ़लिम है,लेकिन सरकार आ़ला हज़रत हुज़ूर मुफ़्ती आ़ज़म हिन्द अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़वान के बाद आ़लमी पैमाने पर अगर किसी को इ़ज़्ज़त व शोहरत मिली है तो वह सिर्फ़ ताजुशरीअ़ा दामत फ़ुयूज़िया आ़लिया की ज़ाते सतूर्दा सिफ़ात है।

इस ज़माने में पीराने किराम की कमी नहीं,देखा जाता है कि मुरीदीन से ज़्यादा पीर साहिबान की तादाद है। और ज़ाहिर सी बात है कि जो चीज़ मार्केट में ज़्यादा हो जाती है। उस का दिलो और डीमान्ड कम हो जाती है।

ऐसा ही कुछ हाल आज कल के पीरे मग़ा हज़रात का है। घर घर में पीर हैं,इसलिए पीर की अज़मत व

अहमियत लोगों में आज मफ़कूद नज़र आ रही है,लेकिन इन्हीं लोगों में कुछ ऐसी हस्तियाँ हैं जो पीरी के आली मक़ाम पर फ़ाइज़ और मुशख़्खियत के बलन्द व बाला मिआ़र पर क़ाइम हैं। उन्हें मुक़द्दस हस्तियों में हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ क़िब्ला मददज़िल्लाहुल आ़ली की ज़ात सतूदा सिफ़ात है।

अगर हक़ीक़त में निगाहों से देखा जाये तो बिला शुबह हज़रत इस वक़्त اعظم المشائخ فی العصر فی الملك है। बहुत से पीरों के प्रचारक मार्केट में फैले हुये हैं,जो उनकी झूटी और ग़लत सलत करामतें बयान कर के सीधे साधे लोगों को उन के दाम तज़वीर में फंसाते फिरते हैं। लेकिन بحمده تعالیٰ و بعنایت نبیه المصطفیٰ हज़रत ताजुश्शरीआ़ दामत फुयूज़िया अल आ़लिया की शान ही कुछ निराली है,कि न कहीं आप का कोई ऐजेन्ट और न प्रचार बल्कि रब्बे क़दीर की त़रफ़ से आप को इतनी मक़बूलियत हासिल है कि मेरी दानिस्त में फ़ी ज़माना आप से ज़्यादा मुरीद किसी के भी नहीं हैं।

ذالك فضل الله یوتیه من یشاء

प्रोफ़ेसर की टाई उतार दी

मौलाना तौहीद अशरफ़ी साकिन शहज़ादपुर ज़िला अम्बेडकरनगर का बयान है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ का सफर हॉलैन्ड का हुआ,जलसा में बहुत से डाक्टर्स और प्रोफेसर टाई लगा कर शरीक थे,आप ने टाई की हक़ीक़त और टाई के तअ़ल्लुक़ से ईसाइयों के अ़क़ीदे पर भरपूर तक़रीर फ़रमाई,और टाई के जितने अक़साम हैं

उन की भी वज़ाहत फ़रमाई। इस तअल्लुक़ से जलसा के बाद आप से इस्तिफ़ता हो,आप ने दलाइल व बराहीन के साथ तशफ़्फ़ी बख़्श जवाब हायलैन्ड रवाना फ़रमाया,इस सिलसिला में आप की किताब मुसम्मा"टाई का मसअला" वजूद में आई।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने यह हरगिज़ नहीं सोचा कि यूरोप के दुनियावी मनसब पर फ़ाइज़ आ़ला तालीम याफ़ता हज़रात जलसा में मौजूद हैं,अगर टाई के तअ़ल्लुक़ से गुफ़्तगु हुई तो कहीं यह सब नाराज़ न हो जायें,आप ने हुक्मे शरअ़ बयान फ़रमा कर अपने आ़लिमाना फ़क़ीहाना वक़ार को मजरूह होने से बचा लिया।

आज कल पीर व मुरशिद को देखा जाता है कि पीरे तरीक़त की मसनद पर बैठने के बाद अह्कामे शरीअ़त को नज़र अन्दाज़ करना उन का शेवा बन गया है,उन को सिर्फ़ फ़िक्र रहती तो अमदनी की,नमाज़ रोज़ा अज़कार व वज़ाइफ़ और तज़किया नफ़्स व तस्फ़िया कुलूब की कोई फ़िक्र नहीं होती है। औ़रतों का उठना बैठना,ग़ैर शरई उमूर देखना,और तंबीह न करना,और उसे हिक्मते अ़मली का नाम देना,ऐसे पीरों की फ़ितरत सानिया बन गई है।

मगर हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ एक साहिबे इल्म व फ़न के साथ बहरे तरीक़त के ग़व्वास़ भी हैं,मुशाहिदीन में से किसी पर यह अम्र मख़्फ़ी नहीं कि हुज़ूरताजुश्शरीआ़ के सामने कोई ग़ैर शरई अम्र वाक़ेअ़ हो जाये,और आप ने

ख़ामुशी इख़्तियार की हो,बल्कि फ़ौरन हुक्मे शरई बयान फ़रमाये हैं। आप की शख़्सियत जहाँ नूर अ़ला नूर है,वही पाकीज़ा अ़मल व किरदार के ताजदार भी हैं,आप का ज़ाहिर व बातिन यकसा है। यही सबब है कि हुक्मे शरई बयान करते किसी की परवाह नहीं करते हैं। आज तक हाज़िरीन में से किसी ने आप के पास औ़रतों को बैठते हुये नहीं देखा,औ़रतों को हाथ पर हाथ रख कर मुरीद करते हुये नहीं देखा। चेन वाली घड़ी पहन कर किसी आ़लिम या ग़ैर आ़लिम को बैठते नहीं देखा। यह हक़ीक़त है कि जो अल्लाह और रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से डरता है,उस से ख़ुदा की मख़लूक़ डरती है। आप का तस़ल्लुब फ़िद्दीन किसी से पोशिदा नहीं है,ऐसा मुरशिदे त़रीक़त क़िसी को मिल जाये तो वाक़ई उसकी आख़िरत संवर जायेगी।

जन्नत का सौदा कर लिया

क़ारी दिलशाद अहमद रज़वी बनारसी का बयान है कि त़ालिबे इल्मी का दौर था,जमशेदपुर में क़ाइदे अहले सुन्नत अ़ल्लामा अरशदुलक़ादरी अ़लैहिर्रहमा की क़ियादत में शहर के क़ारी दिलशाद अहमद रज़वी बनारस का बयान है कि गोलमौरी महल्ला में इमाम अहमद रज़ा कांफ्रेन्स में हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की आमद हुई। हम लोग मुरशिदे गिरामी की ख़िदमत पर मामूर किए गये,बैअ़त व इरशाद का सिलसिला शुरूअ़ था। ज़हन में एक बात खटकती थी कि बग़ैर वालिदैन की इजाज़त कैसे बैअ़त हो जायें,क़ल्बी कैफ़ियत में एक वबाल था जिसे लफ़्ज़ों में

बयान नहीं किया जा सकता,क़ाइदे अहले सुन्नत ने मेरी परेशानी महसूस की जैसे पेशानी की लकीरें पढ़ ली हों। इरशाद फरमाया क्या कोई पेरशानी है। आँखें भीग गईं,अ़र्ज़ किया हुज़ूर बैअ़त होना चाहता हूँ,क्या वालिदैन की इजाज़त के बग़ैर मुम्किन है। कुरबान जाइये क़ाइदे अहले सुन्नत के अल्फ़ाज़ पर जो मेरी ज़िन्दगी का सब से क़ीमती उसासा हैं,इरशाद फ़रमाया"नादान जन्नत का सौदा वालिदैन से पूछ कर नहीं किया जाता और मैं भी तो तुम्हारा बाप हूँ" यह कहते हुये मुझे ताजुश्शरीअ़ा के क़दमों में डाल दिया। हुज़ूर यह बच्चा रशीदी साहब का है,जो अहले सुन्नत के अ़लम बरदार हैं और नअ़त के ज़ोद गो शाइर भी हैं,उन का बच्चा आप की ख़िदमत में है, उसे ग़ौसे आज़म तक पुहँचा दीजिए। मुरशिदे रब्बानी ने मेरा हाथ पकड़ा,सिलसिला क़ादरिया में दाख़िल किया दुआ़ओं से नवाज़ा,इरशाद फ़रमाया फ़ारिग़ हो कर मसलके आ़ला हज़रत की नश्र व इशाअ़त करना,यही कुरआन व सुन्नत का रास्ता है। यह जुमला क्या था,पूरी ज़िन्दगी का नस़बुलऐन सामने रख दिया। मुझे हुज़ूर ताजुशरीअ़ा की ज़िन्दगी के उस हिस़्से को ज़ब्त तहरीर करना है जिस का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ कुरआन व सुन्नत से है।

मैं एक बार बरेली शरीफ़ हाज़िर हुआ,शहज़ादाए ताजुश्शरीअ़ा अ़ल्लामा मुहम्मद अ़स्जद रज़ा ख़ाँ की विसात़त से बाद नमाज़े मग़्रिब मुलाक़ात के लिए हज़रत के हुजरे में दाख़िल हुआ,उस वक़्त मुफ़्तियाने किराम

मौजूद थे,चन्द लम्हे में हुज़ूर ताजुश्शरीआ अन्दरून ख़ाना से अपने हुजरा शरीफ़ में तशरीफ़ लाये,बाद सलाम व क़दम बोसी के में भी सफ़ के किनारे बैठ गया। एक मुफ़्ती साहिब ने ऐबारत पढ़ी और हज़रत ने हदीस मुबारका के ख़त्म होते ही पुर सोज़ लहजे में अल्लाहु अकबर फ़रमाया।

और चेहराए मुबारक मिस्ल आफ़ताब हो गया। रिक़्क़त अमीज़ लेहजे में फ़रमाया,क्या शान है सरकार की शिफ़ा शरीफ़ की वह हदीस याद आ गई है जिसे हज़रत सय्यदिना क़ाज़ी ऐयाज़ मालकी अंदलसी रहमतुल्लाह अलैहि ने सलफ़े सालेहीन और अमल बालसना के बाब में बयान फ़रमाया है।

हदीस : हज़रत उमर बिन मैमून रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत सय्यदिना इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में था,एक दिन उन्होंने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस बयान की, قال رسول الله صلى الله تعالیٰ علیه وسلم और कहते हुये उन पर अजीब कैफ़ियत तारी हो गई और चेहरए मुबारक अर्क़ अलूद हो गया।

(शिफ़ा शरीफ़ बाब अव्वल तीसरी फ़सल स 92)

और एक रिवायत के मुताबिक़ इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रिवायत करते वक़्त गले की रगें फूल जातीं,आँखें अशकबार हो जातीं। और चेहरा का रंग मुतग़ैयर हो जाता।

हुज़ूर ताजुश्शरीआ दर्से हदीस देते वक़्त सहाबा

किराम के मज़हर नज़र आ रहे थे। जैसे सरकार का सरापा सामने हो और जलवाए ज़ेबा के दीदार की दौलत हासिल हो रही है,और दिल ऐअ़्तिराफ़े हक़ीक़त कर रहा है। यह वह आसार हैं जिस इश्क़े रिसालत मआब स़ल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम की जलवा गरी ताजुश्शरीआ़ की ज़ात में जलवा फगन नज़र आती है,एक आ़लिमे रब्बानी की ज़ात में जितनी ख़ूबी होनी चाहिए हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की सुबह व शाम और उन की महफ़िल के शब व रोज़ में देखने के बाद मन व अ़न वैसी ही नज़र आती है,जैसा कि अल्लाह और उसका रसूल स़ल्ललाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने क़ौल व फ़ेअ़ल में हमआहंगी बरकरार रखने की तालीम दी है। क़ौल व फ़ेअ़ल की हम आहंगी इल्म व तक़्वा की एक जिहती, शरीअ़त व त़रीक़त का हसीन संगम,जलवत व ख़लवत में यकसानियत देख कर दिल को ऐअ़्तिराफ़ करना पड़ता है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ हर जिहत हर ज़ाविये से आ़लिमे रब्बानी ही नज़र आते हैं,ताजुश्शरीआ़ के इल्मी फ़ैज़ान से सिर्फ़ बर्रे स़ग़ीर ही नहीं बल्कि पूरी दुनियाए सुन्नियत इस वक़्त मालामाल नज़र आ रही है। इस दौरे पुरफुतन में दीन की नश्र व इशाअ़त करने वालों के लिए एक ऐसे अम्र का सामना है,जिसे बयान करना ज़रूरी समझता हूँ ताकि ताजुश्शरीआ़ की शख़्सियत इस्तिक़ामत फ़िद्दीन की हैसियत भी उजागर हो जाये। यूरोप व एशिया के दीगर ममालिक में भी तस़वीर कशी एक आ़म चलन बन कर रह गई है,जिसे चाह कर भी बेशतर उ़लमा इस से

बच नहीं पाते। इजलास दीनिया में पूरे प्रोग्राम की मन्ज़रकशी होती है। उलमा के मना करने के बावजूद लोग बाज़ नहीं आते। मगर ताजुश्शरीआ का मौकूफ़ इस मसअले पर जो नाजाइज़ होने का है। यह सिफ़ आप के फ़तवा के हिसार तक महदूद नहीं है। बल्कि तस्वीरकशी अगर वह क़लम से नाजाइज़ गरदानते हैं। तो अपने अ़मल से भी साबित कर दिखाते हैं। यही वजह है कि ताजुश्शरीआ जिस महफ़िल में मौजूद हेते हैं,चाहे वह एशिया की कोई कांफ्रेन्स हो या यूरोप का कोई इजलास,उनकी हैबत लोगों पर कुछ इस तरह तारी रहती है कि बड़े बड़े जरीह भी ग़ैर शरई हरकत की हिम्मत नहीं कर पाते। यह भी ताजुश्शरीआ की इस्तिक़ामत फ़िद्दीन की नज़ीर है कि अल्लाह तआ़ला बन्दा का उन पर ऐसा रोअ़ब तारी कर देता है। कि आशिक़े मुस्तफ़ा ता मरून बिलमअ़रूफ़ के साथ की ويـنـهـون عن المنكر तफ़सीर व तन्वीर नज़र आता है। इस मक़ाम पर दिल यक़ीन कर लेता है कि ऐसा शख़्स जो दीन पर सख़्ती के साथ कारबन्दर रहने वाला है वह ख़ुदा का सच्चा बन्दा और आ़लिमे रब्बानी है।

अदाए फ़क़ीराना पर कुरबान जाओ

मौलाना नौ ख़ैज़ अन्वर उस्ताद जामिआ़ रज़विया दैवगाँव ज़िला आज़मगढ़ बयान करते हैं कि अगर मेरी कुव्वत हाफ़िज़ा मेरी रिफ़ाक़त कर रही है तो 1996 ई का वाक़िआ़ है कि मुल्क की बेनज़ीर दीनी दर्सगाह अलजामिअ़तुलइस्लामिया रौनाही फ़ैज़ाआबाद(यूपी)में

सालाना''जशने दस्तारे फ़ज़ीलत''का पुरबहार मौक़ा था,फ़ारिग़ीन अपनी दस्तार की तैयारियों में मस्रूफ़ थे,और त़लबा जामिआ अपनी क़िस्मत पर नाज़ाँ थे कि आज पुर मुसर्रत मौक़ा पर जानशीने हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म हिन्द ताजुश्शरीआ ह़ज़रत अल्लामा अज़हरी मियाँ साहिब क़िब्ला जश्न की सर परस्ती फ़रमायेंगे,और अपने दस्त मुबारक से ताजुश्शरीआ फ़ज़ीलत और सनदे फ़राग़त से नवाज़ेंगे।

हज़रत ताजुश्शरीआ की आमद पर जामिआ के त़लबा व असातिज़ा और कुर्ब व जवार के अ़क़ीदतमन्द अहले सुन्नत ने निहायत शानदार और पुर जोश इस्तिकबाल किया। अदब व ऐहतिराम और शान व शौकत के साथ आप को क़ियाम गाह ले जाया गया।

बादे नमाज़े इशा नोअ़माने मिल्लत ह़ज़रत अ़ल्लामा अल ह़ाज मुह़म्मद नोअ़मान ख़ाँ साहिब क़ादरी आज़मी रह़मतुल्लाहि तआ़ला(मुतवफ़्फ़ी29 फरवरी सन 2008 ई)साबिक़ प्रिन्सिपल अलजामिअ़तुलइस्लामिया रौनाही ज़िला फ़ैज़आबाद और ह़ज़रत मौलाना क़ारी जलालुद्दीन साह़िब क़ादरी नाज़िमे आ़ला अलजामिअ़तुलइस्लामिया हज़रत ताजुश्शरीआ की ज़्यारत व मुलाक़ात के लिए ह़ाज़िरे ख़िदमत हुये,सलाम व ख़ैरियत और मुसाफ़ा के बाद दोनों हज़रात ज़मीन पर बैठ गये,राक़िमुल हरूफ़ भी पीछे एक त़रफ़ ज़मीन पर बैठ गया। हज़रत ताजुश्शरीआ तख़्त पर जलवा बार थे,जब यह ह़ज़रात ज़मीन पर बैठे ह़ज़रत भी तख़्त से उतर कर नीचे तशरीफ़ फ़रमा

हुये,और फ़रमाया आप हज़रात ज़मीन पर बैठेंगे तो मैं भी ज़मीन पर बैठूँगा,उन हज़रात ने इस्रार किया कि हज़रत तख़्त पर ही तशरीफ़ रखें मगर हज़रत ने इनकार किया और ज़मीन पर बैठ कर महवे गुफ़्तगु हुये,और काफ़ी देर तक गुफ़्त व शुनीद का सिलसिला चलता रहा।

मैं हज़रत ताजुश्शरीआ़ की इस अदाए फ़क़ीराना से हद दर्जा मुतास्सिर हुआ कि उ़लमा हक़ और सुलहा किराम की यही शान होती है,कि ग़ैरों को हक़ीर व कमतर नहीं समझते,सच फ़रमाया ताजदारे काइनात स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने कि जो अल्लाह के बन्दों की ताज़ीम व तौक़ीर करता है,मर्ज़ीए इलाही की ख़ातिर तवाज़ेअ़ करता है,अल्लाह तआ़ला उस को रिफ़अ़त व अ़ज़मत और क़बूलियत अ़ता फ़रमाता है,यही वजह है कि आज हिन्दुस्तान व बैरूने हिन्द ताजुश्शरीआ़ की शख़्सियत मक़बूल ख़ास़ व आ़म है।

क्यों न पहुँचे अहले सुन्नत मन्ज़िले मक़्सूद को
जब हैं मीरकारवाँ अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी

हुजूमे ग़ैर मुसलमान

हाफ़िज़ मुहम्मद शमसुलहक़ रज़वी डाइरेक्टर रज़ा होज़री लुधियाना(पंजाब)अपने एक मज़मून में लिखते हैं कि मैं हिन्दुस्तान के जिस ज़िला से तअ़ल्लुक़ रखता हूँ वह हिन्दुस्तान का मरदम ख़ेज़,इल्मी व तारीख़ी शहर सीतामढ़ी है,जहाँ एक से एक इल्म व फ़न के शहसवार पैदा हुये। इसी ज़िला का एक मअ़रूफ़ क़स्बा पोखरपुर शरीफ़ है। जहाँ अपने वक़्त के आ़रिफ़बिल्लाह सय्यदिना

अ़ब्दुर्रहमान सरकार मुहीयुद्दीन पोखरपुरवी हैं। आप आ़ला हज़रत के अहिब्बुलख़ुलफ़ा में से हैं। जिन्होंने इस पूरे अ़लाक़ा में इस्लाम व सुन्नियत की बेलौस ख़िदमात अंजाम दीं। इस पूरे इलाक़ा में आज जो दीन व सुन्नियत की बहारें है वह उन्हीं की मरहून मन्नत में से हैं,पुरे इलाक़े से बदअ़क़ीदगी के तूफ़ान को आप ने मज़बूत़ी के साथ रोक दिया। और इस्लाम व सुन्नियत की इशाअ़त के लिए आहनी सुतून बन कर डटे रहे। आप ने जहाँ मदारिस व मसाजिद के क़ियाम के ज़रीअ़ा दीन की ख़िदमत की,वहीं पूरे इलाक़े में अपने वअ़ज़ व हिदायत के ज़रीअ़ा ख़ल्के ख़ुदा की ख़ूब ख़ूब रहनुमाई की। आप का क़ाइम कर्दा दीनी व इल्मी इदारा मदर्सा नूरूलहुदा पोखरपुरा आज भी त़ालिबाने उ़लूमे नबविया की इल्मी प्यास बुझा रहा है। आप ने ह़दीस,तफ़सीर,इस्लामियत में कसीर तस़ानीफ़ यादगार छोड़ी हैं। इस़लाह अ़वाम के लिए आप ने एक दीनी व इल्मी मुजल्ला भी जारी किया था,आप के बाद बन्द हो गया। आप के एक इल्मी रिसाला पर आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादरी अ़लैहिर्रह़मा की ज़बरदस्त "तक़रीज़े जलील" भी है,जिस से आप के और आ़ला ह़ज़रत अ़लैहिर्रह़मा के दरमियान इल्मी व फ़िक्री रवाबित़ का बाख़ूबी अन्दाज़ लगाया जा सकता है। आ़ला ह़ज़रत से गहरे तअ़ल्लुक़ात ही का नतीजा है कि ख़ान्वादा रज़विया के मशाइख़े किराम में हुज़ूर हुज्जतुलइस्लाम,मुफ़्ती आ़ज़म हिन्द,रेहाने मिल्लत वग़ैराहुम सीतामढ़ी का तब्लीग़ी दौरा फ़रमाते रहे,और

सीतामढ़ी के बाशिन्दगाने सुन्नी मुसलमानों की इल्मी व अमली और दीनी रहनुमाई फ़रमाते रहे।

मुरशिदे गिरामी हुज़ूर ताजुश्शरीआ दामत फ़ुयूज़हु भी मुतअ़द्दिद बार ज़िला सीतामढ़ी में अपने तब्लीग़ी दौरे और प्रोग्राम के तिहत तशरीफ़ लाये। पूरे इलाक़ा में आप के हर हर प्रोग्राम में आप की आमद पर मुसर्रत और ख़ल्के ख़ुदा का हुजूम देदनी होता है। उस ज़िला के सैंकड़ों मवाज़आत तो ऐसे हैं जहाँ की पूरी पूरी आबादी आप की ज़्यारत के लिए बेताबाना इश्तियाक़ और दस्त बोसी व क़दम बोसी के लिए उमन्ड आती और शर्फ़ बैअ़त से मुशर्रफ़ होती। यहाँ तक कि अकसर एलाक़ा के ग़ैर मुस्लिम भी आप के नूरानी चेहरे की ज़्यारत के बाद बहुत अच्छे अच्छे अल्फ़ाज़ से आप को याद करते नज़र आये।

ख़ल्के ख़ुदा का जिस क़द्र बे साख़्ता हुजूम मैंने इलाक़ों में हज़रत ताजुश्शरीआ के लिए मुशाहिदा किया, वह किसी और के तअ़ल्लुक़ से आज तक देखने को न मिला। इस क़दर मक़बूलियत फ़िलख़ल्क़ यक़ीनन आप की बारगाहे इलाही में मक़बूलियत पे शाहिद अ़दल है।

1995 ई का वह वाक़िआ मुझे आज तक याद है जब मैं मुरादाबाद से एक सफ़र के सिलसिले में हाफ़िज़ मुहम्मद मुस्लिम अशरफ़ी के साथ देहली के लिए आया। हुस्ने इत्तेफ़ाक़ देहली इस्टेशन पे हुज़ूर ताजुश्शरीआ की ज़्यारत हुई,हम दोनों बे साख़्ता हुज़ूर की क़दम बोसी व दस्त बोसी के लिए बारगाह में हाज़िर हुये,और सलाम व

दस्त बोसी व क़दम बोसी से न्याज़मन्दी हासिल की। इत्तेफ़ाक़ से उस वक़्त में चेन वाली घड़ी पहने हुआ था। आप ने फ़रमाया : आप यह घड़ी पहने हुये हैं। इसे पहन कर नमाज़ भी पढ़ते होंगे। फिर आप ने बड़ी शफ़क़त से पूरे मसअला को तफ़सील से बयान फ़रमाया,और चेनवाली घड़ी न पहनने का हुक्म दिया। फिर क्या था मैंने उसी वक़्त उस घड़ी को हाथ से निकाल दिया। जब से आज तक मैंने चेनवाली घड़ी नहीं पहनी। इस सफ़र में मैंने पहली बार डेढ़ घन्टे हज़रत के रूबरुरहा,और ख़िदमत की सआदत भी मयस्सर आई। इस डेढ़ घन्टे में आप के पन्द्र व नसाइह से मैंने ऐसे फुयूज़ व बरकात हासिल किए जिसे मेरी कोताह क़लम हीताए तहरीर में लाने से आजिज़ है। पहली बार किसी निजी मज्लिस में आप की शीरनी गुफ़्तार और रस घोलती हुई अन्दाज़ नसीहत के लुत्फ़ से मैं महज़ूज़ हुआ था। जी तो यह चाह रहा था कि यह घड़ी दराज़ होती रहे और मैं आप के रुख़े रौशन की ज़्यारत से अपने दिल के बन्द दरीचे खोलता रहू लेकिन फिर आप को किसी सफर के लिए फ़ौरन रवाना होना था। आप ने मुझ फ़क़ीर को ढेर सारी दुआओं से नवाज़ा और रुख़सत हो गये। आज उन दुआओं का समरा''रज़ाहोज़री लुधियाना और ''अज़हरी मार्केट'' और ''अज़हरी कॉम्पलेकस सरसन्डसीतामढ़ी''की शक्ल में आम लोगों के मुशाहिदे में है।

मामूली ख़राश

मशहूर नक़ीब जनाब हलीम हाज़िक़ रज़वी होड़ा ने

तहरीर किया कि फील ख़ाना में सरकारे मुजाहिदे मिल्लत अ़लैहिर्रहमा के एक मुरीद जनाब अनवार अहमद हबीबी हैं। उन्होंने एक बार मुझ से कहा कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ से बाज़ शरपसन्द लोगों की ग़लत़ बयानियों के सबब मेरे दिल में भी एक बेचैनी थी,और मेरी अक़ीदत की शमअ़ टमटमाती जा रही थी।

एक शब मेरा नसीबा बेदार हुआ,और ख़्वाब में देखा कि सरकार मुजाहिदे मिल्लत और हुज़ूर अज़हरी मियाँ मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे हैं। मैं अभी सेहने मस्जिद में सोच ही रहा था कि सरकार मुजाहिदे मिल्लत ने मुझे डांट कर फ़रमाया"इन की ख़िदमत करो,यह मेरे मख़दूम ज़ादे हैं"उस के बाद हुज़ूर अज़हरी मियाँ की त़रफ़ मेरा दिल खिंचता चला गया।

फ़ीलख़ाना होड़ा के सिकन्डलैन मैदान में देवबन्दियों का एक जलसा कोई चार पाँच साल क़ब्ल हुआ था। इस जलसे में एक देवबन्दी मुक़र्रिर ने आ़ला हज़रत और मुजाहिदे मिल्लत की शान में गुस्ताख़ाना तक़रीर की। सुबह होते ही मैंने उस की तक़रीर की कैसेट को बड़ी मुश्किल से ह़ासिल किया,और इलाक़ाई उ़लमा से राब्त़ा किया कि यह पहला इत्तिफ़ाक़ है अगर उस की जमकर तरदीद न की गई तो आने वाला वक़्त हमें मुआ़फ़ नहीं करेगा। बहुत से अहबाब ने कहा कि यह फ़लाँ मौलवी की त़क़रीर का रद्दे अ़मल है,और चन्द बिल्कुल ख़ामोश। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से तीसरे या चौथे दिन हुज़ूर ताजुशरीआ़ की आमद एक मदरसे के जशने दस्तार

बन्दी में हुई। हज़रत ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ के वक़्त तशरीफ़ लाये। देवबन्दी मुक़र्रिर के क़ाबिल ऐअ़तिराज़ जुमलों और बुहतान तराज़ियों को नोट कर के उनकी ख़िदमत में पहुँचा कि तमाम सूरते हाल से मुत्तलअ़ करूँ। मगर मैं अपनी कोशिशों में ना काम हो गया,कि हज़रत से मुलाक़ात न हो पाई। ख़त्म बुख़ारी शरीफ़ में हुज़ूर अज़हरी मियाँ फ़ारेग़ीन को आख़िरी हदीस शरीफ़ का दर्स दे रहे थे,और मैं बैठा सोंच रहा था कि या अल्लाह! उन ऐअ़तिराज़ात व बुहतान का जवाब कौन देगा। मगर मेरी हैरत की इन्तिहा न रही कि हुज़ूर अज़हरी मियाँ देवबन्दी ख़्यालत व नज़रियात का रद्दे बलीग़ उसी आख़री हदीस शरीफ़ की तफ़सीर व ताबीर में फ़रमाने लगे,और मेरे सारे सवालात खुद बखुद रौशन जवाबात पाते चले गये।

इसे बुज़ुर्गों का तसर्रुफ़ नहीं तो क्या कहेंगे।

एक मौक़ा पर मुहम्मद पुर बुजुर्ग ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर में सूफ़ी जमील रज़वी क़ादरी ने एक बहुत आली शान जलसा किया जिस में ख़ुसूसियत के साथ हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ मदऊ किए गये थे। यह शायद इस ऐलाक़ा का नुमाइन्दा जलसा था कि आस पास के सैकड़ों उ़लमा महज़ हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ से शर्फ़े बैअ़त के लिए हाज़िर हुये थे। मैं अपनी नक़ाबत के ज़रीआ़ सलाम व दुआ़ तक बख़ूबी जलसा को पहुँचा चुका था। मगर बैअ़त व इरादत के मुश्ताक़ दीवाने और परवाने क़ाबू से बाहर हो रहे थे,आख़िर एक बड़ा सैलाब स्टेज तक पहुँच गया। हुज़ूर

ताजुश्शरीआ कुर्सी पर तशरीफ़ फ़रमा थे,और मैं माइक पर बार–बार इल्तिजा पर इल्तिजा करता कि स्टेज कमज़ोर है। लिल्लाह करम कीजिए।

इसी इसना में चरमराने की आवाज़ उभरी,और पूरा स्टेज जो काफ़ी ऊँचाई पर बनाया गया था ज़मीन बोस हो गया। सारे लोग चीख़ पड़े। हज़रत की कुर्सी मैं और सूफ़ी साहब ने पूरी कुव्वत से पकड़ली थी। मगर एक बांस की कैंची मेरे पेट में यूँ आ लगी कि अगर जुंबिश हो तो पेट में घुस जाये,मगर अराकीन व सामेईन ने कमाल होशमन्दी से उस बांस की कैंची को आरे से काट दिया,अगर मैं शेरवानी न पहना होता तो बेदरेग वह बांस की फिराटी पेट फाड़ देती।

सुब्ह के वक़्त नाश्ते पर हज़रत ने मुझ से पूछा "आप को चोट तो न आई होगी"मैंने अ़र्ज़ किया"हुज़ूर आप की मौजूदगी में बड़ा सानिहा मामूली ख़राश में बदल गया"हज़रत ने बे पनाह दुआयें कीं,मेरा विजदान कहता है कि यह बरकत हुज़ूर ताजुश्शरीआ की थी वरना कुछ भी हो सकता था। यह दो करामत बयान कर दी हैं।

औलादे ग़ौसे आज़म की दुआ का असर

पीरे तरीकत हज़रत सय्यदिना शाह फ़ख़रुद्दीन अशरफ़ अलजीलानी सज्जादा नशीन आस्ताना मख़दूम समनानी कछौछा शरीफ़ बयान करते हैं कि हज़रत के आलिमी असफ़ार में से सिर्फ़ एक वाक़िआ पेश कर रहा हूँ जो शहज़ादाए ग़ौसुलवरा की बारगाह में हाज़िरी से तअ़ल्लुक़ रखता है जिसे डाक्टर अ़ब्दुलनईम अ़ज़ीज़ी

साहब ने क़लम बन्द किया है। जिन्होंने ताजुश्शरीआ़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा साहिब क़िब्ला अज़हरी मियाँ मद्दज़िल्लाहुल आ़ली के ख़ादिमे ख़ास़ और रफ़ीक़े सफ़र की हैसियत से गंग व जमन के दो आबे से लेकर कश्मीर की गुलपोश वादियों कन्याकुमारी से लेकर महाराश्ट्र और राजपूताना व बंगाल,यहाँ तक कि हिमाला के दामन में आबाद शहरों और सूबाजात आसाम,मयालया और अरूणाचल तक फैले हुये हैं वसीअ़ व अ़रीज़ हिन्दुस्तान के जाने कितने शहरों,क़स्बों और गाँव के सफ़र किए हैं। अ़लावा इन के नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और इराक़ वग़ैरा के ग़ैर मुल्की असफ़ार का भी शर्फ़ हासि़ल किया है। फ़रमाते हैं कि 1982 ई में पाकिस्तान के दूसरे सफ़र के दौरान एक रोज़ शहज़ादए ग़ौसुलवरा सय्यदिना पीरे तरीक़त सय्यद शाह ताहिर अ़लाउद्दीन गीलानी की ज़्यारत के लिए हज़रत ताजुश्शरीआ़, राक़िम और हज़रत के20,25 मुरीदीन व मोअ़तक़दीन उन के दौलते कदा पर हाज़िर हुये। पीर साहब की वसीअ़ व अ़रीज़ कोठी के गेट पर तैनात दो दरबानों ने गेट खोला। कारों का क़ाफ़ला लान में जा कर रुका लॉन से लेकर बरआमदा तक कई मुलाज़िमीन बा अदब खड़े हुये थे। सिक्रेट्री साहब ने हम लोगों की आमद की इत्तेलाअ़ भेजवाई। चन्द मिनट में पीर साहिब क़िबला बाहर तशरीफ़ लाये, اهــلا و سـهـلا مـرحـبـا फ़रमा कर इस्तिक़बाल किया। हम सभी लोगों ने हज़रत पीर साहब की दस्तबोसी व क़दमबोसी की। पीर साहब ने एक सजे

सजाये बड़े कमरे में सब को बिठाया। एक बहुत बड़ी मेज़ पर फलों और मेवाजात से भरी हुई प्लेटें सजी हुई थीं। नाशता का यह शाही इन्तेज़ाम और सामान देख कर शाहनशाहे औलिया और ग़ौसे आज़म के करम व सख़ावत के पढ़े हुये वाकिआत की यादें ताज़ा हो गई। नाश्ता के बाद गुफ़्तगु शुरू हुई। हज़रत पीर साहब किब्ला ने अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहिब किब्ला की तारीफ़ में फिल बदीह अरबी में एक कतआ पढ़ा,जिस का मफ़हूम यह था।"अख़्तर रज़ा सितारा की तरह ताबंदी बिखरेगा"हज़रत ताजुश्शरीआ ने हुज़ूर पीर साहब किब्ला से दुआ के लिए कहा। उस पर पीर साहब किब्ला ने फ़रमाया"अख़्तर रज़ा हम तुम्हारे लिए क्या दुआ करेंगे। तुम्हारे दादा अल्लामा अहमद रज़ा ख़ाँ साहब को मेरे दादा ग़ौसे आज़म ने इतना दिया कि तुम उसी ख़ज़ाने से निकालते रहो,बांटते रहो,कभी ख़त्म न होगा,और तुम्हारे मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ साहब मुफ़्ती आज़म हिन्द को भी बहुत दिया है,मेरे ग़ौसे आज़म ने"उस के बाद दुआ के लिए हाथ उठाये,दुआ के बाद फिर मज़ीद कलमाते ख़ैर से नवाज़ा।

यह पीर ताहिर अलाउद्दीन साहिब किबला अलैहिर्रहमा ख़ास ग़ौसे पाक की औलाद से थे,बड़े ज़ाहिद आलिम फ़ाज़िल शरअ और दीनदार,पूरी दाढ़ी सुर्ख़ व सफ़ेद,नूरानी चेहरा(सुब्हानल्लाह क्या ही निराली शान थी हज़रत की)जब हम लोग हज़रत पीर साहब किब्ला के यहाँ से दस्त बोसी व कदम बोसी कर के वापस होने

लगे तो उन्होंने फिर सब के लिए दुआ की,और ताजुश्शरीआ को छोड़ने के लिए बरआमदे से गुज़र कर लॉन तक आये। जब हम लोग गेट तक आ गये तो हज़रत पीर साहब के मुलाज़िमीन ने एक दूसरे से खुसर फुसुर शुरू कर दी कि यह कौन से बुज़ुर्ग थे,जिन्हें छोड़ने के लिए पीर साहब लॉन तक आये,और फिर उनकी आमद पर उन का ऐसा शान्दार इस्तिक़बाल भी किया अरे भाई यहाँ तो सदरे ममलुकत और बड़े बड़े वज़रा आते रहते हैं उन्हें पीर साहब से मिलने के लिए काफ़ी वक़्त तक इन्तिज़ार करना पड़ता है भटों(ज़ुलफ़िक़ार अ़ली भट्टो) पीर साहब से मिलने के लिए आते थे,तो आधा आधा घन्टा बाहर खड़े रहते थे तब जा कर बिरयानी मिलती थी,और वापसी पर पीर साहब अपनी कुरसी पर बैठे ही बैठे उन्हें रुख़सत कर दिया करते थे। मगर इन्हें छोड़ने के लिए लॉन तक आये। यह सुन कर साथ में गये लोगों में से कई पाकिस्तानियों ने मुलाज़िमीन को बताया कि जानते हो यह बुज़ुर्ग कौन हैं। यह बरेली शरीफ़ के आ़ला हज़रत के परपोते हैं। मुलाज़िमीन बोले तभी तो पीर साहिब ने इन की ऐसी इज़्ज़त की। فالحمد لله على ذالك۔

गाड़ी की करामत

मौलाना ग़ुलाम मुईनुद्दीन इमाम जामेअ़ मस्जिद गवारी पुर ज़िला चौबीस परगना(बंगाल)का बयान है कि हज़रत का फ़ैज़ान हिन्दुस्तान के दीगर सौबों में भी देखा गया। कर्णाटक की सरज़मीन पर हज़रत सरासे हासिन

की तरफ बज़रीआ कार तशरीफ ले जा रहे थे,कि अचानक कार उलट गई,सब लोग इधर उधर हो गये मगर जब हज़रत को देखा तो अलहम्दुलिल्लाह हज़रत ताजुश्शरीआ सजदे की हालत में पड़े थे। और कुछ भी न हुआ। हुज़ूर मुफ़्ती आज़म के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत मुफ़्ती अ़ब्दुलहलीम साहब क़िब्ला जिन्होंने तक़रीबन चालीस साल से ज़ाइद इंगल की सर ज़मीन पर इमामत का फ़रीज़ा अंजाम दिया हज़रत उन से बहुत मोहब्बत फ़रमाते थे.एक जलसा के सिलसिले में हज़रत तशरीफ़ ले गये तक़रीर के मूड में नहीं थे,मगर एक नअ़त ख़्वाह ने हुज़ूर सय्यदी आ़ला हज़रत की मशहूर नअ़ते पाक لم يات نظيرك فى نظر में हिन्द अल्फ़ाज़ में मोरा तन मन धन तोरा सोंप देया को दया पढ़ दिया। हज़रत स्टेज पर तशरीफ़ ले गये,फिर एक नअ़त ख़्वाह ने आ़ला हज़रत की नअ़त पाक "वल्लाह जो मिल जाये मेरे गुल का पसीना" को पढ़ दिया,हज़रत ने माइक ले कर अल्लाह अल्लाह पूरे दो घन्टे सिर्फ़ इन्हीं दो अशआर की तशरीह पर इल्मी तक़रीर फ़रमाई।

हाजी नगर वालों का कहना है कि हज़रत,ज़ाहिद साहिब कलकत्ता के यहाँ से हाजी नगर तशरीफ़ ला रहे थे कि अचानक बारिकपुर मोड़ पर कार ख़राब हो गई,इस वक़्त रात के बाराह बज रहे थे। ड्राइवर ने कहा गाड़ी एक इंच आगे नहीं जायेगी। सभी हैरान व परेशान थे। दूसरी गाड़ी भी तलाशी गई वह भी नहीं मिली,तब हज़रत ने हुक्म दिया"ड्राइवर गाड़ी चलाओ"वह पस व

पेश में था मगर चूंकि हज़रत का हुक्म था,अलबत्ता यह भी कहा कि गाड़ी कहीं रोकना नहीं आहिस्ता कर लेना,फिर वह गाड़ी ले कर चला,हाजी नगरवाले सड़क पर इस्तिक़बाल के लिए खड़े थे,उन्हें इशारे से बता दिया गया गाड़ी रुकेगी नहीं आहिस्ता हो कर अपनी मन्ज़िल की तरफ़ रवाँ हो गई,ड्राइवर ने मदरसा के पास गाड़ी रुकी,हज़रत तशरीफ़ ले गये। ड्राइवर मुआफ़ी का तलब गार हुआ,और उस ने मजमा में माइक पर बर जस्ता कहा "बारिकपुर से यह गाड़ी यहाँ किस तरह आई,यह मुझे मालूम नहीं। दो दिन तक एक अंच आगे बढ़े बग़ैर रुकी रही।"

रंगे रुख़े आफ़ताब का क्या कहना

मशहूर आलिमे दीन और हुज़ूर मुफ़्तीए आज़म के ख़लीफ़ा अल्लामा शबीहुलक़ादरी बानी दारुलउलूम ग़ौसुलवरा सीवान(बिहार)बयान करते हैं कि ग़ालिबन 1951 ई या 1952 ई की बात है कि मुहरे चरख़े विलायत हुज़ूर ताजुश्शरीआ अपने आबाई मसकन महल्ला ख़्वाजा कुतुब के महूर से गुज़रते हुये दारुलउलूम मनज़रे इस्लाम में उर्दू की पहली किताब दस्ते मुबारक में लिए हुये जलवा बार होते थे। उन के साथ उन के एक बड़े भाई "तनवीर रज़ा" होते। दोनों की उमर में एक दो साल का फ़र्क़ था,ग़र्ज़ दोनों आफ़ताब व माहताब की तरह होते उस की मिस्दाक़ हज़रत सअदी का यह शेअर है।

दो पाकीज़ा पैकर जो हूर व परी
चू ख़ुरशीद व माह अज़सा दिगर परी

और निहायत ही सन्जीदगी से किताब ले कर दफ़्तर में मुन्शी जी के पास बैठ जाते,बाद में सुना गया कि उन के बरादरम बुज़ुर्ग तनवीर रज़ा साहिब मफ़कूदुल ख़ैबर हो गये। इस ज़माने में यह फ़क़ीर भी मीज़ानुस्सर्फ़ वग़ैरा दारूलउ़लूम मनज़रे इस्लाम ही की इब्तिदाई दर्स गाह में पढ़ता था। हज़रत के चेहरे पर नज़र पड़जाती तो ऐसा महसूस होता कि चेहरा आ़लम ताब से नूरे विलायत छन छन कर सारी फ़ज़ा को नूरबार कर रहा है।

बालाए सर्श ज़होशमन्दी

मी ताफ़्त सितारए बुलन्दी

गोया ताजुश्शरीआ़ की ज़ात स़द्र रश्क क़मर और रंगे रुख़े आफ़ताब है जहाँ से शऊ़र आगई का चश्मा फूटता है,जिस की तरजुमानी ह़ाफ़िज़ शीराज़ी का यह शेअ़र कर रहा है।

ऐ नोबहार मारख़े फ़रख़न्दा तू

मशरूह़ काँ नामा व ख़ूबी जमाल तू

मेरी ज़िन्दगी का ना क़ाबिल फ़रामोश दिन

मौलाना मुह़म्मद मुबश्शिरुलइस्लाम नूरी दारूलउ़लूम फ़ैज़ुलउ़लूम जमशेदपुर(झाड़ खन्ड)कहते हैं कि :

इधर से कौन गुज़रा था कि अब तक

दायारे कहकशा में रौशनी है

बिला शुबह हज़रत की ज़ात अंधेरी रात के मुसाफ़िरों के लिए मशअ़ले हिदायत और मीनारा–ए–नूर की हैसियत रखती है। उन का फ़ज़्ल व कमाल दिलकश और निखरी हुई शख़्सियत ही कुछ ऐसी है कि देखने

वाला फ़ौरन मुतास्सिर हो जाता है। और आप का गरवीदा हो जाता है,मेरी ज़िन्दगी का वह तांबनाक और नाक़ाबिले फ़रामोश दिन था जब मुरशिदे बरहक़ का पहला दीदार हुआ था। और दीदा व दिल को जिला बख़्श दिया था। दिल की तारीकी हमेशा के लिए छुट गई। रासिखुलऐअ़तिक़ाद की दौलते लाज़वाल मिल गई। बदअ़क़ीदगी का साया मिट गया। जुलाई 1985 ई मेरी ज़िन्दगी का टर्निंग पवाइंट साबित हुआ,जब मदीनतुलउ़लमा घोसी में उर्से अमजदी के पुरबहार मौक़ा पर मेरी निगाहों ने ह़ज़रत का नूरानी चेहरा देखा था। यह उस वक़्त की बात है जब मैं तिफ़्ले मकतब था। अ़क़्ल व शऊर ज़्यादा नहीं था। मैं पहले देवबन्दी मकतब फ़िक्र के मदरसे में ज़ेरे तालीम था,और यूपी के देवबन्दी मदरसा में जाने के लिए पर तौल रहा था। मगर वालिद मरहूम स़ह़ीहुलअ़क़ीदा थे। उन की क़त़ई ख़्वाहिश नहीं थी कि मैं देवबन्दी मदरसा जाऊँ। इसलिए उन्होंने मुझे एक रिश्तेदार ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद शहीदुर्रह़मान रज़वी मोहतमिम मदरसा क़ादरियानूरिया दुमका और मौलाना क़ारी मुह़म्मद मन्ज़ूर अह़मद मिस्बाह़ी सदरुलमुदर्रिसीन मख़दूमिया अनवारुलउ़लूम असहना ज़िला देवघर जो उस वक़्त फ़ैज़ुलउ़लूम मुह़म्मदआबाद गोहना में ज़ेरे तालीम थे,और देवबन्दियों के अ़क़ाइद बात़िला की निशान्दही की थी,समझा बुझा कर ले गये दिल में सोचता था कि किसी त़रह़ एक साल गुज़ारुँगा उसके बाद देवबन्दी मदरसा में दाख़ला ले लूँगा।

इसी दौरान उर्से अमजदी की तकरीब सईद आ गई थी,और उन दोनों की मुईत में घोसी चला गया। मैंने देखा कि लोगों का बड़ा हुजूम है। तकबीर व रिसालत और हज़रत ताजुश्शरीआ़ के फलक शगाफ़ नअ़रों से पूरी फ़ज़ा मामूर हो गई। और एक बुज़ुर्ग,नूरानी हस्ती,इशाक़ और दीवानों के दरमियान ख़रामाँ रवाँ दवाँ थी। उनकी एक झलक पाने के लिए क्या उ़लमा,क्या त़लबा और क्या आ़म्मतुन्नास सभी एक दूसरे पर टूट रहे थे। सच है :

जो दिल को फ़तह कर ले वही फ़ातेह ज़माना

अ़स्र का वक़्त हो चुका था। महल्ला करीमुद्दीन पूर की एक मस्जिद में ह़ज़रत ने अ़स्र की नमाज़ पढ़ाई और बाद नमाज़ वहीं जलवा फ़रमा रहे। मैंने बिल्कुल क़रीब से दीदार का शर्फ़ ह़ासिल किया। आप ने उसी जगह लोगों को मुरीद करना शुरू कर दिया। मेरे करम फ़रमा मुझे सामने बैठाया,और कहा तुम भी मुरीद हो जाओ। उस वक़्त मैं न मुरीदी से वाकिफ़ था और न ही पीरी से। और न ही आ़ला हज़रत व मुफ़्ती आज़म हिन्द अ़लैहुमा रह़मतुर्रह़मान के नाम से मेरे कान आशना हुये थे। बराहे रास्त ह़ज़रत के नूरानी हाथ पर हाथ रखा,और बैअ़त की सआ़दत से बहरा वर हो गया। हलक़ा इरादत में आना था कि ज़िन्दगी की काया ही पलट गई। ज़हन व दिमाग़ के दरीचे खुल गये और सारे शुकूक व शुबहात का अज़ खुद इज़ाला होता चला गया। ह़ज़रत के दीदार और एक निगाहे करम ने जो ज़र्रानवाज़ी करम फ़रमाई की,उसे ताह़ीन ह़यात फ़रामोश नहीं किया जा सकता है।

उन का दिया हुआ शजरा जिस में दस्त मुबारक से हज़रत ने अपना दस्तख़त फ़रमाया था,बाद नमाज़े फजिर पढ़ना रोज़मर्रा का मामूल बन गया था। फिर क्या था बद मज़हबियत के ख़न्दक़ में जाने से महफ़ूज़ व मामून हो गया। मुझे ख़्याल आता है कि उसी मौक़ा पर गरीडीहा के मौलाना मुहम्मद अनवर अहमद रज़वी के सर पर उस भीड़ में मस्जिद की चहार दीवारी की ईंट गिर गई,जिस की वजह से ख़ून ज़ारी हो गया और चोट लग गई थी। हज़रत क़रीब आये और आप ने सर पर दस्ते शफ़क़त रखा कि ख़ून बन्द हो गया,और सारी तकालीफ़ यक लख़्त दूर हो गई। इस ऐअ़तिबार से भी वह दिन क़ाबिले याद गार है कि जब मैंने रईसुत्तहरीर क़ाइदे अहले सुन्नत हज़रत अ़ल्लामा अरशदुल क़ादरी,शारेह बुख़ारी मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी, मुहद्दिसे कबीर अ़ल्लामा ज़ियाउल मुस्तफ़ा क़ादरी, बहरूलउ़लूम मुफ़्ती अ़ब्दुलमन्नान आज़मी जैसे अकाबिर उ़लमा और असातीने मिल्लत को ज़िन्दगी में पहली बार देखा था।

ख़ानक़ाहे बरकातिया की करामत

शर्फ़े मिल्लत हज़रत सय्यद शाह अशरफ़ मियाँ बरकाती ख़ानक़ाह बरकातिया मारहरा शरीफ़ अपने एक त़वील मज़मून में तहरीर फ़रमाते हैं कि 1996 ई में सरदियों के दिन थे मैं ख़ानक़ाह में मौजूद था। इत्तेलाअ़ मिली कि हज़रत अज़हरी मियाँ साहब आये हैं। मैंने बाहर जा कर मुलाक़ात की। हज़रत अज़हरी मियाँ जब हुज़ूर वालिद माजिद(अहसनुल उलमा) कुद्दिसा सिर्रुहु की

हयात में तशरीफ़ लाते तो पुर तकल्लुफ़ नाश्ता का इन्तिज़ाम होता। मैंने भी इन्तिज़ाम करना चाहा लेकिन हज़रत अज़हरी मियाँ ने कहा कि मैं तकल्लुफ़ न करूँ। एक लिफ़ाफ़ा में नज़राना दे कर फ़रमाया कि यह वालिदा माजिदा की ख़िदमत में पेश फ़रमा दें,और फ़ौरन रुख़सत हो गये। बमुश्किल चाये पी। जब वह चले गये तब मुझे ख़्याल आया कि उस दिन मेरी वालिदा माजिदा की इद्दत पूरी होने का दिन था,क़दीम ख़ानदानों में रिवाज है कि इद्दत के ख़ात्मा पर क़रीबी अज़ा ग़मगुसारी के लिए आते हैं,तभी मुझे इस बात का अन्दाज़ा हुआ कि आज हज़रत अज़हरी मियाँ नाश्ता के बग़ैर क्यों चले गये। दरअसल वह चाहते थे उस दिन घर की ख़्वातीन उन की वजह से कोई तकलीफ़ न करें।

हुज़ूर अहसनुलउ़लमा कुद्दिसा सिर्रुहु के विसाल पर भी हज़रत अज़हरी मियाँ साहिब को बहुत रजं हुआ था। हुज़ूर अहसनुलउ़लमा को वह एक घने दरख़्त की मानिन्द समझते थे,जो कड़ी धूप में अपना साया शफ़क़त दराज़ कर देता है।

था जो अपने दर्द की हकीमी दवा मिलता नहीं
चारा साज़े दर्दे दिल दर्दे आश्ना मिलता नहीं

सितमबर 2003 ई में एक दिन हज़रत अज़हरी मियाँ साहिब का फोन आया,फ़रमाया कि हुज़ूर अहसनुल उ़लमा अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़वान की मनक़बत में चन्द अशआ़र हुये हैं,आप नोट फ़रमा कर उस साल के"अहले सुन्नत की आवाज़"के शुमारा में शाइअ़ करा दें। मैंने फ़ोन

पर वह अशआर नोट किए और''अहले सुन्नत की आवाज़''के 1434 हिजरी 2003 ई के शुमारा में शाइअ़ कर दिए।

हुज़ूर अहसनुल उ़लमा अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़वान के गुलाम और फ़क़ीर बरकाती की हैसियत से मेरी फहम मुझे यह शऊर देती है कि मैं दुआ़ गो हूँ कि ख़ानवादए रज़विया में हज़रत अज़हरी मियाँ ख़ुसूसन और दीगर अख़लाफ़ उ़मूमन अहले सुन्नत व जमाअ़त की इल्मी क़ियादत के उस मनसब को मज़बूती से थाम लें,जिस का इल्म हमारे आ़ला हज़रत और हमारे मुफ़्ती आज़म ने न सिर्फ़ यह कि उठाया था बल्कि हमेशा बुलन्द रखा था। एक बार हुज़ूर अहसनुल उ़लमा अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़वान से किसी ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर आप की ख़ानकाह के बुज़ुर्गों की कौन कौन से करामत हैं। जवाब अ़ता किया गया कि हमारे ख़ानदान में अपने बुज़ुर्गों की करामतों का ज़्यादा बयान नहीं किया जाता है,क्यों कि हमारे बुज़ुर्ग हमें सबक़ दे गये हैं कि दीन पर इस्तेक़ामत किसी करामत से ज़्यादा बुलन्द होती है। वह साहिब फिर जब बज़िद रहे तो हुज़ूर अहसनुलउ़लमा अ़लैहिर्रहमा वर्रिज़वान ने फ़रमाया सुनये!माज़ी क़रीब में मेरी ख़ानक़ाह की दो करामतें हैं। एक अहमद रज़ा और दूसरी मुस्तफ़ा रज़ा''वह साहिब यह सुन कर शिशद रह गये। जब मुफ़्ती शरीफुलहक़ अमजदी रज़वी बरकाती कुद्दिसा सिर्रुहु यह वाक़िआ़ सुनाते थे,तो आब दीदा हो जाते थे।

ज़िन्दगी एक बेहद पेचीदा निज़ाम का नाम है।

दीनी अफ़कार,दुनिया की रफ़्तार,रिवायत की पास दारी,इल्म से हासिल शुदा तसल्लुब और रूहानियत से कशीद कर्दा रवा दारी,अपनी जड़ों से वाबस्तगी और अपने शजर की ऐसतादगी,यक दरगीर व मुहकम गीर पर अमल दर आमद और खुद अपने दरीचों को वारख करता ताज़ा हवा की आमद असलाफ़ की दानिश से फ़ैज उठाना,और अख़लाफ़ की तरबियत करना,अहबाब की हमा–जिहत तरक़्क़ी के लिए उन में जोश भरना और ख़ुद हर मौक़ा पर बाहोश रहना, जो बज़ाहिर दूर रहते हैं उन में ख़ुसूस़ व लिल्लाहियत तलाश करना,और जो हमा वक़्त क़रीब रहते हैं उन के अफ़आ़ल की निगरानी करना,जमइयत को मरबूत़ रखने के लिए तसल्लुब को काम में लाना,और फितनों से दूर रहने और फितनों को दूर करने के लिए ज़रूरी लचक पैदा करना। यह उन गोनागो उमीदों में से चन्द हैं जिन्हें मैं ह़ज़रत की ज़ात से वाबस्ता रखता हूँ,और दुआ़ गो हूँ कि काश ऐसा हो कि हमारी ख़ानकाह बरकात की अगली पीढ़ियां अपने ज़माने के पौदे वाले से कह सकें। सुनो माज़ी क़रीब में हमारी ख़ानक़ाह की तीन करामतें हैं। "अह़मद रज़ा मुस्त़फ़ा रज़ा और अख़्तर रज़ा।"

बारिश के लिए दुआ़

मुफ़्ती आ़बिद हुसैन रज़वी सदरुलमुदर्रिसीन मदरसा फैजुलउलूम जमशेदपुर बयान करते हैं कि आज से तक़रीबन 18साल क़ब्ल जब हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ मदरसा फ़ैज़ुलउ़लूम जमशेदपुर तशरीफ़ लाये थे,उस

मौक़ा पर मुझ को हज़रत की ख़िदमत का मौक़ा मिला था। गुस्ल वग़ैरा कराने की सआ़दत मिली थी,क़ब्ल अज़ी अलजामिअ़तुलअशरफ़िया मुबारकपुरं में भी ज़माना त़ालिब इल्मी में उन के हाथ पाँव दबाने का शर्फ़ मिला था। उस ख़िदमत के सि़ला में हज़रत ने अपने दस्ते अक़दस से अपना शजरा भी अ़ता फ़रमाया था।

इस मौक़ा से एक स़ाहिब हज़रत के पास आये और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर मेरी अहलिया को इस्क़ात़े हम्ल हो जाता है। हम्ल ठहरता है लेकिन चन्द दिन या चन्द माह के बाद गिर जाता है। हज़रत ने फ़रमाया कि सात सुइयाँ ले कर आओ,मैं सात सुइयाँ ले कर हाज़िर हुआ। हज़रत ने तअ़वीज़ बना कर दिया। वह तावीज़ इतना असर अन्दाज़ हुआ कि इस्क़ात़ का मर्ज़ ज़ाइल हो गया, और वह स़ाहिबे औलाद हो गये।

22 जून 2008 ई मुहिब्बे मोहतरम जनाब क़ारी अ़ब्दुलजलील स़ाहब शोअ़बए किरअत मदरसा फ़ैज़ुलउलूम जमशेदपुर ने फ़क़ीर से फ़रमाया कि पाँच साल क़ब्ल हज़रत अज़हरी मियाँ क़िब्ला दारूलउ़लूम हनफ़िया ज़ियाउलक़ुरआन लखनऊ की दस्तारबन्दी की एक कान्फ़्रेन्स में ख़ित़ाब के लिए मदऊ़ थे। उन दिनों वहाँ बारिश नहीं हो रही थी। सख़्त क़हत़ साली के अय्याम गुज़र रहे थे,लोगों ने हज़रत से अ़र्ज़ की कि हुज़ूर बारिश के लिए दुआ़ फ़रमा दें। हज़रत ने नमाज़ इस्तिस्क़ा पढ़ी और दुआ़यें कीं,अभी दुआ़ कर ही रहे थे कि वहाँ मूसला धार बारिश होने लगी और सारे लोग भीग गये।

हाफ़िज़ इम्तियाज़ नोअ़मानी साहब ने अपनी खुश बख़्ती पर नाज़ करते हुये अपने जज़बात का अनोखे अन्दाज़ में इज़हार करते हुये फ़रमाया कि मैं कलकत्ता में कसीर अज़ दिहाम की वजह से चादर पकड़ कर मुरीद हुआ था,कि काश हुज़ूर की जी भर कर ज़्यारत कर लेता और मुसाफ़ा का मौक़ा मिल जाता। काफ़ी दिनों तक यह मुराद न आई,3फ़रवरी 2003 ई को जब हज़रत बारीनगर टेलकी तशरीफ़ लाये तो जलसा की सुबह मदरसा फ़ैज़ुलउ़लूम में भी तशरीफ़ लाये,मैं मदरसा के सामने खड़ा था कि इतने में हज़रत की गाड़ी आ गई। उस के बाद क्या था मैंने ख़ूब हज़रत से मुसाफ़ा किया,हाथों को बोसा दिया और हाथ पकड़ कर हज़रत अ़ल्लामा अ़लैहिर्रहमा की साबिक़ रिहाइशगाह में ले गया। मैं समझता हूँ कि हज़रत अपने इस मुरीद की दिली कैफ़ियात से आगाह हो गये,इसलिए इस मर्तबा अपना मौक़ा इनायत फ़रमाया कि उस वक़्त मेरी ख़ुशी की इन्तिहा न रही,उस वक़्त हज़रत का चेहरा इतना वजिह और खुबसूरत था कि बयान से बाहर है।

दाढ़ी के लिए हिदायत

मौलाना मंसूर फ़रीदी मुदीर सेहमाही फ़ैज़ुर्रज़ा बिलासपुर(छत्तीसगढ़)बयान करते हैं कि मुझे आज भी वह दिन याद है जब मैं जामिआ़ फ़ैज़ुलउ़लूम जमशेदपुर में ज़ेरे तालीम था,आप की तशरीफ़ आवरी "गुम्बदे ख़ज़रा कान्फ्रेंस" गाँधी मैदान में शिरकत की ग़र्ज़ से हुई थी,उस वक़्त मुसलमानाने जमशेदपुर की खुशी ईद की खुशी से कम नहीं थी,भीड़ के मन्ज़र से ऐसा मालूम होता कि

रिजालुलग़ैब की आमद आमद है। पूरा शहर उस जानिब दीवाना वार दौड़ रहा था,जिस जानिब सरकार ताजुश्शरआ की सवारी चल रही थी,जब गाड़ी दारूलउ़लूम ग़ौसिया निज़ामिया ज़ाकिर नगर की त़रफ़ चलने लगी तो मैं भी चल पड़ा। ह़ज़रत क़ारी फ़ज़ले ह़क़ अ़ज़ीज़ी ने नमाज़े मग़रिब पढ़ाने की और दारुलउ़लूम के मुआ़इना की दअ़वत दी थी,बाद नमाज़े मग़रिब लोगों ने ह़ल्क़ा में शामिल होने की ख़्वाहिश का इज़्हार किया तो आप उसी जगह तशरीफ़ फ़रमा हो गये,ह़ल्क़ा इरादत में शामिल होने वालों में एक स़ाह़िब जिन का नाम सुल्त़ान अह़मद था,जब क़रीब पहुँचे तो हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ ने अपने एक हाथ से उनका हाथ पकड़ लिया,अब क्या था तमाम ह़ाज़िरीन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ी उड़ी सी नज़र आने लगीं कि अब क्या होगा पता नहीं उन से क्या ग़लत़ी हो गई। अभी हम तमाम लोग इसी कशमकश में थे कि ह़ज़रत का दूसरा हाथ सुल्त़ान स़ाह़िब के चेहरे और दाढ़ी की त़रफ़ उठा,और निहायत मुशफ़्फ़क़ाना अन्दाज़ में मोह़ब्बत भरे लहजे से आप ने फ़रमाया "रुख़सार दाढी का बाल इतना नहीं उतारा जाता,यह भी दाढ़ी के हुक्म में है,इस को आइन्दा तराश ख़राश न करना"मैं ह़ैरत में था कि आप जाह व जलाल और रोअ़ब का यह आ़लम कि ज़माना आप के क़रीब आने से घबराता है,मगर शरीअ़त का हुक्म नाफ़िज़ करने के लिए आप का जमाल और आप की शफ़क़त का वह मन्ज़र में अपनी ज़िन्दगी के किसी भी मोड़ पर नहीं भूल सकता।

1995 ई दारुलउ़लूम फ़ैज़ुर्रज़ा बिलासपुर का रस्म संगे बुनियाद के लिए हुज़ूरताजुश्शरीआ तशरीफ़ लाये,आप की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल हासिदीन में से किसी ने रास्ते में गिट्टी डाल दी ताकि उस राह से गाड़ी न निकल पाये और इस तरह हम काम्याब हो जायें कि दारुलउलूम की बुनियाद के लिए ताजुश्शरीआ तशरीफ़ न ला सकें,मगर जब अ़ज़्म जवाँ होता है और बुज़ुर्गो का फ़ैज़ान जारी होता है तो ख़ालिद व त़ारिक़ सा जांबाज़ भी अल्लाह भेज देता है,और उस से अपने दीन का काम ले लेता है,उस मन्ज़र को देख कर ह़ज़रत मौलाना जहाँगीर रज़ा नूरी परेशान हो जाते हैं मगर चूंकि आप अ़ज़्भ व इरादा के पुख़्ता चटान ठहरे इतनी जल्दी हिम्मत कैसे हारते,आप ने मुकम्मल तदबीर इख़्तियार की हैं मगर चुंकि आप जहाँगीरी को अपनाते हुये एक मज़दूर से बात की,इस गिट्टी को कितनी देर में हटा सकते हो,चुंकि गिट्टी की तादाद बे शुमार थी यह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था कि एक दो घन्टे में रास्ता साफ़ किया जा सकता है,मगर उस मज़दूर ने सिर्फ़ इतना कहा कि आप के ह़ज़रत के आने से पहले हम रास्ता स़ाफ़ कर देंगे,आप इधर की फ़िक्र छोड़दें और अपना काम करें,और बन्दे ने यह तै़ किए बग़ैर कि आप कितना देंगे काम शुरू कर दिया,जब ह़ज़रत की गाड़ी पहुँची उस से क़ब्ल पूरा रास्ता स़ाफ़ हो चुका था,और आप दारूलउ़लूम फ़ैज़ुर्रज़ा रस्मे संगे बुनियाद के लिए तशरीफ़ ले आये,आप की गाड़ी के पीछे पीछे ह़ासिदीन जो बद

नियती लिए हुये आगे बढ़ कर हज़रत को रोकना ही चाह रहे थे कि वह आप के चेहराए पुर अनवर से अयाँ रोअ़ब व जलाल की ताब न ला सके और फ़ौरन उलटे पाँव लौट गये,और इस त़रह़ से दारूलउलूमफ़ैज़ुर्रज़ा की बुनियाद हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ के मुक़द्दस हाथों से रखी गई।

इसी सफ़र का वाक़िआ़ है कि मुहिब्बे मुकर्रम हाफ़िज़ व क़ारी मुहम्मद स़ादिक़ हुसैन फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की ख़िदमत के लिए मैं मामूर था और आप अलहाज ग़ुलाम सरवर के घर आराम फ़रमा थे,मैं हज़रत के सर में तेल मालिश कर रहा था और अपने मुक़द्दर पर नाज़ कर रहा था कि एक ज़र्रा नाचीज़ को फ़लक की क़दमबोसी का शर्फ़ हासिल हो रहा था,अचानक मेरी निगाह हुज़ूरे वाला की हथेलियों पे पड़ी,मैं एक लमहा के लिए थरथरा गया आख़िर यह क्या हो रहा है मेरी निगाहें क्या देख रही हैं मुझे यक़ीन नहीं हो रहा है,आप तो गहरी नीन्द में हैं फिर आप की उंगलियाँ हरकत में कैसे हैं?मैंने मौलाना अ़ब्दुलवहीद फ़तहपुरी जो उस वक़्त मौजूद थे और दीगर अफ़राद को भी इस जानिब मुतवज्जोह किया तमाम के तमाम हैरत व इस्तिअ़जाब में डूब गये थे,मुआ़मला यह है कि आप की उंगलियाँ इस त़रह हरकत कर रही थीं गोया आप तस्बीह़ पढ़ रहे हों,और यह मन्ज़र मैं उस वक़्त तक देखता रहा जब तक कि आप बेदार नहीं हो गये,इन तमाम तर कैफ़ियात को देखने के बाद दिल पुकार उठता है कि :

सोये है यह बज़ाहिर दिल इन का जागता है

2003 ई में उर्से हुज़ूर मुफ़्तिए आज़म के मौक़े पर दिहानौर रोड मुम्बई में एक सराए की बुनियाद रखी जाती थी,जिस में हुज़ूर ताजुश्शरीआ़,और मौलाना शुऐ़ब रज़ा साह़ब मदऊ थे,बहैसियत सामेअ़ मैं भी मौजूद था।अचानक दिल में ख़याल आया कि काश हुज़ूरताजुश्शरीआ़ के साथ एक दस्तरख़्वान पर बैठने का मौक़ा मिल जाता तो क़िस्मत संवर जाती,इसी तस़व्वुर में ग़र्क़ क़ियामगाह के दरवाज़ा पर खड़ा था मेरी त़रह़ सैकड़ों मुश्ताक़ाने दीद क़ल्ब व जिगर फ़र्शे राह किये हुये थे,अचानक दरवाज़ा खुला और एक स़ाह़ब ने आवाज़ लगाई मंस़ूर फ़रीदी कौन हैं, अन्दर आइये। मुझे उस वक़्त अपनी समाअ़त पर यक़ीन नहीं हो रहा था कि वह तुम्हीं हो जिसे आवाज़ दी जा रही है,मगर दिल कह रहा था कि हाँ हाँ तुम्हीं हो,और फिर क्या था फ़र्ते मुसर्रत से मेरी आँखें भीग चुकी थीं,आंसू पोछते हुये में अन्दर गया,सलाम व मुस़ाफ़ा से सरफ़राज़ हो कर घन्टों ह़ज़रत की ख़िदमत में लगा रहा,आज भी तस़व्वुर करता हूँ तो उस कैफ़ियत से क़ल्ब व रूह़ को ठन्डक का ऐह़सास होता है,मेरी तमन्ना क्या पूरी हुई मेरे ऐअ़्तिक़ाद की दुनिया ने एक ठोस और मुस्तहकम क़िलऐ को गोया तस्ख़ीर कर लिया था जहाँ से आज भी तसव्वुरे शैख़ रहनुमाई करता नज़र आता है,यह जितनी बातें लिखी गई हैं ह़क़ाइक़ पर मब्नी हैं। इस के इलावा भी बे शुमार आप की करामतें और तसर्रुफ़ात का ज़िक्र मिलता है।

नग़मा व तरन्नुम का समाँ

मशहूर क़लम कार व अदीब मौलाना मुफ़्ती शमशाद हुसैन रज़वी प्रिंसिपल मदरसा शमसुलउलूम बदायूँ शरीफ़ बयान फ़रमाते हैं कि एक दिन हम तमाम त़ालिबे इल्म हज़रत क़ाज़ी शम्सुद्दीन जौनपुरी के दर्स में मौजूद थे,और हज़रत पढ़ा रहे थे कि एक बुज़ुर्ग सिफ़त इंसान तशरीफ़ लाये। क़ाज़ी स़ाहिब ने खडे हो कर उनका इस्तिक़बाल किया। आने वाले को अपनी मसनद पर बठाया,और ख़ुद मुअद्दब हो कर बैठ गये।और त़ालिब इल्मों के ज़हिन व दिमाग़ में क्या तासिर उभरा?उसको मैं नहीं बता सकता, अलबत्ता मैंने यह महसूस क्या–क़ाज़ी स़ाहब जैसी शख़्सियत। अल्लाह अल्लाह उन की इल्मी शान व शौकत का यह आ़लम था कि बड़े बड़े उन के सामने तिफ़्ले मकतब मालूम होते थे। उन का इल्मी वक़ार मुस्लिम था। लेकिन आज क्या हो गया है कि इल्मी जाह व जलाल और फ़न्नी त़मत़राक़ नयाज़मंदी के सांचे में ढल गया है। आप ने असातिज़ा में से किसी से मैंने दरयाफ़्त किया।

हज़रत यह कौन हैं?उन्होंने जवाब दिया

यह हज़रत अज़हरी मियाँ हैं। उस वक़्त तक नाम तो सुना था मगर देखा नहीं था,फिर हज़रत अज़हरी मियाँ स़ाहब ने अ़रबी ज़बान में एक मनक़बत पढ़ी। ग़ालिबन यह मनक़बत हज़रत मुजाहिदे मिल्लत की शान में लिखी गई थी। पढ़ने का लब व लहजा इस क़द्र दिलकश था। अल्फ़ाज़ के ज़ेर व बम में ऐसी मौज़ूनियत

थी कि नग़मा व तरन्नुम का समाँ छा गया। हमारे तमाम असातिज़ा किराम इस मनक़बत से मुतास्सिर हुये और बहुत ज़्यादा मुतास्सिर हुये,यहीं से हज़रत ताजुश्शरीआ की इल्मी लियाक़त का और बा कमाल सलाहियत का नक़्श मेरे दिल में उभरता है।

1979 ई की बात है,मैं जमाअ़ते राबेआ़ का तालिबेइल्म था,मदरसा हमीदिया रज़विया बनारस के सालाना इम्तिहान के लिए हज़रत ताजुश्शरीआ़ साहब तशरीफ़ लाये हुये थे। "मिश्कात शरीफ़" का आप ने इम्तिहान लिया। मैं इम्तिहान देने वालों में शरीक था। लोगों का मेरे बारे में ख़्याल था कि नाचीज़ तमाम तालिबइल्मों में बा सलाहियत है। ख़ैर यह उन का हुस्ने ज़न था।

हज़रत ताजुश्शरीआ़ ने फ़रमाया कहीं से कोई हदीस पढ़ो,तमाम साथियों का इशारा पाते ही मैंने दो हदीसें पढ़ीं,जिस का मुतालअ़ मैं ख़ास तौर पर कर के आया था। हदीस तो मैंने सही ऐअ़राब के साथ पढ़ दी और तर्जमा भी कर दिया। उस के बाद हज़रत ने जो सवालात इस हदीस के मुतअ़ल्लिक़ किए यह यक़ीन जानिये मैंने यह महसूस किया कि मैं अभी तक इल्म व फन से बे बहरा हूँ। इन दो वाक़िआ़त ने मेरे ज़हन व दिमाग़ को बहुत मुतास्सिर किया।

आ़शिक़े रसूल

डाक्टर हाफ़िज़ शफ़ीक़ अजमल रज़वी (बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी) कहते हैं कि हज़रत ताजुश्शरीआ़

अख़्तर रज़ा ख़ाँ अख़्तर बरेलवी एक सच्चे आशिके रसूल हैं। महबूब से दूरी उन्हें क़तअ़न बरदाश्त नहीं हैं। उन के कलाम में फ़ुरक़ते मदीना की सूरत में बेक़रारी की कैफ़ियत और मदीना की हाज़िरी की तमन्ना ख़ूब नज़र आती है। चन्द अशआर मुलाहिज़ा फ़रमायें।

दाग़े फ़ुरक़ते तैबा क़ल्बे गुज़महल जाता
काश गुम्बदे ख़ज़रा देखने को मिल जाता
फ़ुरक़ते मदीना ने वह दिए मुझे सदमे
कोह पर अगर पड़ते कोह भी तो हिल जाता
दूर ऐ दिल रहें मदीने से
मौत बेहतर है ऐसे जीने से
फ़ुरक़ते तैबा की वहशत दिल से जाये ख़ैर से
मैं मदीना को चलूँ वह दिन फिर आये ख़ैर से
शमीमे ज़ुल्फ़े नबी ला सबा मदीने से
मरीज़ हिज्र को ला कर सुंघा मदीने से
इलाही!वह मदीना कैसी बस्ती है दिखा देना
जहाँ रहमत बरसती है जहाँ रहमत ही रहमत है

एक आशिके सादिक़ की यह आरज़ू और तमन्ना होती है कि उस की रूह जब निकले तो महबूब की जलवा गरी रहे, महबूब के क़दमों में गिर कर अपनी जान निछावर करे। मौत बरहक़ है,हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है। मगर यह मौत अगर महबूब के क़दमों में हो तो फिर उस का क्या कहना। हज़रत अख़्तर रज़ा बरेलवी ऐसी मौत को ज़िन्दगी से ताबीर करते हैं और इसे जाविदानी बताते हैं। हज़रत अख़्तर के यहाँ मौत के इसी पाकीज़ा तसव्वुर की कारफ़रमाई जा बजा देखने

को मिलती है।

तिरे दामने करम में जिसे नीन्द आ गई है
जो फ़ना न होगी ऐसी उसे ज़िन्दगी मिली है

इल्मी व फ़िक्ही इदराक

नौजवान क़लमकार व अदीम मौलाना तौफ़ीक़ अहसन बरकाती मुदीर माहनामा "सुन्नी दअ़्वते इस्लामी" मुम्बई अपने तास्सुरात बयान करते हैं कि न सिर्फ़ एक बुलन्द पाया शाइर बल्कि फ़िक़्ह व इफ़्ता के अ़ज़ीम शह सवार,उम्मते मुस्लिमा के सच्चे क़ाइद,और पीरे तरीक़त की हैसियत से मुतआ़रफ़ हैं,आप की हमा जिहत ज़ात वाक़ेई एक जहान समेटे हुये है,दर्स व तदरीस में भी आप की इल्मी व फ़िक़्ही लियाक़तों का अनोखा अन्दाज़ शागिर्दों की ज़बानी मालूम हुआ,तस्नीफ़ व तालीफ़,तर्जमा व हाशिया में भी आप के ज़र्रे निगार क़लम ने ख़ूब जो लानियाँ दिखायें,हज़ारहा फ़तावा तहरीर फ़रमाये,तक़रीबन तीस से ज़ाइद किताबें लिखीं,बेशुमार तहक़ीक़ी मक़ालात व मज़ामीन तहरीर फ़रमाये,किताबों पर मुक़द्दमात लिखे,तक़रीज़े लिखीं, हवाशी तहरीर किए। अभी हाल ही में मज्लिसे बरकात अलजामिअ़तुलअशरफ़िया मुबारक पुर आज़मगढ़(यूपी)से आप का लिखा हुआ "हाशिया बुख़ारी" शाइअ़ हुआ जो वाक़ेई अ़रबी ज़बान व अदब में आप की महारत,इल्मियत व फ़क़ाहत,और फ़न्ने हदीस में कमाल का पता देता है। आ़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा कुद्दिसा सिर्रुहु की किताब"अलमोअ़तमदुलमुस्तनद"का सलीस उर्दूज़बान में तर्जमा किया जो दर हक़ीक़त तर्जमा

निगारी का एक अनोखा बाब है,और रूहे बलागत की कमा हक्कोहु तर्जमानी का लाज़वाल गंजिनए मअरूफ है। यह तर्जमा आप के क़लम से वजूद में आया,जिस की अदबियत का अन्दाज़ा मुताला के बाद ही लगाया जा सकता है। यह दर हक़ीक़त आप की ख़िदमात और इल्मी गहराई व गीराई का आईनादार है,इसी नोअ का एक और शाह कार ''الزلال الانقىٰ من بحر سبقة الاتقى''(अज़ इमाम अहमद रज़ा क़ादरी)का तर्जमा है। बिला शुबह यह सब फ़ज़्ल है अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का,करम है रसूले आज़म स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का,और फ़ैज़ान है आ़ला हज़रत मुजद्दिदे आज़म और मुफ़्तिए आज़म अ़लैहिमर्रहमा का,जो आ़लमे इस्लाम के रू ब रू आफ़ताब की शक्ल में जगमगा रहा है। दिलों को ज़ूफ़िशाँ,अज़हान को दरख़्शाँ और अफ़कार व ख़्यालात को अनवार इल्म व मअ़रफ़त से गुलबद अमाँ कर रहा है, और सारी ख़ल्क़त उस के फ़ैज़ान से मालामाल हो रही है।

शरीअ़त की पासदारी

मशहूर ख़तीब मौलाना अ़ब्दुलमुस्तफ़ा हशमती सिद्दीक़ी मोहतमिम दारुलउ़लूम मख़दूमिया रुदोली शरीफ़ ज़िला बाराबंकी ने इम्साल ''उ़र्स नूरी'' मुन्अ़क़िद 13 मुहर्रमुलहराम 1437 ई को अज़हरी मेहमानख़ाना में तक़रीर में बयान फ़रमाया कि दुबई में एक अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ नामी शख़्स जो सोने का बहुत बड़ा ताजिर है,सैकड़ों लोग उस के यहाँ काम करते हैं,बिला शुबह वह ताजिर खरब पती है,वह ताजुश्शरीआ़ के मुरीदों में से है,दुबई के

क़ियाम के दौरान वह ताजुश्शरीआ़ से मिलने आया। किसी शख़्स़ ने ताजुश्शरीआ़ से यह बताया कि उन के यहाँ तरावीह़ की इमामत कोई देवबन्दी या वहाबी करता है। इतना सुनना था कि ताजुश्शरीआ़ के जलाल का आ़लम न पूछिये,उस शख़्स़ से मुस़ाफ़ा नहीं किया और बहुत सख़्त सुस्त कहा,आख़ीरकार उस ने मअ़ज़्ज़रत की और तौबा की और उ़ज्र पेश किया कि हमें इस बात का इल्म नहीं है कि हमारी कम्पनी में सैकड़ों लोग काम करते हैं,इसलिए हमें इस का इल्म नहीं हो सका कि कौन इमामत करता है,बहरह़ाल आइन्दा ऐसा नहीं होगा,जब सब के सामने उस ने तौबा इस्तिग़फ़ार किया फिर ताजुश्शरीआ़ ने उसे नर्मी से समझाया,और अ़क़ाइदे वहाबिया बताया,और मसाइले शरीआ़ उसके सामने पेश किया। वह शख़्स़ सरतापैर सरापा इज्ज़ व इंकेसारी का मुजस्समा बना रहा,मौक़ा पा कर उस ने अ़र्ज़ किया हुज़ूर ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ ले चलें, तो ह़ज़रत ने स़ाफ़ लफ़्ज़ों में फ़रमाया कि इस बार तो में नहीं जा सकता, अगर तुम तौबा पे क़ाइम रहे तो आइन्दा सफ़र में चलूँगा। ह़ालांकि उस से पहले कई बार उस के घर जा चुके थे। इस मुशाहिदा को पेश करने का मक़स़द यह है कि ताजुश्शरीआ़ ह़क़ीक़ी मअ़नों में आ़ला ह़ज़रत,हुज्जतुल इस्लाम और हुज़ूर मुफ़्तीए आ़ज़म हिन्द के इल्म व अ़मल और फ़ज़्ल व कमाल के सच्चे वारिस व अमीन हैं,और मौजूदा वक़्त में उन की शख़्स़ियत आफ़ताब व माहताब की त़रह़ है,जिस से सारा ज़माना फ़ैज़ पाता है। सिवा

उन के जो आँख रख कर भी हसद में बन्द किए रहते हैं।

दुबई में गोल्ड मार्केट के قريب الفتيم الراس में सुन्नियों की मरकज़ी मस्जिद है जिस में पाकिस्तान के क़ारी ग़ुलाम रसूल साहब इमाम थे। जुमा का दिन था बावजूद यह कि वहाँ माइक पे नमाज़ होती थी,बड़ी मस्जिद थी,भीड़ भाड़ नमाज़ियों की इतनी होती थी कि माइक के बग़ैर आवाज़ पहुँचना मुश्किल था,उन तमाम बातों के बावजूद न यह कि लोग क्या कहेंगे और क्या होगा,जुमा की इमामत फ़रमाई बग़ैर माइक के न कोई चूँ चिरा न कोई हंगामा। हांलाकि लोगों को सवाल करने का पूरा पूरा हक़ था,कि जब हर जुमा को माइक पे नमाज़ होती है तो आज बग़ैर माइक के क्यों?

यह सब कुछ फ़ज़्ले खुदावन्दी और इताअत शरअ का समरा है और नतीजा है,अवाम भी उन्हीं उलमा को मतऊन करती है जो शरीअत को मज़ाक़ बनाए हुये हैं,अगर कोई पाबन्दे शरीअत हो तो क़ौम ज़रूर उस से मोहब्बत भी करती है और ऐहतिराम भी।

रूदोली शरीफ़ में 24/जमादिलआख़िर 1400 हिजरी में "सुन्नी कांफ्रेन्स" के नाम से कुछ लोगों ने एक जलसा किया,और रईस उड़ीसा हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत मौलाना शाह हबीबुर्रहमान साहब उड़ीसवी(मुतवफ़्फ़ी 1401 हिजरी) और ताजुश्शरीआ,को मदऊ किया। जलसा वालों की बे तवज्जोह और अफ़रातफ़री देख कर मैंने इन दोनों बुज़ुर्गों से गुज़ारिश की कि हमारे यहाँ तशरीफ़ ले चलें।

उन हज़रात की करम फ़रमाई कि दअ़वत क़बूल फ़रमा ली,लेकिन उस वक़्त मदरसा की ऐमारत मुख़्तसर और इन्तिज़ामायात भी माकूल न थे। इसलिए मदसरे से मुत्तसिल मुहम्मद उ़मर कुरैशी साहिब के मकान में दोनों बुज़ुर्गों के क़ियाम का इन्तिज़ाम हुआ,साहिबे ख़ाना का कारोबार कलकत्ता में चलता था,वह वहीं हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत के दामन से वाबस्ता हो गये थे।,साहिबे ख़ाना के साहबज़ादा जावेद उ़मर साहब ने कहा कि मेरी वालिदा भी हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत से मुरीद होना चाहती है,आप हज़रत से गुज़ारिश कर दें कि क़बूल फ़रमा लें,मैंने हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत से अ़र्ज़ किया,हज़रत ने फ़रमाया"मियाँ सरकार आ़ला हज़रत के शहज़ादे हज़रत अज़हरी मियाँ की मौजूदगी में ऐसा केसे हो सकता है कि मैं मुरीद करूँ उन्हीं से मुरीद करवाइये"चूंकि साहिबे ख़ाना पहले से हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत के दामन करम से वाबस्ता हो चुके थे,इसलिए अहलिया भी बज़िद रहीं कि मुझे भी हज़रत की कनीज़ों में दाख़िल कराइये। बइसरार मैंने हज़रत को राज़ी तो कर लिया मगर घर के अन्दर जाने का जो रास्ता था वह हुज़ूर ताजुश्शरीआ़ की क़ियाम गाह से हो कर गुज़रता था। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं हज़रत अज़हरी मियाँ साहब के सामने से हो कर कैसे गुज़र सकता हूँ,आख़ीरकार उ़क़बा दरवाज़े से हज़रत अन्दर तशरीफ़ ले गये और फ़रमाते थे कि"कोई तेज़ आवाज़ में न बोले कि हज़रत अज़हरी मियाँ तशरीफ़ फ़रमा हैं, आहिस्ता बोलो,शहज़ादे क़ियाम फ़रमा हैं।"

अल्लाहु अकबर मैं देख कर दंग रह गया,कहाँ एक अस्सी साल की अज़ीमुलमुरत्तब शख़्सियत जिन का आलिमाना वक़ार और मुजाहिदाना शान का ज़माना खुतबा पढ़ता हो,एक तीस–पैंतीस साल के शहज़ादे का कितना ऐहतिराम और अदब फ़रमा रहे हैं।

कंधों पर चारपाई

मशहूर तज़करा निगार मौलाना ग़ुलाम जाबिर शम्सी मिस्बाही पूरनवी बयान करते हैं कि एक दफ़ा बरसात में ताजुश्शरीआ अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ अज़हरी बाइसी तशरीफ़ लाये मेरे गाँव के हज़रत मौलाना अब्दुलहैय नूरी,जो मेरे क़रीबी रिशतेदार हैं,हरीपुर जाने के लिए तैयार कर लिए,बाइसी से फ़क़ीर को टूटी चौक तक तो मारूती से लाये,अब वहाँ से हरीपुर जो चन्द क़दम पर है कैसे ले जायें,बीच में नाले पानी से पुर थे,किराया की जो कश्तियाँ चलती थीं,वह ग़ायब थीं,कश मकश के आलम में मौलाना नूरी ने चारपाई मंगाई,हज़रत ताजुश्शरीआ को बैठाया चार उलमा या उलमा नुमा लोगों ने कांधों पर उठाया,नाले का पानी उबूर कर के बैठक तक लाये,हुज़ूर जो अन्दर से जमाल,बाहर से जलाल में भरे हुये थे हिचकोले,हिलकोरे खाते हुये फ़रमाया:"या अल्लाह!लोग मरने के बाद चार के कंधों से उठाई हुई खाट पर सवार होते हैं,आप लोगों ने मुझे जीते जी ही सवार कर दिया" यह सुन कर लोग क़हक़हे में डूब गये। लोग आते गये,सुनते गये,क़हक़हे बुलन्द होते गये,यहाँ तक कि यह बात तमाम अतराफ़ में फैल गई,जो सुनता,हंस हंस कर लोट पोट हो जाता। आज भी लोग याद करते हैं,तो ज़ेरे लब मुस्कुरा देते हैं।

हाफ़िज़ मुहम्मद हुसैन रज़वी की बीनाई वापस

हज़रत मौलाना शाकिरूल क़ादरी फैज़ी(ख़लीफ़ा ताजुश्शरीआ)मुदर्रिस मदरसा ज़हिरूलइस्लाम व इमाम व ख़तीब हुसैनी मस्जिद उदयपुर(राजिस्थान)ने अपना एक ऐनी मुशाहिदा बयान किया कि अ़ताए रसूल चमने फ़ातिमा के महकते फूल हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीबनवाज़ के सात सौ छियासीवें(786)उ़र्स का मौक़ा था,1419 हिजरी की बात है कि हुज़ूर ताजुश्शरीआ की आमद पर अंजुमन चौक उदयपुर में प्रोग्राम मुन्अ़क़िद हुआ हज़रते के हमरा राक़िमुस्सुतूर भी था,उस मौक़े पर अ़क़ीदत मंदों का इतना हुजूम था कि हज़रत की कार अपने कंधो पर उठा ली थी दिन जुमा वक़्त सुबह़ का था नमाज़ के बाद हज़रत के मुरीदे ख़ास आ़ली जनाब मुहम्मद ख़लील रज़वी अज़हरी (उ़र्फ़ पप्पू भाई)मोहल्लाह मेवाफरोशान उदयपुर अपने बच्चे मुहम्मद हुसैन को लेकर हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुये उस वक़्त बच्चे की उ़मर सिर्फ़ तीन माह थी, आँख की बिनाई का एलाज डाक्टर अशोक शर्मा महाराना भोपाल हास्पिटल उदयपुर कर रहे थे, पुरी जांच परताल कर के डाक्टर ने ला इलाज बता दिया था, इस बच्चे को हज़रत की ख़िदमत में पेश करते हुये पुरी पेरशानी बयान कर दी, हज़रत ने बच्चे को गोद में लेकर काफ़ी देर तक कुछ पढ़कर के दम फ़रमाया, उसकी आँखों पे अपना हाथ रखा,फिर फ़रमाया कि बच्चा ठीक है और कुछ दिनो के बाद बच्चे की निगाहें ठीक हो जायेंगी बच्चा दुनिया देखेगा और डाक्टर झूठा है।

अलहम्दु लिल्लाह आज वह बच्चा बग़ैर एलाज के बहुत अच्छी त़रह देख रहा है, और कुरआन शरीफ़ मुकम्मल हिफ़्ज़ कर के हाफ़िज़ मुह़म्मद हुसैन रज़वी बन गया है। यह हज़रत की करामत पुरे उदयपुर में मशहूर हो गई।

कोई जाने तो क्या जाने कोई समझे तो क्या समझे

दो आ़लम की ख़बर रखता है दिवाना मुहम्मद का

तस्नीफ़ात की भारत में धूम

मर्दे दाना,मर्दे आ़क़िल मर्दे हक़ आगाह हैं
यह शहाबुद्दीन रज़वी आ़लिम ज़ी जाह हैं
चमके क्यों न अहले सुन्नत के दिलों की अंजुमन
यह स़हाफ़त के फ़लक ज़ूफ़िशा इक माह हैं

जि़न्दगी में इनकी आई हैं बहुत तब्दिलियाँ
आ गई इनकी समझ में दुनिया की मक्कारियाँ
इन के दम से देखिये शहरे बरेली में अली
फ़िक्र व फ़न के गुलिस्ताँ में हर त़रफ़ शादाबियाँ

इन की तस्नीफ़ात की भारत में हर सू धूम है
इनकी त़हरीरों की जलवा पाशयाँ हर सिम्त है
इल्म व फ़न के गुलिस्ता में चश्म दिल से देखिये
उनकी तख़लीक़ात की बरनाइयाँ हर सिम्त हैं

ख़िदमते दीने शहे कौनैन में मस़रूफ़ हैं
ज़िन्दगी है वक़्फ़ उनकी कारे मिल्लत के लिए
यह फिदाए मसलक अहमद रज़ा हैं दोस्तो
लिख रहे हैं हर घड़ी यह अहले सुन्नत के लिए

इन के कामों से हैं रहते शादमाँ अहले सुनन
अहले सुनन के लिए करते हैं हर लमहा यह काम
राहे हक़ पर दाइमा चलते रहें ताजि़दगी
अहले हक़ करते हैं दिल से यह दुआ़यें सुबह़ व शाम

बख़्ते रौशन पर करे यह नाज़ जितना कम तो है
इनकी क़िस्मत का सितारा इन दिनों है ओज पर
देखिये देते हैं क्या सुन कर मेरे अशआ़र को
पर मुसर्रत दिल है उनका है त़बीअ़त मौज पर

बेहतरी की हम दुआयें करते हैं सुबह व मसा
आप को रखे जहाँ में शादमाँ हर दम ख़ुदा
सुन्नियत की सर बलन्दी के लिए हैं मुस्तईद
आप को हासिल है फ़ैज़े हज़रत अख़्तर रज़ा.

हुस्ने अख़लाक़ व अमल से शाद हैं अहले वतन
आप के सर है यक़ीनन साया–ए–शाह–ए–ज़मन
दीने बर हक़ की हमेशा बे ग़र्ज़ ख़िदमात से
अहले दिल के दिल की महफ़िल में हैं यूँ जलवा फ़गन

यह अ़ली बावफ़ा भी आप के हमराह है
आ़लिमाने दीने हक़ भी तो बेशक साथ हैं
आप के दिल में है उलफ़त औलियाए पाक की
बिलयक़ीन अफ़ज़ाल यज़दाँ आप के भी हाथ हैं

नतीजए फ़िक्र : मशहूर नक़ीब व शाइर हज़रत अ़ल्लामा मौलाना
अ़ली अहमद सीवानी, अ़लीगढ़

इस्लाम व सुन्नियत की तरक्की और इशाअत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िल बरैलवी कुद्दस सिर्रहू और दिगर अकाबिरीने अहले सुन्नत व जमाअत के अफ्कार व नज़रियात और तालीमात की नशर व एशाअत के जामेअ् मन्सूबे पर अमल पैरा होकर "इस्लामिक रिसर्च सेंटर" दर्जनों किताबें शाया कर चुका है हमारे इशाअती मकसद के साथ ही दीनी मदारिस के असातिज़ा व तल्बा को मुसन्निफ, मज़मून निगार, तरजमाकार और कलम का शाहकार बनाने की भी कोशिश है बैनुलअक़वामी तक़ाज़ों के तहत मुख्तिलफ ज़बानों में अपनी अवाज़ हर एक फर्द तक पहुँचाने की मुख़्लिसाना जद्दोजेहद की जा रही है जदीद तरज़ेफिक्र व निगारिश में इल्मी व तहकीकी अन्दाज़ से सीरत व तारीख़ी, दअ्वत व तबलीग और रज़वियात के मौज़ूआत पर किताबें तसनीफ की जा रही हैं, और ख़ूबसूरत अन्दाज़ में शाया करके आलमे इस्लाम के सामने मन्ज़रेआम पर लाया जा रहा है हमारी ख्वाहिश है कि बरैली शरीफ में तस्नीफ व तालीफ, तरजमा व तख़्रीज और तन्ज़ीम व तहरीक का एक मज़बूत व मौसर इदारा साबित हो

ताजुश्शरिआ् जानशीने हुज़ूर मुफ़्ति-ए-आज़म हिन्द अल्लामा मुफ़्ति मोहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी दामत बरकातुहुमुल-आलिया की अकसर तसानीफ जदीद तबाअ्त व क्तिाबत के साथ आप के हाथों में हैं राक़मुलसतूर हज़रत की शख्सियत, जलालतुल इल्म व फज़ल, दीनी व फिक़्ही ख़िदमात और कारनामों पर मुसलसल लिख रहा है, आप इन क्तिाबों का मुताअला ज़रुर करें

मोहम्मद :- शहाबुद्दीन रज़वी बरैलवी

PUBLISHED BY:

ISLAMIC RESEARCH CENTER

58, KASGRAN, SODAGRAN, BAREILLY SHARIF (U.P.)

MOB. : 09837549282, 09897385339, 08923721109

WEBSITE: WWW.ALAHAZRATBOOKS.COM, E-MAIL : MRAZVI.RAZVI@GMAIL.COM

Rs. 120/-